<table>
<thead>
<tr>
<th>કમંકો</th>
<th>વિસય</th>
<th>ઉદ્ધાસગા</th>
<th>સુલ્તા</th>
<th>ગાહા</th>
<th>અનુકૂલનો પીડકનો</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>સત્ય પરિણામ</td>
<td>૧-૭</td>
<td>૨-૬૨</td>
<td>-</td>
<td>૪-૬૨</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>લોગવિજોણ</td>
<td>૧-૬</td>
<td>૪૩-૧૦૭</td>
<td>૧-૩</td>
<td>૬૩-૨૦૮</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>સીઓપણિજમ</td>
<td>૧-૪</td>
<td>૧૦૬-૧૨૬</td>
<td>૪-૧૨</td>
<td>૧૦૯-૧૩૮</td>
</tr>
<tr>
<td>4</td>
<td>સમસ્તતં</td>
<td>૧-૪</td>
<td>૧૨૬-૧૪૦</td>
<td>-</td>
<td>૧૩૬-૧૫૩</td>
</tr>
<tr>
<td>5</td>
<td>લોગસારો</td>
<td>૧-૬</td>
<td>૧૪૧-૨૭૨</td>
<td>૧૩-</td>
<td>૧૫૪-૮૮૫</td>
</tr>
<tr>
<td>6</td>
<td>ધુષ્યં</td>
<td>૧-૫</td>
<td>૧૬૩-૧૯૩</td>
<td>૪૪-૧૯</td>
<td>૧૮૪-૨૩૯</td>
</tr>
<tr>
<td>7</td>
<td>અભિજ્ઞાન વિવિધ</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>8</td>
<td>વિમોક્ષે</td>
<td>૧-૮</td>
<td>૧૬૫-૨૨૩</td>
<td>૧૬-૪૨</td>
<td>૨૧૦-૨૬૪</td>
</tr>
<tr>
<td>9</td>
<td>ઉદ્ધાસ સુખ્ય</td>
<td>૧-૪</td>
<td>-</td>
<td>૪૨-૧૧૭</td>
<td>૨૬૫-૩૩૪</td>
</tr>
</tbody>
</table>

| 1  | પિદેસણા   | ૧-૧૯ | ૨૨૪-૨૮૬ | -   | ૩૩૬-૩૯૬ | ૩૩          |
| 2  | સેજા       | ૧-૩   | ૨૮૮-૩૩૩ | -   | ૩૯૬-૪૪૪ | ૪૮          |
| 3  | િપ્રીયા      | ૧-૩   | ૩૩૪-૩૭૪ | -   | ૪૪૫-૪૪૫ | ૭૭          |
| 4  | ભાસનચાંત        | ૧-૩   | ૩૯૬-૪૩૩ | -   | ૪૮૬-૪૫૪ | ૬૪          |
| 5  | વદ્યચાણ       | ૧-૨   | ૩૬૧-૪૨૪ | -   | ૪૭૫-૪૯૫ | ૬૮          |
| 6  | પાણાગણ       | ૧-૨   | ૩૬૭-૩૬૭ | -   | ૪૮૭-૪૮૭ | ૭૩          |
| 7  | ઓગાહ પદ્મા      | ૧-૨   | ૩૭૪-૩૮૫ | -   | ૪૮૯-૪૯૫ | ૬૬          |
| 8  | ઠાણ સતિકકાંં    | -     | ૩૮૬-     | -   | ૪૫૬-     | ૮૦          |
| 9  | નિસિહ્યા સતિકકાંં | -     | ૩૭૬-     | -   | ૪૫૮-     | ૮૧          |
| 10 | ઉદચાર પાસવાન સતિકકાંં | -     | ૩૮૮-૩૯૦ | -   | ૪૯૯-૪૫૯ | ૮૯          |
| 11 | સદ સતિકકાંં    | -     | ૩૯૬-૩૯૩ | -   | ૫૦૨-૫૦૫ | ૮૪          |
| 12 | રૂપ સતિકકાંં    | -     | ૩૯૩-     | -   | ૫૦૭-     | ૮૪          |
| 13 | પિકિરીયા સતિકકાંં | -     | ૩૯૬-૩૯૬ | -   | ૫૦૬-૫૦૬ | ૮૬          |
| 14 | અગ્નિકિરીયા સતિકકાંં | -     | ૩૯૬-     | -   | ૫૦૮-     | ૮૮          |
| 15 | ભાવણા        | -     | ૩૯૭-૪૦૨ | ૧૨૨-૧૩૫ | ૫૫૯-૫૫૨ | ૬૨          |
| 16 | વિમુલતિ      | -     | -         | ૪૨-૧૧૭ | ૨૬૫-૩૩૪ | ૨૮          |
पदमं अज्ञायण-सत्यपरिणाम

१ पदमो उद्देसो ।

[१] सुयं मे आउसं! तेनं भगववा एवमक्खयं इहमेग्सिं नो सणा भवइ ।

[२] त जहा- पुरुषयामो वा दिसाओ अग्रो अहम्सं, दाहिणाओ वा दिसाओ अग्रो अहम्सं, पच्चिमयामो वा दिसाओ अग्रो अहम्सं, उत्तराओ वा दिसाओ अग्रो अहम्सं, उड़डाओ वा दिसाओ अग्रो अहम्सं, अन्नयत्रीयसं वा दिसाओ अनुदिसाओ वा आग्रो अहम्सं, एवमेग्सिं नो नातं भवति ।

[३] अथि मे आया उवाइए, नतिय मे आया उवाइए, के अहं आस? के वा इआ युष इह पेठ्या भविवसामि ।

[४] से ज्ञानं पुणं जाणेजन-सहस्मुखायां पर्वापरणेन अन्नेसं वा अंत्ये सोच्या, तं जहा- पुरुषयामो वा दिसाओ अग्रो अहम्सं, दाहिणाओ वा दिसाओ अग्रो अहम्सं, पच्चिमयामो वा दिसाओ अग्रो अहम्सं, उत्तराओ वा दिसाओ अग्रो अहम्सं उड़डाओ वा दिसाओ अग्रो अहम्सं अहं वा दिसाओ अग्रो अहम्सं, अन्नयत्रीयसं वा दिसाओ अनुदिसाओ वा आग्रो अहम्सं एवमेग्सिं जं नातं भवइ अथि मे आया उवाइए, जो इमाओ दिसाओ अनुदिसाओ वा अनुसंघरं सवाओ दिसाओ सवाओ अनुदिसाओ, सोइहं ।

[५] से आयाबादी लोगाबादी कम्मावादी किरियावादी ।

[६] अकरिस्सं चहं, कार्येसु चहं, करो यावि समगणणं भविस्वामि ।

[७] एयावतिक सवावतिक लोगसि कम्म-समारंभा परिजाणियव्या भवंति ।

[८] अपरणायक्षम कहु अंथे पुरिसे जो इमाओ दिसाओ वा अनुदिसाओ वा अनुसंघरं, सवाओ दिसाओ सवाओ अनुदिसाओ साहेति ।

[९] अनेकरुवाओ जोणीि संधे विचक्षे फासे परिसवेतेहं ।

[१०] तत्थ खलु भगवता परिणाम पवेदया ।

[११] इमस्स स्वेत जीवियस्स परिवंद-मानन-पूण्याए जाई-मरण-मोक्षाए दुख-पदिधायेहं ।

[१२] एयावतिक सवावतिक लोगसि कम्म-समारंभा परिजाणियव्या भवंति ।

[१३] जससेते लोगसि कम्म-समारंभा परिणाया भवंति से हु मुन्न परिणायक्षम को ।

तत्वेवमि

पदमं अज्ञायणे पदमो उद्देसो समतो

२ बीओ-उद्देसो ।
उनकने - उद्देशी - समातो

१५ तहां - उद्देशी १६

[१५] अधि लोग हरीजुणे दुसःबोधी अविजाणे असि लोग पववहित तत्त्वित तत्त्वि पुदौ

सुयक्षंधी-१, अज्ञायण-१, उद्देशी-२

पास आतुरा परितावैकुति।

[१६] संति पाणा पुदौ सिया लन्जजमाणा पुदौ पास अनगारा मोलितं एण ववयमाणा जमिणं

विरूद्वाहि सत्येऽहि पुदौ-कम्म-समारंभेण पुदौ-सत्यं समारंभमाणा अनेकेषु पाणे विहिति।

[१६] तत्त्वि खलु भगवा परिणा पवेहित्या, इमस्स चेव जीवियस्स परिंदन-मानन-पूण्याए

जाई-मरण-मोणाणे दुक्खपिकायगेडौं से सयमेव पुदौ-सत्यं समारंभभं अन्नेहि वा पुदौ-सत्यं समारंभावेइ

अन्नेवा वा पुदौ-सत्यं समारंभेते समणुणाणा।

[१६] तं से अहिःए तं से अवहोही से तं संजुणाणे आयणीयं समुहाए सोच्या खलु

भगवानु अनगाराणा वा अण्ति इकमेगेसिन नातं भवितं एस खलु गंगे एस खलु मीहे एस खलु मारे एस

खलु निर इयत्तं गडःित लोग जमिणं विरूद्वाहें हि सत्येऽहि पुदौ-कम्म-समारंभेण पुदौ-सत्यं

समारंभमाणे अन्नेवा अनेकेषु पाणे विहितं।

से बेठे-अपेक्षे अंधसमे अपेक्षे अंधसमे अपेक्षे पायमारे अपेक्षे पायमारे अपेक्षे गुप्तमारे अपेक्षे गुप्तमारे, अपेक्षे जंघमारे (२), अपेक्षे जानुमारे (२), अपेक्षे उसमारे (२), अपेक्षे

कठिमारे (२), अपेक्षे नासिमारे (२), अपेक्षे उदरमारे (२), अपेक्षे पासमारे (२), अपेक्षे पिहिमारे (२),

अपेक्षे उरमारे (२), अपेक्षे हियमारे (२), अपेक्षे धणमारे (२), अपेक्षे खतमारे (२), अपेक्षे

बाहुमारे (२), अपेक्षे हत्यमारे (२), अपेक्षे अगुलमारे (२), अपेक्षे नहमारे (२), अपेक्षे गीवमारे (२),

अपेक्षे हनुमारे (२), अपेक्षे होडमारे (२), अपेक्षे दंतमारे (२), अपेक्षे जिबमारे (२), अपेक्षे

तातमारे (२), अपेक्षे गालमारे (२), अपेक्षे गंदमारे (२), अपेक्षे कणमारे (२), अपेक्षे नासमारे (२),

अपेक्षे अधिकमारे (२), अपेक्षे ब्रह्ममारे (२), अपेक्षे निदालमारे (२), अपेक्षे सीसमारे (२), अपेक्षे

संपमारे अपेक्षे उद्वित, एत तत्थं समारंभमाणस्स इच्छये आरंभा अष्ट्रिणा भवित।

[१२] एतं सत्यं अष्ट्रिणमाणस्स इच्छये आरंभा परिणाणा भवितं, तं परिणाणा भेतवी नेव सत्यं पुदौ-सत्यं समारंभावेज, नेवंहें पुदौ-सत्यं समारंभावेज, नेवंहं पुदौ-सत्यं समारंभंते समणुणाणेज, नस्से पुदौ-कम्म-समारंभं परिणाणा भवितं, से हु मुणी परिणाणतकम्ने - ल्त बेहिं।

[१६] शे बेहम - से जहाँवि अनगारे उजुक्के निकायपिकवने अमायं कृत्वमाणे वियाहिते।

[१६] जाई सद्ग्राम निक्खिते तत्वेव अनुप्लित्या विज्ञित्यतं।

[१६] चण्या वीरा महावीहि।

[१६] लोगेच आणाे अक्षिमेच्या अकृतोभथं।

[१६] शे बेहम - नेव सत्यं लोगेव अवभाइक्खेज, नेव अत्ताणं अवभाइक्खेज, जे लोयं

अवभाइक्खें से अत्ताणं अवभाइक्खें, जे अत्ताणं अवभाइक्खें से लोयं अवभाइक्खें।

[१६] लन्जजमाणा पुदौ पास अनगारा मोलितं एण पवयमाणा जमिणं विरूद्वाहें हि सत्येऽहि उदय-कम्म-समारंभेण पुदौ-सत्यं समारंभमाणे अनेकेषु अनेकेषु पाणे विहितं। तत्त्वि खलु भवि ता
परिणा पवेरिता। इम्मस चेव जीवियस परिवंदन-मानन-पूणणाए जाई-मरण-मोयणाए दुर्खपडिवाण्येहूँ सेसयाकेन उदय-सत्य समारंभति अनन्नेहि वा उदय-सत्य समारंभावेति अन्ने वा उदय-सत्य समारंभेते समणुजाणित, तं सेआहिए तं से अबोहिए, से तं सबुज्ञामणेआयणीय समुद्राए सोच्चा भगवो अनगारणां वा अंतित इम्मेगेसि नयेन वर्षति।

एस खलु गंगे एस खलु मोहे एस खलु मारे एस खलु निरए इच्छायं गढिए लोए जमिणं विस्वस्वेहि सत्यंहि उदय-क्रम-समार्थेण उदयसत्य समारंभामाणेअन्ने अनेकायं पाणे विहिसति। से बेमी-संति पाणा उदयनिस्यिया जीवा अन्ने।

[२५] झं च खलु भी! अनगारणां उदय-जीवा वियाहिया। सत्यंमेघं अणुवीँ पास।
[२६] पुढो सत्यं पवेडयं।
[२७] अदुवा अदिन्दादण।
[२८] कप्पड़ णे कप्पड़ णे पाहुं अदुवा विभूसाए।
[२९] पुढो सत्येहि विउसति।
[३०] एत्यवितेसि नो निकरणाए।
[३१] एत्य सत्यं समारंभमाणसं इच्छेते आरंभा अपरिणाणाय भवति, एत्य सत्यं असमारंभमाणसं इच्छेते आरंभा परिणाणाय भवति, तं परिणाणाय मेहावी नेव संभं उदयसत्य समारंभेज्जा नेवनन्नेहि उदय-सत्य समारंभावेज्जा उदय-सत्य समारंभेतवि अन्ने न समणुजाणोज्जा, जससे उदयसत्य-समारंभा परिणाणाय भवति से हु मुही परिणाणात-कम्मे, तितवेमी।

पहेमे अज्ञावणे तड़ो उदेसी-समतली।

० चउत्थी - उदेसी ०

[३२] से बेमी नेव संभं लोंगे अब्बाईक्खेज्जा नेव अल्टाना अब्बाईक्खेज्जा, जे लोंगो अब्बाईक्खं से अल्टाना अब्बाईक्खं जे अल्टाना अब्बाईक्खं से लोंगो अब्बाईक्खं।
[३३] जे दीहलोशस्थलसं खेयणे से अस्तस्थलसं खेयणे, जे अस्तस्थलसं खेयणे से दीहलोश सत्यसं खेयणे।

[३४] वीरेहि एवं अभिमूख दिंडु संज्ञेहि सया जलज्ञेहि सया अप्पमततेहि।
[३५] जे पमतेतु गुणहड़तेः से हुं दंडेति पवुच्चति।
[३६] तं परिणाणाय मेहावी इयाणं नो जम्हं पुववमकासी पमाणं।

[३७] लज्जमाणा पुढो पास अनगारा मोतिः एवं पवदमणा जमिणं विस्वस्वेहि सत्येहि अगनिक-क्रमसमार्थेण अगनिसत्य समारंभामणे अन्ने अनेकायं पाणे विहिसति, तत्थं खलु भगवता परिणा पवेडया, इम्मस चेव जीवियस परिवंदन-मानन-पूणणाए जाई-मरण-मोयणाए दुर्खपडिवाण्येहूँ से सयाकेन अगनिसत्य समारंभहि अनन्नेहि वा अगनिसत्य समारंभावेति अन्ने वा अगनिसत्य समारंभमणे समणुजाणिः, तं से अहिए तं से अबोहिए, से तं संबुज्ञामणे आयणीय समुद्राए सोच्चा भगवो अनगारणार्वा वा अंतित इम्मेगेसि नयं भवति-एस खलु गंगे एस खलु मोहे एस खलु मारे एस खलु निरए इच्छायं गढिए लोए जमिणं विस्वस्वेहि सत्येहि, अगनिक्रम-समार्थेण अगनिसत्य समारंभमणे अन्ने अनेकायं पाणे विहिसति।
[38] से बेबी संति पाणा पुढ़विनिसिसिया तणानिनिसिया पततनिनिसिया कडुनिनिसिया गोमय-निनिसिया कब्छर-निनिसिया संति संपातिता पाणा आहहच संपयानित, अगनिं च खळु पुढ़ एँगे संघायमावज्ञानि; जे तत्थ संघायमावज्ञानि, ते तत्थ परियावज्ञानि, जे तत्थ परियावज्ञानि ते तत्थ उद्दायित।

[39] एत्थ सत्यं समारंभमाणसस इच्छेते आरंभा अपरिणामा भवित, एत्थ सत्यं असमारंभमाणसस इच्छेते आरंभा परिणामा भवित, तं परिणामय मेहवी नेत सयं अगलिसत्यं समारंभेज्ञा नेतन्नेंहिं अगलिसत्यं समारंभावेज्ञा अगलिसत्यं समारंभमाणे अन्ने न समणुजाणेवज्ञा जस्से ने अगलिकम्म-समारंभा परिणामा भवित, से हु मुनी परिणाम-कम्मे लिते बेबी।

पदमे अज्ञायणे चउत्यो उद्देरो समत्तो
• पंचमो - उद्देरो •

[40] तं णो कोर्ससामि समुदाए मला महिम, अभमय विदिता, तं जे णो करे एसोवरे, एत्थोवरे एस अनगामित पुनङ्कर।

[41] जे गुणे से आव्रे, जे आव्रे से गुणे।

[42] उड़े अंह तिरियं पाईं पासमाणे स्वायं पासति, सुपमाणे सड़ाई सुपगेति।

[43] उड़े अंह तिरियं पाईं मुच्छमाणे स्वेसु मुच्छति, सदेसु आवि।

एस लोए वियाहित एत्थ अगूले अणाणेक।

[44] पृणो-पृणो गुणपाईए, वंकसमायारे।

[45] पमतेदगारमासे।

[46] लज्जमाणा पुढौ पास, अनगारा मोलित एंए पवदमाणा जमिंं विस्तवेहि सत्येहि वण्णसङ्क-कम्मसमारंबेश्वं वण्णसङ्कसत्तं समारंभमाणे अन्ने अंगागवे पाणे विहिसति, तत्थ खळु भगवान परिणामा पवेदिता, इमसस चेर जीवियस्स परिवंदन-मानन-पूणणाए जाती-मानित-मोयणाए दुक्खपदिद्धायेहुँ ते सयमेव वण्णसङ्कसत्तं समारंबेग्भ अन्नेहि वा वण्णसङ्कसत्तं समारंबावेग्भ अन्ने वा वण्णसङ्कसत्तं समारंभमाणे समणुजाणेक, तं ते अहियाए, तं ते अहियाए।

से हे संबुज्जमाणे आयानीयं समुदाए सेच्चा भक्तो अनगारणा वा अंते इमेंगसिं नायं भवित- एस खळु गंथे, एस खळु मोहे एस खळु मारे एस खळु निरे, इच्छतं गड़िए लोए। जमिंं विस्तवेहि सत्येहि वण्णसङ्क-कम्म-समारंबेश्वं वण्णसङ्क-सत्तं समारंभमाणे अन्ने अंगागवे पाणे विहिसति।

[47] से बेबी इम्पि जाहादम्म एयंपि जाहादम्म इम्पि वुढ़सक्कम्म एयंपि वुढ़सक्कम्म इम्पि चिल्तमाणियं एयंपि चिल्तमाणियं इम्पि चिल्तमाणियं एयंपि चिल्तमाणियं इम्पि इम्पि आहारगं एयंपि इम्पि अविच्छेद्यं एयंपि अविच्छेद्यं इम्पि असियं एयंपि असियं [इम्पि अघुं एयंपि अघुं] इम्पि चयाधचिंद्र एयंपि चयाधचिंद्र इम्पि विवरणाभिनयं एयंपि विवरणाभिनयं।

[48] एत्थ सत्यं समारंभमाणसस इच्छेते आरंभा अपरिणामा भवित, एत्थ सत्यं असमारंभमाणसस इच्छेते आरंभा परिणामा भवित, तं परिणामय मेहवी नेत सयं वण्णसङ्क-सत्तं समारंबेज्ञा नेतन्नेंहिं वण्णसङ्क-सत्तं समारंबावेज्ञा नेतन्ने वण्णसङ्क-सत्तं समारंबंते समणुजाणेज्ञा,
सुयवकंघो-१, अज्ञात्मा-१, उदेसो-५

जससे ते वणस्क-सत्य समारंभा परिणामा भवति, से हू पुनी परिणामकम्मे।

पदमे अज्ञात्मणे पंक्ति उदेसो समतो

० छहो - उदेसो ०

[४९] से बेर्मी संति हसा पाणा तं जहा- अंड्रा पोटा जराउर रसया संसेयया संमुच्छम्बा उभिया ओववाया या संसारेर्मि पवुवचति।

[५०] मंदसस अवियाणाफँ।

[५१] भिज्ञात्स्ता पालिहीता पतलेयं परिनिवर्णण सद्वेसि पाणाभं सद्वेसि भूयां पाणायं सत्तायं अस्सायं अपरिनिवर्णण महत्वभं दुःखं, लिबेमि।

तसंति पाणा पदिसो दिसासु य।

[५२] तत्थ-तत्थ पुढो पास आतुरा परितावति।

[५३] संति पाणा पुढो सिया, लज्जामणा पुढो पास अनगारा मोल्ति एगे पवयागमा जमिनं विस्तुवर्धेंि सत्तेहि तस्काय-समारंभेण तस्काय-सत्य समारंभं अच्छे अनेकरुः पाणे विहिसति, तत्थ खलु भगवया परिनणा पवेड़्या, इम्ससच्चे जीवियसस परिवंदन-मानन-पूणणाए जाई-मरण-मौयणाए दुःखपहूंधाॊहेंि से सयभेस्ति तस्काय-सत्य समारंभं अवेंहि वा तस्काय-सत्य समारंभवें अनेने वा तस्काय-सत्य समारंभं समुनुषाणाङ्क, तं से अहियाें तं से अवोहिक्रों, से तं संहुज्ञायं आयणीं समुदाय सोच्का भगवं अनगारणायं वा अंति इहेंमेंगि सि नांयं भवति, एस खलु गंधे एस खलु मोहे एस खलु मारे एस एस खलु निरर, इच्छित्यं गठिए लोण जमिनं विस्तुवर्धेंि सत्तेहि तस्काय-समारंभेण तस्काय-सत्य समारंभं अनेने अनेकरुः पाणे विहिसति।

[५४] से बेर्म-अपेंगे अच्छायं वहंति, अपेंगे आजिणायं वहंति, अपेंगे तंसायं वहंति, अपेंगे सोणियाे वहंति, अपेंगे हिवयाए वहंति, अपेंगे पिलताए वहंति, अपेंगे वसाए वहंति, अपेंगे पिच्छाए वहंति, अपेंगे पुछळाए वहंति, अपेंगे बालाए वहंति, अपेंगे सिंगाए वहंति, अपेंगे विसाणाए वहंति अपेंगे दंताए वहंति अपेंगे दाणाए वहंति अपेंगे नहाए वहंति अपेंगे पहुलाणीए वहंति, अपेंगे अढीए वहंति, अपेंगे अढळिजाए वहंति, अपेंगे अढळाए वहंति, अपेंगे अंग्राए वहंति, अपेंगे हिसळु मोल्ति वा वहंति अपेंगे हिंसाति मोलि वा वहंति अपेंगे हिंसासंसी मोलि वा वहंति।

[५५] एत्थ सत्यं समारंभमणाणस्स इच्छेते आरंभा अपरिणामा भवति, एत्थ सत्यं असमारंभमणापस्स इच्छेते आरंभा परिणामा भवति, तं परिणाम मेहावी नेव संयं तस्काय-सत्य समारंभेज्ञा नेवबन्नेि सत्यसत्य समारंभवेज्ञा समुणाज्ञाेज्ञा, जरसेते तस्काय-सत्य-समारंभा परिणामा भवति, से हु मुनी परिणामकम्मे, लिबेमि।

पदमे अज्ञायणे छ्हो उदेसो समतो

० सत्तामो - उदेसो ०

[५६] पहु एखंस दुग्धपणाए।

[५७] आयकदेशी अहितं ति नच्या, जे अज्ञात्मणे जाणाए ते बहिया जाणाए जे बहिया जाणाए से अज्ञात्मणे जाणाए, एयं तुलमन्नेदि।

[५८] इह संतिगया दिव्या नावकंकहि तीविं।
वाजकम-समारंभेण वास्तवं समारंभमाणे अन्ते अनेकशेरे पाणे विविधतिः। तत्थ खलु भगवद्या परिणाम पवेष्या। इम्सश चेव जीविवस्स परिवर्तनं-माननं-पूणणां जाय-मरण-मोचणां दुखपदिशायेण से सयभेव वात-सत्यं समारंभति अन्तःहि वा वात-सत्यं समारंभवेति अन्तः वा वात-सत्यं समारंभते समणुजान्ति,

तं से अहिम्याण तं से अभोहीए, से तं भवज्ञामाणे आयामाणा समूद्र भगवाओ अनगराणा वा अततो इधेमेगसि नायं भवितं, एस खलु गंधे एस खलु मोहे एस खलु माये एस खलु निरए इच्छतं गम्धए लोए जमिण विविधवेति सत्येषि वाजकम-समारंभेण वात-सत्यं समारंभमाणे अन्ते अनेकशेरे पाणे विविधतिः।

[60] से बेमि-शति संपाठ्या पाणा आहच्छ संपलितं य फरिंस च खलु पुष्ठ एगे संघायमावज्ञति, जे तत्थ संघायमावज्ञति ते तत्थ परियावज्ञति, जे तत्थ परियावज्ञति ते तत्थ उद्याति, एसं तथं समारंभमाणस्स इच्छेते आरंभा अपरिणामा भवितं, एसं सत्यं असमारंभमाण्यं इच्छेते आरंभा परिणामा भवितं, तं परिणामे मेहावी नेव सत्यं वात-सत्यं समारंभेज्ञा नेवर्नेहि वात-सत्यं समारंभवेज्ञा नेवर्नेहि वात-सत्यं समारंभंते समणुजानेज्ञा। जस्सेते वात-सत्यं-समारंभा परिणामा भवितं, से हु मुणि परिणामयकम्ये, तितबेमि।

[61] एतं धि जाणे उदाहरणार्या जे आयारे न रमति आरंभमाण विनं वियंति छंदोपीणा अज्ञोवन्यं आरंभसंता पकरंति संगः।

[62] से वसुमं सत्य-समणागण-पणणाणं अपरणाणं अनरणेन्यं पांवं कम्यं नो अनरेसि, तं परिणामे मेहावी नेव सत्यं छज्जीव-निकाय-सत्यं समारंभेज्ञा नेवर्नेहि छज्जीव-निकाय-सत्यं समारंभवेज्ञा नेवर्नेहि छज्जीवनिकाय-सत्यं समारंभंते समणुजानेज्ञा, जस्सेते छज्जीवनिकाय-सत्यं-समारंभा परिणामा भवितं, से हु मुणि परिणामयकम्ये, तितबेमि।

मुनि दीपरतनासागरं संशोधितं: सम्पादितत्थय पदमं अज्ञयं समतं ।

बीं अज्ञयं - लोगविजी ।

पदमं - उदेन्सो ।

[63] जे गुप्से से मूल्याणे, जे मूल्याणे से गुप्से इति, से गुप्से महात परितावेण पुणो पुणो वसे पमते, मथा मे धिया मे धिया मे भवज्ञा मे भवज्ञा मे भवज्ञा मे पृथ्वी मे पृथ्वी मे पृथ्वी मे सहित-क्षण-संगठ-संपुष्पा मे विविधोपन्य-परियावण-मोचण-अच्छायणं मे, इच्छतं गम्धए लोए-वसे पमते अहो य रावो य परित्यप्माणे काल्काल-समुद्रालं संजोग्दी अधानोभी आलुपे सहस्तकारे विवियंतिते एसं सत्यं पुणो-पुणो अप्नं च खलु आउ इधेमेगसि मानववं तं जहा-

[64] सोय-परिणामोहि परिहायमाणोहि, छव्हु-परिणामोहि परिहायमाणोहि, धानि-परिणामोहि, रस-परिणामोहि परिहायमाणोहि, फास-परिणामोहि परिहायमाणोहि, अम्बकंकं च खलु वम सप्ते तंये से एयगा मृदामाण जनवम्य।

[65] जेहि वा संदिः संवसति तेंदवि जं एदा नियमा पुव्धं परिवत्यं सो वि ते नियमे
पच्छा परिवर्तन नालं ते तव तानाणे वा सरणाणे वा तुमं पि तेसिं नालं तानाणे वा सरणाणे वा से न हस्साणे न किंड्रा न तसिं न विभूसाणे ।

[66] इथ्येवं समुद्धि अहोवहाराणे अंतरं च खलु इमं संपेहाणे धीरे मृदुत्तमवि नो पमाणे, वो अच्छे जोवं च ।

[66] जीविणे इव जे पमाला से हंता छेट्ता भेंता तुम्पिता विलुप्ति उद्वित्ता उपलासित्ता अक्क सिर्साहितामि मन्नमाणे जेहिं वा सिद्धि संवसति तेजस्वि चं एवंा नियमां तं पुंविं पौंसिं तिंविं ते नियमे पच्छा पोसेज्जा नालं ते तव तानाणे वा सरणाणे वा तुमंपि तेसिं नालं तानाणे वा सरणाणे वा ।

[68] उवाइय-सोसेणं वा सन्नित-सन्निधकूण कजजड़ इहमेगोंसि असंजयणाम भोयणाला ता्त्रे से एक्या रोग-समुप्पाया समुद्धि जेहिं वा सिद्धि संवसति ते चं एवंा नियमां तं पुंविं प्रहत्ति से वा ते नियमे पच्छा परिहरेज्जा, नालं ते तव तानाणे वा सरणाणे वा तुमंपि तेसिं नालं तानाणे वा सरणाणे वा ।

[69] जानित्तु दुखु वत्तेयं सायं ।
[70] अनम्बिककर्त च खलु वयं सपेहाणे ।
[71] खण्ड जाणाहि पंडितं ।

[72] जाव सोप-परिणामणि अपरिहिनान जाव नेत्त-परिणामणि अपरिहिनान जाव धान-परिणामणि अपरिहिनान जाव गीह-परिणामणि अपरिहिनान जाव फास-परिणामणि अपरिहिनान इघ्यंतेहि विरू-वस्वेहि पणणणेहि अपरिहिनेहि आयहि समं सम्मणवंसिजज्ञासि - तित्वेमि ।

बीए अज्ञ्याणे प्रहों उदेसो समतली

• बीओ - उदेसो •

[73] अर्व आउडे से मेहवी, खण्डि मुक्के ।
[74] अणणाणे पुढा वि एघे नियिण्डि, मंदा मोहेन पाउडा, अपरिगह भविस्सामि समुद्धाए लढे कामे अभिगाह्विं, अणणाणे मुणिणाणे पालिण्देहि, एत्य मोडे पुणो पुणो सणाण नो हवाण नो पाराण ।

[75] विुमुक्का हु ते जणा जे जणा पारगामणियो, लोंभ आलोभणु दुगंछमाणे लढे कामे नाभिगाहइ ।

[76] विनायक होन लोभं निकित्म एस अक्कमे जाण्नित-पासति पढिलेहाणे नावकर्षणि एस अर्गारेिि वपुवचनि, अहो य राओ य परितप्पमणे कालाकालसमुद्धाि संजोगधी अढ़ालोगी आलुपे सहसकरे विभिन्निक्कितिए एत्य सत्ये पुणो-पुणो से आवबले से नाइबले से सयबले से नित्तबले से देव-बले से देव-बले से राय-बले से चोर-बले से अतिह-बले से जव्हर-बले से समव-बले इघ्यंतेहिं विस्तरवेहि कजजेहि दंड-सम्मानण सपेहाणे भया कजजि वाममक्वयिि मन्नमाणे अर्वा आसंसाणे ।

[77] तं परिणामणि मेहवारी नेव सयं एहि कजजेिहि दंड समारंभेज्जा नेवउन्न एहि कजजेिहि दंड समारंभें समणजण्णेज्जा, एस मणं आरििहि पवेड़ए जहल्थु कुसले नावलिपिजजसि - तित्वेमि ।

बीए अज्ञ्यणे बीओ उदेसो समतली
तबओ उद्देशी- ०

[६४] से असँ उच्चागोर असँ नीयागोर, नो हीण नो अड़रते नोद पीहे इति संख्याके गोयावादी ? के मानावादी ? कंसि वा एगे गिज्झे ? तम्हा पंडीए नो हरिसे नो कुज्झे ? भूएहि जाण पड़िलेह सातँ।

[६५] समिते एयागुःप्सिसी तं ज़हा-अंततत बहिरतं भूपतत्त कणाततं कुंततं खुजजततं बडभततं सामततं सबलतं सह पमाणण अनेकााणाओ जीणीगो संधावल विचवले पास पडहिण्य देहँ।

[६६] से अनुपमाणे हतिवहते जाड-मरण अनुपरिणामणे, जीविय पुढ़ो पिय इहमेगंसिस माणाणे खेत-गतु भूपमाणणाए, आरतं विरलं मणीकुंडलं सह हिरणणे इथियाओ परिगिज्झ तत्स्थे रत्ता न एतं तवो वा दमो वा निमो वा दिससति, संपुणण बाले जीविउकामे लालप्यामणे मूंठे विपपपरियासमुवेहँ।

[६७] इणणेव नावकंडःति जे जणा गुड्वचारिणो।

जाती-मरण परिणाम चरे संकमणे देहँ।

[६८] नरदि कास्स सानामो, सवँे पाणा पियायादा सुदुःप्सिला दुकृखपड़कला अपियवहा पियजीविणे जीविउकामा, सवँेसे जीविय पियं, तं परिगिज्झ दुरं चुप्पणं अभिजुलिणा णं संसिचिया णं तिबिहेण जाठवी से तथं मतला भवइ-अप्पा वा बहुगा वा से तथं गढ़िए चुइड़ भोयणाए, तओ से एगया विपरितिं संभूयुं महोवगरण भवइ, तं पि से एगया दायणा वा विभयंति, अदत्तारो वा से अवहरति, रयणो वा से विलयंति, नस्तस्ति वा से विनस्तस्ति वा से, अगाराहेण वा से जड़ड़इ, इति से परस्स अड़ाए कृराइ कम्माइ बाले पकूवमाणे तेहं दुकृखे मूंठे विपपरियासमुवेहँ, मुणिणा हु एयं पवेंयं अनोहंतता एते, नो य ओह तरिलतए, अतीरंगमा एते नो य शैर गमिलतए, अपरांगमा एते नो य पारं गमिलतए, आयाणि जं आयाय तंबि ठाणे न चुइड़इ, विति फस्थूखेणणे तम्भि ठाणमि चुइड़इ।

[६९] उद्देशी पासगस्नि नरदि, बाले पुण निः कास्समणुणे असंयुक्तु दुकृखी दुकृखानेव आवाद अपुपरिहृङ्ग- तिबिहेमि।

बीए अन्ज्ञयणे ताइओ उद्देशी समतति

० चठत्थी - उद्देशी ०

[७०] तओ से एगया रोग-समुपायाय समुपजजंति जेहि वा सदं संवसति ते वा णं एगया नियया पुढंि परिवर्यति सो वा ते नियगे पच्चा परिवर्याज्जा नालं ते तव ताणाए वा सरणाए वा तुम्पि तेसं नालं ताणाए वा सरणाए वा जाणितु दुकृख गत्तेय सांयं, भोगा मे व अनुसंयंति इहमेगंसिस माणाणं।

[७१] तिबिहेण जाठवी से तथं मतला भवइ-अप्पा वा बहुगा वा से तथं गढ़िए चित्ति भोयणाए, ततो से एगया विपरिसिं संभूयुं महोवगरण भवति तं पि से एगया दायणा विभयंति अदत्तारो वा से अवहरति रयणो वा से विलयंति नस्तस्ति वा से विनस्तस्ति वा से अगाराहेण वा से जड़ड़इ, इति से परस्स अड़ाए कृराइ कम्माइ बाले पकूवमाणे तेहं दुकृखे मूंठे विपपरियासमुवेहँ।

[७२] आरं च छंद च विगिच धिरे। नुम चेव तं सल्लमाहृद, जेण सिया तेन नो सिया इणणेव नावबुद्धांति जे जना मोहपांडा, धीमी लोण पववहिए, ते भो। वयति - एयाइ आयतणणई से
दुखाए मोहाए माराए नरगाए नरग-तिरिक्खाए सततं मृदे धर्मं नाभिजाणं उदाहु वीरे अप्पमादो महामोहे, अरं कुसलसस पमाणं, सदितिरमणं संपेहाए भैरुधर्मं संपेहाए नानं पास अरं ते एएह! 

[88] एयं पास भूगु! महव्यं नाइवाएजजं कण्यं, एस वीयं परस्य हं न नित्यिततिय आदामनी, ने ने देति न कुपिष्टजज, थों लद्धु न खंसए पिठैसहंओ परिणमिजजा, एयं मोंग समणुवासेमजतसि - लितेमि।

### बीए अज्ञायणं चउद्वितीय हुदैसो समलतो

- पंचमी - हुदैसो

---

[88] जमिणं विस्मृवेहं सत्येहं लोगास कमं-समारंभं कजजंति, तं जहा-अप्पणो से पुरुताणं धूमणं सुणाहणं नातीणं धातीणं राइणं दासाणं दासीणं कम्मवरणं कम्मवरीणं आरसाण पुरो पहँणाण सासमाण पाप्यासाण सत्तिनि-सत्तिनीयं कजजंडू इघमेंजसि माणवणं भूपणण।

[89] समुहिण अनगाणे आरिण आरियणणे आरियदसी अयंसंधति अदककू से नाइए नाइवाए न समणुजाणण सत्वामांगं परिणणण निरामांघं परिवाल।

[90] अदित्समाणे कय-विककपसु से न किंगे न किणाणे किणंत न समणुजाण।, से भिककू कालणे बलणे मायणे खेयणे खण्यणे विपणणे ससमणणे पर्समणणे भावणे परिगिह अममााणणे कालामुद्राए अपडणणे।

[91] दुहो छैलता नियङ वत्यं पहिगिहं कंबलं पायपुछण उरगङं च कडासणं एतेसु चेव जाणिजज।

[92] लढे आहारे अनगारे मायं जाणेजजां, से जहेरं भगव्या पवेईं, लाभो लित न मजेजजां, अलाभो लित न सोपाजज, बढुं पी लद्धु न लिअे, परिगिहाओ अप्पणो अवककेजजां।

[93] अत्सहाण पासं परिहरेजजा, एस मणगे आरिएगं पवेईं, जहेय्य कुसले नोवलिपिजजसित लित बेमि।

[94] कामा दुरलिककभा, जीवियं दुप्पडिवहं, कामकामी खलु अरं पुरिसे, से सोकय जूर्ति तिपप्ति परिपप्ति।

[95] आयतवक्खू लोगविपसी लोगसस अहो भागं जाणइं, उडङ्ग भागं जाणइं, तियरं भागं जाणइं, गडि लोए अनुपरियवहमाणे संधि वित्तृल्ला इह मध्यरहं, एस वीरे परस्यं जे बदरे सिद्धमोएं, जहा अंतो तहा बाहि जहा बाहि तहा अंतो, अंतो अंतो पूर्तिदेहंत्तरण पातित पुढव्यव सवंताइं पंडिए पविदेहए।

[96] से महमं परिणणाय मा यु हु लां रहाणसी, मा तेसु तिरिचछमपणमावातए, कासंकासे खलु अरं पुरिसे, बहुमाइ कइण मृदे, पुणों तं करइ लोभं वं वृढति अप्पणो, जमिणं परिकहिजङजङ इमसस से सविष्णुयय, अमारसस महाससकी, अइतें तु पेवए अपरिणणए तंवंति।

[97] से तं जाणण जमहं बेंमि, तेडङइं पंडिते पवयमाणे से हंसा छैलता भेतला लूंबपक्ता विलुंपक्ता उदव्यत्ता, अकड़ करिसामिति मन्नमाणे, जसस व यी खण करइं, अरं बालसस संगीणं, जे वा से कारइ वाले, न एवं अनगारसस जायति - लितेमि।

### बीए अज्ञायणं पंचमी - हुदैसो समलतो
• छढ़ो - उदेसो •

[९८] से तं संबुज्ञामणे आयामी समुदाय तमः पावं कर्मा ने कृजय न कारर्कर्जय ।

[९९] सिया तथा एगरे विच्यागमुङ्ग छ्यु अन्नयंसि कर्म्य शुड्ही लाभामणे सरण दुःखें वे विष्कियासुङ्गे, सरण विष्यामणे पुढे वयं पुकुछत, जस्मि पाणा पवछिया पाठलेक्ष्ये नै निकरणाए, एस परणा पुदछड़ कर्मोवसंति ।

[१००] जे ममाय-मति जहाति से जहाति ममायं, से हु दिहः मुनि जस्स नन्दि ममायं, तं परणामै मेहायी विदिता लोण वंता लोगांसणे से मैड़े परकमेजुसि, लितबेमि ।

[१०१] नारति सहते, वीरे वीरे नै सहते रति ।

[१०२] जम्हरा अवभमणे वीरे, तमः वीरे न रजजति ।

[१०३] सदे य पासे अहियामणे, निन्दंद नदिं इ जीवियस ।

मुनि मौनं समादय, घुणे कर्म-सरीगर्ग ।

[१०४] पंत तूहे सेयंति वीरा समतलदसिण एस ओघंते मुनि लिणे मूले विरते वियाहिते, लित बेबिमि ।

[१०५] दुःखसु मुनि अनुप्याय तुचछए, गिलाए वतलए, एस वीरे पसंसिए अच्चेड लोयसंजोए एस नाग पुदछड़ ।

[१०६] जे दुःखं पवदितं इह माणवाणं तरस दुःखस्व कुसाय परिणामदहाररं इति कर्मं परिणामय सव्साये, जे अनन्नदसी से अनन्नाराये जे अनन्नाराये से अनन्नदसी, जहाँ पणि सत्यें तहां तुचछस्व कत्याम जहा तुचछस्व कत्याम तहा पणि सत्यें कत्याम ।

[१०७] अवि य होः अनानिदयमणे एत्यपि जाणे सेयंति नन्दि, के यं पुरिसे कं च नए ।

[१०८] एस वीरे पसंसिए जे बद्धे पाठमाय उड़क्ये अहे लिरियं पिसाय, से सच्यत्सत परिणामाये न लिप्तवं छण्यपणे, वीरे से मेहायी अनुध्यायस्व खेम्यणे जे य बंधप्योक्षमायने, कुसले पुणे नै बद्धे नो मुक्के ।

[१०९] से जं च आर्कभे जं च नारभे अनारद्वे च नारभे छण छण परिणाय लोगांसण च सव्साये ।

[१००] उदेसो पागसस्त नन्दि, बले पुणे निहे कासमसणुणे असमियुक्के दुःखी दुःखाणवें आवं अनुपरियड़ - लितबेमि ।

## बीए अनज्ञायणे छड़ो उदेसो समतलो

मुनि दीपरतनसागरण संशोधितः सम्पादितश्च बीए अनज्ञायण समतलः
[1911] से आयाव नानाव वेयाव धम्मव भंवव पण्णाहीं परियाण्ड लोंयं, मुनीतिक वुच्ये धम्मविद उजजू आवडसोए संगमभिज्ञानि।

[1912] सीओसिन्यचाल से निगंदैत अड़-ड़ सहे फसियं नो वेदैत जागर-वरोधर वीरे एवं दुर्भा पमोक्षसिज जाराम्चुवुसोवणीए नरे सयणं मूढे धम्मं नानिज्ञानि।

[1913] पासिय आउँे पाणे अपपत्तो परिवर्त, मंता य मइम पास, आंराबज दुक्कंिमण ति नच्छा, माई पमाई पुनरी पांगबं, उवेहमणो सह-संवेसु उजजू मारामणवकी मरणा पमुच्यति अपपत्तो कामेहि उवरतो पावकमेहि वीरे आयुरुतेन खेणणे, जे पजजवाज्य-सत्यस खेणणे से असत्यस्स खेणणे जे असत्यस्स खेणणे, से पजजवाज्यसत्यस्स खेणणे, अक्षम्स्स ववहारो न विजज़, कममुणा उवाही जायङ कममं च पहिलेहाए।

[1914] कमम्मूलं च जे छण्, पढ़लेहिय सवव समावय दोहि अंतेहिं अदिष्माणां तं परिणा्य मेहावी विदित्ता लोंगं वंता लोगसणां से मेहावी परकमेज्जासि- लितेमि।

तःए अजन्याण्य पढ़ो-उदेसो सममतो।

५ बीओ - उदेसो ५।

[1915] जाति च वुडिद च इहजण! पांसे भूरतेहि जाणे पड़लेह सांत।
तम्हा लितवज्ज परमति नच्छा सममतदेसी न करेति पाव।

[1916] उम्मुच पांसे इह मितवहि आरामजसी उभयाणपस्सी।
कामेसु गिहा निचयं करेति संसिद्धमणा पुणरितिग गबं।

[1917] अधि से हासमासजज हंता नंदीति मन्नति।
अलं बास्स संगेण वेरे वुडिदितिअप्पणो।

[1918] तम्हा लितवज्जो परमति नच्छा आयुक्तदेसी न करेति पाव।
अग्नि च मूलं च विगिच धीरे पलितिचछिद्रियां निककम्ढदेसी।

[1919] एस मरणा पमुच्छइ, से हु दिहवणे मुनी लोंयसी परमदेसी विविलतजसी उवसंते समिते सहिते सया जए कालकंखी परिवर्त बुं च खलु पावकम्ब पगळ।

[1920] सच्चासि पिधि कुव्वाहा एघोवर मेहावी सवव पावकम्ब झोसेतिः।

[1921] अनेकरितं खलु अय पुरिसे, से केयण अरिहः पूरित्ता से अल्लवहाए
अन्नपरिवाहाए अन्नपरिवाहाए जणावयवहाए जणावयपरिवाहाए जनावयपरिवाहाए।

[1922] आसेविता एतम्व इघेवेगे समुहवया तम्हा तं बिजङ नो सेवणे निससां पासिय नाणी उववायं चवाहं अल्लन चर माहण, से न छणे न छणावेछणत नाजुकान्द निविद्ध नंदि अरते पवासु अनोमदेसी निससने पावहेंहि कामेहि।

[1923] कोहाइमान हणणाय च वीरे लोभस्स पासे निरयं महंत।
तम्हा हि वीरे विरते वहाओ छिदेजज सोयं लहुइमणामी।

[1924] गंधे परिणा्य इहजजज वीरे सोयं परिणावप चरेजज दंते।
उम्म्म्क लदुर्इ इह माणवेंहि नो पाणिणं पाणे समारभेज्जासि।

लितेमि।
सुयक्षंभ-१, अज्ञात्यं-३, उदेसो-३

• तड़ो - उदेसो •

[१२५] संधिः लोगस्स जाणिता आयो बहिया पास तम्हा न-हंता न विधायए, जस्कि अनजनन वित्तिगिज्जाए पड़िलेिहाए न करेि माव नकम्म कि तत्थ मुझी कारण सिया ? ।

[१२६] समयं तत्थुवेहाए अप्पाण्यं विपःसाध्यए ।
अनुन्तरम सािनी नो पमाए कयाइ वि ।
आयुगुलते सया वीरे जायामायाए जावे ।

[१२७] विरामं स्वेहि गच्छज्जा महाया खुड़िएििे वा आगति गति परिणाय दोििे वि अंतेहि अदिससमापेहि से न फिज्ज़ि न भिज्ज़ि न डुज्ज़ि न हम्मड़ि कंघन्य सववलोिे ।

[१२८] अवरणे पुवि न सरति एिे, किमस्स सीति ? कि वागमिसिः ? ।
भासंिते एिे इह मान्वा उ, जस्सस सीति तम्हामिसिः ।

[१२९] नातीमद्धं न य आगमिसिः, आई नियङ्चतिि तहाग्या उ ।
विधूत-कप्पे एयणापुसिः निज्ञोस्ज़िता खवने महेई ।

[१३०] का अरई के आन्देिे ? एएििि अगहे चरे, सदि हांि परिचवज्ज, आलीण-गुदि परिव्वए । पुरिसा । तुममेव तुम मिलिि कि बहिया मिस्तमिच्छिे ।

[१३१] जे जाणेज्जा उच्चायलयं ते जाणेज्जा दूरालयं जे जाणेज्जा दूरालयं ते जाणेज्जा उच्चायलयं, पुरिसा अलमामेव अमिनिज्जाए एिे दुक्खि पपोक्कासि पुरिसा सच्चमेव सरबिज्जाङ्गाहि, सच्चस्स आन्वे उड़िए से मेहावी मार ततििे, तहाए धम्ममादाय सेिे समानुपसिति ।

[१३२] दुहोिे जीविस्स परिवर्तन-मानन-पुपुराणे जंसि एिे पमादेतिे ।

[१३३] तहाए दुक्खिमलताए पुिे नो झंझाए, पािििि दविे लोयालोि-पवंचाओ मुछाई, तिलबेमि ।

• तड़े-अज्ञात्यं-तड़े-उदेसो-समालो •

[१३४] से वंिा कोि् च मान च माय च लोभं च एिे पासगस्स दंसिे उवरसत्यस्स पलियंतकरस्स आयाण सगङ्किः ।

[१३५] जे एिे जाण्ड के सदि जाण्ड जे सदि जाण्ड के एिे जाण्ड ।

[१३६] सदििे पमात्तसस्स भःिे, सदििे अप्पमात्तसस्स नतििे भःिे, जे एिे नामे से बहु नामे जे बहु नामे से एिे नामे, दुक्खि लोगस्स जागिता वंिा लोगस्स संज्ञां मंिि वीरा महाजाण परेण परं जंििे, नावकंििे जीविधिः ।

[१३७] एिे विगिज्ञमाणे पुिो विगिज्ञ, पुिो विगिज्ञमाणे एिे विगिज्ञ, सघटी आणाए मेहावी लोिं च आणाए अबिसमेच्छ्य अकुलोम्म्य, अन्ति सत्यं परेण परं, नतििे असत्यं परेण परं ।

[१३८] जे कोहदंसी से मानदंसी, जे मानदंसी से मायांदंसी जे मायांदंसी से लोभदंसी, जे लोभदंसी से पेजजंदंसी, जे पेजजंदंसी से दोसदंसी, जे दोसदंसी से मोहदंसी, जे मोहदंसी से गवभदंसी, जे
गद्दादंसी से जम्मदंसी, जे जम्मदंसी से मारदंसी, जे मारदंसी से निरयंदंसी, जे निरयंदंसी से तिरियंदंसी, जे तिरियंदंसी से दुक्कंदंसी।

सुयकंधो-१, अज्ञरण-३, उदेसो-४

से मेहावी अभिलिङ्केज्जा कोहं च मानं च मायं च लोहं च गेजं च दोसं च मोहं च गच्छनं च जम्मं च मारं च नरंगं च तिरं च दुकं च। एवं पासगस्स दंसं उदरयस्तथा विपंतकरस्स आयाण निसिा खुदाबी। किमवित्थ उवाही पासगस्स न विजज्ञ। नन्थिर्श, विक्षेपितः।

तद्धप अज्ञरणेऽणुचतृथो उदेसो समातो।
मुनि दीपरमसागरेण संहोतिष्ठः सम्पादितच तद्यं अज्ञरणं समातं।

चउत्थ्य - अज्ञरणं "सम्मतं"

○ पठनो - उदेसो ।

[१३५] से बेमि - जे आर्या जे य पुर्णन्त जे य आकामस्सा अरं भगवंतोते सत्ये एवं वाचिकांवते एवं भास्ति एवं फलरैति एवं फलिति- सत्ये पाणा सत्ये भुझा सत्ये जीवा सत्ये सत्या न हंस्तवा न अज्ञावेयवा न परिहेतः वा न उदवेयवा, असं स्थ्रमें सुवेदे निराण सासं समिच्चा लोकं खेमण्यंहि पवेदं, तं जहा। उद्विण्यं वा अनुरिण्यं वा उद्विण्यं जा अनुरिण्यं वा उद्विण्यं वा अनुरिण्यं वा अनोरिण्यं वा अनोरिण्यं वा अनोरिण्यं वा अत्यं चेयं तहा चेयं, असं चेयं पवेदां।

[१५०] तं आइत्तु न निहं न निखिये, जाणित्व धम्मं जहा तहा, दिखितं निवेयं गच्छे ज्जा, नो लोगससवं चरे।

[१५५] जस्त निक्षि इमा जाई अनं तस्त काँ सिया? दिवं सुयं मयं विण्यायं जमेयं निरक्षिन्यं, समेश्वरण पलेमणा पुण्य-पुण्यं जाति पक्षितं।

[१५२] अहो य राओ य जयमाणे वीरे सया आयध्यणाणे पमत्ये बहिया पास अप्यमले सया परक्येजासि -रिक्षिमी।

चउत्थ्य: अज्ञरणेऽणु पठनो उदेसो समातो।

○ बीओ - उदेसो ।

[१५३] जे असवा ते परिस्वते जे परिस्वते ते असवा, जे अनसवा ते अपरिस्वते जे अपरिस्वते ते अनसवा।

[१५४] अधानानी इह माणावं संसारपदिकानानं संबुज्ञामाणं विण्यापुरताणं अहा वि संता अदुया ममता अहस्त्वच्यमिणं ति बेमि, नानागमो मच्छुमुहरस्स अस्थि, इछा पणाया बंकलिक्या कालाघोही निबार निविल्हा पुडो-पुडो जाई पक्षपालम।

[१५५] इहमेससी तत्त्व-तत्त्व संवघो वर्धित, अहोवावाव फासे पडलिते वर्धित, चिंद कृरिहिन कम्महि चिंद विचिन्ध्यं, अछिं फूरिहिं कम्महि न चिंद परिविन्ध्यं, अछो वर्धित अदुया वि नाणी नाणी वर्धित अदुया वि एगे।

[१५६] आविर्त्तेत्र कॉयावित्त लोयसी समण य माहण य पुडो विवादं वर्धं, से दियं च पे सयं च पे मयं च पे विण्यायं च पे उदनं अहं तिरियं दिसायु सत्यत सुपिलुहिं च पे-सत्ये पाणा।
सब्जे भूया सब्जे जीवा सब्जे सलां हंतवा । अजज़वेयवा परिधेतवा परियाएव्यव्या उद्वेयव्या, एत्थ वि जाणह नशीलत्य दोसो, अनायत्यवणमेंयं, तत्थ जे ते आरिया ते एवं वयसी- 
से दुःखिं च भे दुर्सुयं च भे दुम्भमय च भे दुक्तविण्य च भे उड़ो अहं तिरिं दिसासु 

सुयकंधो-१, अजज़यण-४, उदेसो-२ 

सव्वतो दुप्पड़िहिंयिं च भे, जाणं तुब्भे एवमाइक्कह एवं भासह एवं परवें एवं पण्ववें- 
सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सलां हंतवा अजज़वेयवा परिधेतवा परियाएव्यव्या उद्वेयव्या, एत्थ वि जाणह नशीलत्य दोसो, अनायत्यवणमेंयं। 

वयं पुणं एवमाइक्कामो एवं भासों एवं पस्वेमों एवं पण्वेमों सव्वे पाणा सव्वे भूया 
सव्वे जीवा सव्वे सलां न हंतवा न अजज़वेयवा न परिधेतवा न परियाएव्यव्या न उद्वेयव्या एत्थ वि 
जाणह नशीलत्य दोसो आरिवणमेंयं, पुवं निकाय समयं फतेंय पुछिंससामो- हंभो पावादु । किं भे 
सायं दुक्खं उदु असाय । समयिं पडिवनं याविं एवं बूया- सव्वेसं पाणानं सव्वेसं भूयाणं सव्वेसं 
जीवाणं सव्वेसं सलांणं असायं अपरिवण्यं महभयं दुक्खं, तितभें । 

चउत्थें अजज्ञाणं भीं उदेसो समवतो 

○ तढ़ो - उदेसो ○

[१४७] उवेहि णं बहिया य लोयं से सव्वलोंकंसि जे केड़ विण्णू, अनुवीं पास 
निकिखलदंडा, जे केड़ सलां पलियं चयंति, नरा युवच्छ धम्मविदु ति अंजू, आरंभाँ दुक्खमियति 
नलचा, एवमाइं समंलदंसिणों, ते सव्वे पावाइया दुक्खसस कुसला परिणमुदाहरति इति कम्म परिणाय 
सव्वसी। 

[१४८] इह आपांकंशी पंडित अनिह, एगमप्पणं संपेहाइ धुपण सरींं कसेहि अप्पाणं जरेह 
अप्पाणं जहा जुणाईं कडाईं हंतवाहो प्रमत्थत्व, एवं अर्तसमाइहए अनिवें विगिन्छ कोह अविकिप्पमाणे । 

[१४९] इभं निरुभाउं संपेहाइ दुक्खं च जाण अदुवागमेसस, पुढ़ो फासाईं च फासे, लोयं च 
पास विकंवदनां, जे निवुढ़ पावेहि कम्हेंं अनिदाणं ते वियाहिया तम्हा अतिविजज नो 
पृविजलिज्जासिं, तितभें। 

चउत्थें अजज्ञाणं तढ़ो उदेसो समवतो 

○ चउत्थो - उदेसो ○

[१५०] आवीलए पवीलए निपीलए जहितग पुरशंसांगमं हिच्चा उवसमं, तम्हा अविमणे वीरे 
सारए समए सहिते सया जाएं, दुर्नुचरो मग्गो वीरणं अनिधागमेमि विगिन्च मंस-सोणीयं, एस परंसे 
दविए वीरे आपाणिजुं वियाहिए जे धुणाईं नमुसमसं वसित्ताम बभवेचर्स। 

[१५१] जेतसछं पतलहज्जहि आपायणो-गदिद बाले अविचछजनवंदने अनभिक्कंसंजोग 
तम्मसं अविजजाणों आपाणे लंबो नष्ठिः, तितभें। 

[१५२] जससं नाथ्य धुरा पचछा मज़ो तसस कृूह सिया । से हुं पण्णासंते बुढ़े 
आरंभोंः सममेयति पासह जेण बंधं वह घोंगे परितांवं च दारणं, पतलिस्तिद्वाभिः च सोयं 
निकस्मादसिहइं हह मचिच्छहं, कम्मणा सफलं दुढं तो निजजाई वेयवी।
[1973] जे खलु भौ! वीरा समिता सहिता सदा जया संघदसिणिः आतोवरया अहाताह लोपं उवेहमाणा नवैणं पडीणं दाडिणं उदीणं इति सच्चिंसिः परिचिन्दिः, साहिष्षामो नाणां वीरां समितां सहितां सदा जयां संघदसिणि आतोवराणां अहाताह लोपं उवेहमाणाणं किमस्य उवाधि पासगस्स ? न विजजति ? नत्थि, तितबेमि।

चउत्स्यं अज्ञायनं चउत्स्यं उद्रेसों समततो
मूनि दीपरतसागरेण संशोधितः सम्प्रदातिशं चउत्स्यं अज्ञायनं समततं

सुयक्षंधों–१, अज्ञायनं–५, उद्रेसों–१

० पंचमं अज्ञायनं – लोगसारो ०

० पढःमो – उद्रेसों ०

[1974] आवंती केआवंती लोयसि विप्रामुसति अधाए अण्डाए वा, एसु चेव विप्परा-मुसति गुरु से कामा तथो से माैस्स अंतो, जओ से माैस्स अंतो, तओ से दूरो, नेव से अंतो नेव से दूरो।

[1975] से पासति फुसीयामिव कुसगे पणुन्त निवततं वाटैैंित, एवं बाल्स जीविं मंदस्स अविजानो, कृणि कम्माइ बाले पक्त्वमाणे तेण दुर्खेित्त मूढे विपरियासमुि, मोहेण गबभं मरणाति एि, एथ थो मोहे पुणो-पुणो।

[1976] संस्यं परिजानतो संसापे परिणायणे भवति, संस्यं अपरिजानतो संसारे अपरिणायणे भवति।

[1977] जे छेि से सागारियं न सेिे, कृि एि अविजानओं बितियं मंदस्स बालय [पा] जे खलु विसे सेव सेविता वा नालोएः, परेण वा पुढो निपुववि, अहवा तं परं सणं वा दोस्यं पाविड्यरणं वा दोस्यं उवसिपिजज्तिः] लद्वा हुर्त्था पहिलेहएः, आगमित्त आणविज्जा अनासेवणायाः - तितबेमि।

[1978] पासि एि वेिु घिडः परिणिज्ञमाणे एत्थ फासि पुणो-पुणो आवंती केआवंती लोयसि आरंभजीवी, एसु चेव आरंभजीवी, एत्थ वि बाले परिप्रचमाणे रसयति पावेंिठ कम्मेि असरणे सरणं ति मन्नमाणे, इहन्मेगसि एगाचरियं भवति- से बहुकोहे बहुमाणे बहुलोए बहुराए बहुंिे बहुसिे बहुसकपे आसवसती पाविद्यछन्ते उड्यवायं पवयमाणे मा से केि अदक्रू अन्नाण-पमाय-दोस्यं सरणं मूढे धम्मं नामिजजाणि, अहा पया माणव ! कम्मकोविया, जे अनुवरया अविज्जाए पालिमोक्षमाहु आवंि एि अनुपरियञ्ज्ञति, तितबेमि।

पंचमं अज्ञायनं पढःमो उद्रेसों समततो

० बीओ – उद्रेसों ०

[1979] आवंती केआवंती लोयसि आनारंभजीवीं मेतेसु, एत्थेवरां तं झोसमाणे, अरं संधीति अदक्रू, जे इस्मस विग्रहस्स अरं खणिति मन्नसी, एस मगे आरिेिं पवेदिेिं, उद्रिे नो पमायए, जाणित्तु दुर्खेि फल्तेि सायं, पुढोंछदा इह माणवा, पुढो दुर्खेि पवेदििं, से अविहिसमाणे अणयमाणे, पुढो फासे विप्पणोणणे।
[१६६०] एस समिया-परियायां विपायते जे असल्ला पावेणि कम्मेदि, उदाहु ते आत्मका फूलित,
इति उदाहु धीरे ते फास पुडो अहियासए, से पुढिं यें पंच्छ पें भृरु-धम्मं विद्युसण-धम्मं अधुवं अनितित असावमय चण्याचिङ्ग विपरिणाम-धम्मं पासह एवं रुव संधि ।
[१६६१] समुप्पेहमाणस्य एगायतण-रयस्स इह विपुमुक्तस्य नल्प्य मग्ने विपरित्य, लितवेमि ।
[१६६२] आवंती के आवंती पंगणि परिप्रेक्षांती - से अष्ट वा बहु वा अणु वा भूल वा चितमांत वा अचितमांत वा एतेसु चेव परिप्रेक्षांती, एधेवेगेसिस महभवं भवति पंगणवित च चं उदेहाए सुपकंदो-१, अज्ञायण-५, उदेसो-३

एए संगे अवजाति ।
[१६६३] से सुपिफिबं सूवणीयं ति नच्छा पुरिसा परमचखू विपरककमा एतेसु चेव बंचोरे, से सुय च मे अज्ञातिय च मे बंध-पमोक्को, अज्ञात्थव एत्य विरेते अनगाके दीहायां तितिक्षए, पमतते बहिया पास अपमत्तो परिक्षए, एयो मोण सम्म अनुवासिज्जासि - लितवेमि ।

पंचमे अज्ञायणे तिहो उदेसो समातो ।
[१६६४] आवंती के आवंती लोणि अपरिप्रेक्षांती, एससु चेव आपरिप्रेक्षांती सोच्छा वई मेहावी पंडियाण निसामविय समिया धम्मं आरिएहं पोदिपेत जहेठय मए संधि ज्योसिए एवमण्डत्य संधी दुज्जोसिए भवति तम्मा बेमि नो लिहेजू वीरियं ।
[१६६५] जे पुठुज्जई नो पच्छाविवई, जे पुठुज्जई पच्छाविवई, जे नो पुठुज्जई नो पच्छाविवई, सेवि तारिसए सिया जे परिप्रेय लोगमन्निवंति ।
[१६६६] एयो नियाय मुणिणा पविदित- इह आणाकंखी पंडिए, अनहे, पुवावायव जयमाणे सया सीलु सुपेहाए, सुणिया भवे अकामे अआह्ं, इस्स्य चेव जुज्ञाहि किं ते जुज्ञाण बज्जारो ? ।
[१६६७] जुज्ञारिन्ध खबु मुन्नल्ह जहेठय तुम्लेहि परिप्रेय-विपेगेजो भासिए, चुहु हु बाले गोव्वाडा एसु रज्जइ, असि चेव पपुव्युतिः स्वसि वा छण्वसि वा, से हु एगो संविप्प्य मुण अन्नहा लोण उदेहाणे, इति कम्य परिप्रेय सव्वसौ से न हिन्ना जयमति नो पवह्वति उदेहाणे पत्तेयं सायं, वणायस्सी नारमे कंचचं सव्वलोए, एग्गमुहु विदिसप्प्यणे निदिशणाचारी अरए पपुसाय ।
[१६६८] से वस्सु मे सच-समोनाग्य-पन्नाणे अप्पाणे अकरणिज पवकक्कृं ते नो अनेसिं, जे सम्म सि पासा तं मोण ति पासा, जे मोण ति पासा तं सम्म ति पासा, न इम सकक सिद्दितहि अदिजज्ञाणहि गुणाशास्येहि वेक्समभागतेरेि पमततेहि गारामावस्तेरेि, मुही मोण समयाए धुणे कम्य-सरीरग, पंि लूि सेवित वीसा समतदितयि, एस ओहंतरे मुही लिणे मूले विधाने विधाहिणे स्वयं - लितवेमि ।

पंचमे अज्ञायणे तिहो उदेसो समातो ।
[१६६९] गामाणामं दुज्जजामाणां दुज्जजात दुपरक्षभं भवतिः अवियत्तमस्त भिक्खुगुणो ।
[१६७०] वयस्सा विए एगो बुद्धरा कृपणि मण्ड्या, उन्नयमाणे य नरे महता मोहेण मुज्ञानति, संबाहा बहेवे भ्रुज्ञो-भ्रुज्ञो दुरतिकक्मा अजजाते अपसति, एयो ते मा होउ एयो कुसलस्य दंसण, तद्दीवे
तम्मोलीए तप्तपुककारे तपस्वी तन्त्रिवेषणे जयं विहारी चित्तिमिवाती पंचनिज्ञाती, पलबाहः पासिय पाणे गच्छेज्जा।

[१७१] से अभिक्षकमाणे पद्यकक्षमाणे संकूचेमाणे पसारेमाणे विषविषमाणे संपत्तिज्ञ माणे एगाया गुणसमिक्षस रीयने कायसफळ समपुर्णत्वाने एगतिया पाणा उद्धार्यत हिलोग-वेयण वेजजावजियं, जे आउड़कयं कम्मं तं परिणाए विवेगमेति, एवं से अप्पमाणेन विवेगं किङ्गति वेयती।

[१७२] से पभृतृंडोषी पमात्परिनाणाने उवसंते समिए सहिते संया जयं दंडुं विपऺदेवति अप्पाण्, किमेस जणं करिसति ? एस से परमारामो जाण लोगमि इत्येहो मुणिशाः हु एतं पवेदितं सुङ्कक्षंधो-१, अज्ज्ञत्वं-५, उदेसी-४

उबाहिजजमाणे गामधम्मेहिं- अवि निव्वलासए अवि ओमेतरियं कुज्जा अवि उडङ्ग थांण ठाँज्जः अवि गामाणुगांग दूङ्गजज्जा अवि आहारी वीचिंछेज्जा, अवि चं इत्थीसु मणं, पुवं दंडा पृष्ठा फासा पुवं फासा पृष्ठा दंडा, इच्छेते कहाण संकायं भ्रवति, पद्धेज्जां आमेत्ताआण्वेज्जां अनास्वेत्तां। तित्तेबिमि

से नावहि ने पासणीए नो समसारणीए नो मामए नो कयकिरिए वहुगुल्ले अज्ज्ञःस्वंहुं परिवेज्जां सदा पावं, एतं भों संपुषुवासिजानि। - तित्तेबिमि।

पंचमे अज्ज्ञणेन गुण्यो उदेसी समत्तो

० पंचमो-उदेसी ०

[१७३] से बेमि - तं जहा अवि हरए पदपुरुणे चिडङ्ग समंसि भोंमे उवसंतते सारव्रक्षमाणे,

से चिडङ्ग सोयम्ज्ञगए, से पास सत्तों गुल्ले, पास लोए महेसिणो जे य पण्णामणिं पण्णूं आरंभोवरय, सम्ममेयंति पासह, कान्ससं कंखां परिव्ययंति, तित्तेबिमि।

[१७४] वितिमिच्छ समावननेन अप्पाणेन नो लभति समाधिं, सिया वेगे अनुगाढङ्गति,

असिया वेगे अनुगाढङ्गति, अनुगाढङ्गमाणेहिं अनुगाढङ्गमाणं कण्ण न निभिवज्जे ?।

[१७५] तमेव सच्च नीसंकं जं जिणेगी पवेदियं।

[१७६] सुमेतीस ्सं समपुर्णनस्स संवच्चवमाणाः- समियंति मननमाणाः एगाया समिया

होइं, समियंति मननमाणाः एगाया असमिया होइं, असमियंति मननमाणाः एगाया असमिया होइं, असमियंति मननमाणाः एगाया असमिया होइं, समियंति मननमाणाः समिया वा असमिया वा समिया होइं उवेहाणे, असमियंति मननमाणाः समिया वा असमिया वा असमिया होइं उवेहाणे, उवेहाणे

आनुवेहाणे बुया उवेहाणे समियाणे इच्छेवं तत्तं संधी झोसितो भ्रवति, उद्विषसं ठियश्वसं गतिं

समुपासह, एत्थवि बालभावे अप्पाणो नो उवदेसेज्जा।

[१७७] तुमसि नाम सच्चेवं जं हंत्तवं ति मनसि, तुमसि नाम सच्चेवं जं अज्जावेवयं ति

मनसि, तुमसि नाम सच्चेवं जं परितावेवयं ति मनसि, तुमसि नाम सच्चेवं जं परितावेवयं ति

मनसि, तुमसि नाम सच्चेवं जं उवेवयं ति मनसि, अंजू चेव पड़बुद-जीवी तम्भा न हंता न वि

धायणे अप्पुत्तवेयणमापपाणणे जं हंत्तवं ति नाभिमपत्तए ।

[१७८] जे आया से विभण्या जे विभण्या से आया, जे विभाणति से आया, तं पुढङ्च

पदिस्कंहाए एस आयावादी समियाए- परियाए वियहिते, तित्तेबिमि।

पंचमे अज्ज्ञणेन पंचमो उदेसी समत्तो

० छढङो - उदेसी ०
[१७९] अणानाए एवं सोव्वाणात आणाए एवं बिस्वाणाए एवं ते मा होऊ एवं कुसलस्य दंसां तद्विद्धात तयमुदाती तयपुरुककरे तयस्याणात तलनिवेधात।

[१८०] अभिसूद्ध अदक्ष, अणामिय्येत पृथु निराकाराकरे, जे महं अनाहिमण पवारण पवायं ज्ञानेज्ञा सहस्रमक्का परस्मारणान्त अन्वेषी वा अंत्ते सोचा।

[१८१] न्यायेन्त्र नातिनिवेधेज्ञा मेहाती सुपुर्दिलेहिया सत्वतो सत्वपण्य सम्म समादिणायात, इहारांम परिणाय अल्लोयुक्तो आरामो परिलक्ष, निविष्यो वीरे आगामण सदा परक्कमेज्ञासि, लित्येहि

[१८२] उदृढ सोता अहे सोता, तिरियं सोता वियािहाय।

सुयवकळण्डो-१, अज्ज्याणं-५, उदेसो-६।

एते सोया वियव्यायाय, जेहि संगति पास्मा।।

[१८३] आवें टूं उवेहाए एत्य विरमेज्ञ, वेयवी, विणेत्तु सीयं, निक्खम्म एस महं अकुम्मा जाणणति पासति पवित्रहाए नाववान्ति इह आगति गती परिणाय।

[१८४] अवेचङ जाई-मरणसं वहमगं विक्वाय-रए, सत्वे रसा नियवांति तक्का जति न विज्ञाज, महं तत्त्व न गाहिया, औऽ अप्पतिदिणायात खेयन्से, से न दीहे न हस्से न वडे न तंसे न चउरसे न परिमंडळे, न किणे न नीले न लोहे न हाविडे न सुकृतिले, न सुविभिंग्दे न दुर्भिंग्दे, न तित्ते न कुडे न कसाए न अङ्किले न मुहे, न कक्षणे न मऊ न गरूः न लहूः न सीे न उष्णे न सुदरे न लुक्खे न काऊ न घे, न संगे न इत्यें न पुरिसे न अनां्ति, परिणण सणे उवमा न विज्ञाज, अर्की सत्ता, अप्पसा पयं निथ।

[१८५] से न सदे न सवे न गण्डे न रसे न फासे प्रेक्षेवे, लित्येहि।

• पृष्ठम अज्ज्याणं छोड़ो उदेसो समत्तो - पृष्ठम अज्ज्याणं समत्तू
• मुनि दीर्घतस्य संस्थित: सम्प्रदियश चउत्तो अज्ज्याणं समत्तं

छढ़ अज्ज्याणं - ध्युं

• पादमो - उदेसो

[१८६] आड्गुणामणे इह माणामुः आधाग से नरे, जस्मामा जाइौ सववो सुपिड़-लेहियाओ भवति, आधाग से नामन्मधसिंसे, से किंतू तेसि समुदियाण निक्विल्दंदं नामाहियाण नणणमंतरण इह मुरितिमगं एवं एगे महावीरा विप्पत्कमंति, पास्म एगे अवसीयामण अण्तपत्तणं,

[१८७] से बेमि- से जहा वि कुम्मे हरे वितिवित्विति पच्च्छन्नपलासे उममगं से नो लहूः भंजंगा इव सलिवेसे, नो चयंति एवं एगे अनेकसमहं कुलेहि जया सवेहि सत्ता कुलण ध्यंति, लियाणाओ ते न लम्भति मोक्खं, अह पास तेहि- कुलेहि आयलाते जया।

[१८८] गण्डी अदृश कोडी, रावृसी अवमारियं।

कणिं स्लिमिं चेव, कुणिं खूजिं तहा।।

[१८९] उदरि पास मूर्यं च, सूगिङ च गिलसिणि।

वेवई पीसलंपं च, सितिवं महेमंहि।।

[१९०] सोनस एते रोगा, अक्खाया अप्पुवसो।

अह णं कुसंति आयंका, फासा य असमंजसा।।
[१९०] मरणं तेसिं संपेहाए उवायं चयर्यं च नच्छ। परियाणं च संपेहाए। तं सुनेह जहा तहा संति पाणा अंधा तमसिं वियाहिष्य तामेव सईं असईं अतिच चा चृणावभयाते परिसंवेद्यति, बुद्धिं एवं पवेदंति संति पाणा वासगं रसगं उदः उदवचरा आगासगामिनं, पाणा पाणे किलेसंति, पास लोए महङ्ग् य।

[१९१] बहुदुक्धा हु जतवो, सत्ता कामेनु माणवा, अबलेण वहं गच्चति सर्णेण परभुगुरेन, अङ्गे से बहुदुक्खे, इति बाले पंक्खइ, एतो रोगे बहु नच्छा आउरा परितवाणे, नालं पास, अलं तवेआहि, एवं वास मुनी। महङ्ग्यं नातिवाणज्ज कंचान।

सुयक्ष्यो-१, अन्तःयापण-५, उदेसो-१

[१९२] आयाणं भो, सुसूस, भो धूपवांव पवेदइस्सामि, इह खलु अत्तल्लाए तेहिं-तेहिं कुलेहि अभिसेणं अभिसंभूता, अभिसंजाता अभिनिव्वहा अभिसंवुद्दा अभिसंबुद्धा अभिनिक्खंशता अणुपद्वेण।

[१९३] महामुनि! तं परक्कमंतं परिदेवमाणा मा चयर्यं इति ते वदंति, छंदोवणिया अज्ञोवल्ना अक्कंदकारी जणंगं स्वंति। अतारिसे मुनी, नो ओहलंतयं जणं जणं विप्पज्ञा, सुरण तत्थाते नो स्मेलं, किंह नाम से तत्त्वं रम्ति? एवं नाणं सया समामुखविज्ञान्य - तित्वेमि।

छ्ढें अन्तःयापणं पढ़ो। उदेसों समालो

• बीओ - उदेसों

[१९४] आतुरे लोयमाणये चजल्ता पुस्वसंज्ञोंं हिच्छा उवासं वसिता बंधेर्यंसंस वसु वा अनुवसु वा जाणितु धम्मं अहा तहा, अहें समवाइ कुसीला।

[१९५] वत्थं पद्गं बंबंलं पायुपुछं विउशिज्जा, अनुपुद्वेण अणहियामोमाणा परिसहे दुर्हियासए, कामे ममायमाणसस्त्र इयणं वा मुहुत्त्वण वा अपरिमाणने भेदं, एवं से अंतराइहं कामेहं आकेवलिएहं, अविलिणं चेर।

[१९६] अहेंगे धम्ममादाय आयाणप्पिक्सु पण्हिहए चेरं अप्पोसीमोमाण दते सवं गेहं परिणाय, एस पणं महामुनि अहताच्यं सवत्तो संगं, न महं अस्थित्तं इति एगो अहं, अस्सिं जयमाणं एतथं विरतं अनगारे सवशों मुंडे रोयंजं ते अवेने परिवुसितं संचिक्षतं ऑमोएरयाणे, से अकुंडे वा हन वा लूसिए वा पलियं पणंचे अदुवा पागंचे अतेहंहं सद-फासिएं, इति संखंगं एगंते अतन्यंरे अभिनाय तितिक्षमाणं परिव्वं, जे य हिरी जे य अहिरीमाण।

[१९७] चिच्छा सवं विसोलित्वं फासे समियंदेंगसं, एते भो नगिना बुलं जे लोगसं अनामगनध्म्मं आणं मामंगं धम्मं, एस उत्तरार्यं इह माणंवाणं वियाहिते, एतेथेरं तं ज्ञोमाणं आयाणिङ्ज तरंयाणं परियाणं विगिधं, इहमेकंगि एगवरिया हौंति तत्ठियाइरिःहं कुलेहं सुद्रसंमाण सववेसंणं से मेहायी परिव्वं सुविं अदुवा दुभिं, अदुवा तथा भेरवा पाणा पाणे किलेसंति, ते फासे पुडो धीरो अहियासेज्ञासं। - तित बेमि।

छ्ढें अन्तःयापणं बीओ उदेसों समालो

• तजओं - उदेसों

[१९८] एवं खु मुनी आयाणं सया सुअक्ष्याधम्मं विपमुलं पने निज्ञोबसंक्तं जे अवेने परिवुसितं तस्सं निक्कूस्सं नो एवं भवं परिज्ञुंशं से वत्थं वत्थं जाइसामि सुतं जाइसामं सूं
जाक्र्श्यांति संधिसामि सीवैव्यामि उक्कसिसामि वोक्कसिसामि परहिसामि पाउणिसामि, अदुवा तत्थ परक्कमंतं भूज्जो अथवें तणावसा पुस्ताति सीयासा पुस्ताति तेउफसा पुस्ताति दंसमसगफसा पुस्ताति एवगये अन्नयरे विखरवेव फासे अहियासति अथवे लायव आगममाणे तवे से अभिसमन्नागए भवति जहें भगवता पवेंदित तमेव अभिसमेच्या सवत्तो सववत्ताप संमतमेव समबिजाणिणया, एवं तेसिं महावीराण चिरराइ पुवावाई वासाणगर रीमायणऽण दवयाण पास अहियासिं ।

[१९६] आगमपणणाणण किसा बाहो भवति पयणुए य मंससोणिण विस्सेणि कठु परिणाए, एस तिणण मृते विरे वियाहिण, तितबिम ।

[२००] विरिं भिक्खु रीयंत चिरासासिंण अतीत तत्थ किं विधारए ? संघमाणे समुहिणे, सुकुमि धेंधो-१, अज्ञायण-६, उदेसो-३

जहा से दीवे असंदीणे एवं से धम्मे आयरिय-पदेसिणे ते अणवक्कर्मणा पाणे अणतिवामणा जड़या मेहाविणो पंडितया, एवं तेसिं भगवो अणुवाणे जहा से दियापोए एवं ते सिस्सा दिसाय य राओ य अनु-पुच्छ वाइय - तितबिम ।

छे् आज्ञायण चउद्वो उदेसो समातो

○ पंचमी - उदेसो ○

[२००] एवं ते सिस्सा दिसाय य राओ य अनुपुच्छ वाइय तेइह महाविरेिह पणणणामंतेिह, तेसिमंतिए पणणणामुनतंिभ हिच्चा उदसव ससंसि अभाजाति वसितता बंधियरंसि आणं तं नो तित मलनमाणा, अग्रवं तु सोच्या निसम्म समण्णणा जीविस्सामो, एगे निक्खंते असंभंता विडंज्ञामणां कामेहि गिद्दा अज्ञोवित्ता समामिलाभायमत झोसंतंता सत्थारेव फसं वदति ।

[२०१] सीलमंता उपवसंता संखेय रीमायणा, असीला अनुवायणा विठिया मंदवस वालया

[२०३] नियमाणा वेगे आयर-गोयराइक्षति, नाणभाग दंसणवृषिणो ।

[२०४] नममाणा वेगे जीवितं विपरणामंति, पुळा वेगे नियंति जीवियर्सेव कारणां, निक्खंतं पि तेसि दुःनिक्खंतं भवति, बालवणिज्जा हु ते नरा रुणो-रुणो जाति पक्कप्ति, अहे संभंता विद्यायणा अहसंसीति विउक्कसे उदसाने फसं वदति, पल्यं पगंथे अदुवा फगंथे अतिहेि, तं वा महावी जाणिज्जा धम्मं ।

[२०५] अहमडीती तुमसंिन नाम बाले आसंदीती अनुवायणे हणमाणे धायमाणे हणाओ यावि समणोज्ञामणां, घोिरे घम्ये, उदोरे उदवहळ्ळ ां अणणाए, एस विसणे वित्रे वियाहिणे, तितबिम ।

[२०६] किमनेन भो जणणि करिसामाति मलनमाणा- एवं एगे वड़ल्ला माेरे पितरे हिच्छा नातोि य परिग्रहं वीरायणणा समुहाए अविहिसा सुवधा दंता, अहेिगे पास दीणे उपवष ख्यवमणां, वसळा कायिा जना लूसवणा भवति, अहमेगेंसि सिसिए पावण भवइं, से समणे भवति विभेिं विभेिं पाससेिगे समम्नणागणि सहअसमन्नागए नममाणििह अननमाणे विरिंहि अविरिे दवविएि अदविएि, अभिसमेच्या पंडित मेहावी निन्दियेि बीिे आगमेण सया परक्कमेजासि, तितबिम ।

छे् आज्ञायण चउद्वो उदेसो समातो

○ पंचमी - उदेसो ○

[२०६] से गीहीसु वा गिहंतरेसु वा गामेसु वा गामंतरेसु वा नगरेसु वा गर्गंतरेसु वा जनवेऐु वा जनवंतरेसु वा गामनयंतरेसु वा गामनजन्यंतरेसु वा नगरजन्यंतरेसु वा संतेगड़या जना लूसगा
व्यवस्था अद्वैता अद्वैता के तीनों अहिंसाकोश, ओए समिल्योक्षण, दस्य लोपस्त जाणिता वार्ता पाइन्द्र वर्षीय अद्वैता 

जे खलु संपलो बद्धमामग्ने आहरणेकसे हेकसे ध्यामकाल्सिनप्नें खेला कान ध्यामकाल्सिनप्नें खेला कान पुरी 'समासज वेतय पुरिसे ? कं वा नै ? से उष्ट्रिमु वा अनुद्विमु वा सुपुस्सोमाणभु पवेदि-सति विरिटि उवसम निवाणं सोयत्यं अज्जिएवं महत्त्यावं लाभिति। अण्डविज्ञित सत्येविं भाष्यां सिद्धेविं जीवां सर्वेविं सत्यां अनुविज्ञित भक्त्वध्यामकाल्सिनप्नें।

[208] अनुविज्ञित भक्त्वध्यामकाल्सिनप्नें। नो अत्यां आसाएग्ना वो परं आसाएग्ना नो अन्नाइ पाण्ड भूयाहु अत्यां सत्यां आसाएग्ना, से अनायार अनायारामाणे वज्ञामाणे भाष्यां सुपुस्सों-१, अज्ञायां-६, उद्देस्-५ 

जीवाणू सत्यां जहा से दीवे असंदीयने एवं से भविज्ञ सरण महामानी, एवं से उष्ट्र ठीपणा अनिन्दा अयते 

[209] कायास्व विण्याव एस संगमासीए विण्याविए से हु पाण्डे मुनी अवि हम्मायणे 

छहे अज्ञायां पंचमो उद्देसो-समाभतो 

मुनि दीपरत्नसागरेण संशोधितः संपादितश्र छहे अज्ञायां समतत 

० सत्यामृ अज्ञायां - विवेन्नं ० 

अभ्याम्यामरण - विवेक्को 

० पदमो - उद्देसो ० 

[210] से वेधमिमाणन्यास्तो असमस्माणस्तो असातो र वानो नाच व कामो बारणुप्रभु बारणुप्रभु न आयामाणे, लितिमै वि 

[211] धुवूं यें जापेज्ञा - असातो र वानो नाच व कामो बारणुप्रभु बारणुप्रभु न आयामाणे, लितिमै वि 

[212] इहमेसि आयार-गोय मो न सुनिसते व्यवस्था ते इह आर्मेद्वी अनुविज्ञायणा हम्माना

[32] दीपरत्नसागरेण संशोधितः
[२१३] से जहां भगवान पवित्रता आसुपण्नेन्द्र जाने या पसी अदुपा गुलती वागोग्यरस, तितबेमी। संवत्य संमंंग पांव तमेव उवाककम मां सहं विवेक वियोहिते, गामे वा अदुपा रणने नेव गामे नेव रणने धम्ममायणं- पवित्रतिर माहणेन महम्मनया, जामा तितित उदाहिता जेसु इमे आर्यिरा संगुनज्ञमाणा समुद्रिया, जे निरुपया पवित्रहूं कममेही अनियमणा ते वियोहिता।

[२१४] उड़त अह तिरां दिसानु सवत्तो सवाविता चौ पाडियकक जीविज्ञि कम्मसमारम्मणं तं परिनय मेहावी नेव संय एतेहि कारेही दंड समारभेज्जा नेवस्नेही एतेहि कारेही दंड समारभेज्जा नेवस्नेही एतेहि कारेही दंड समारभेज्ज्यं ते समपुज्ज्यं, जेवने एतेहि कारेही दंड समारभंति तेसि पि वयं लज्जामो, तं परिनय मेहावी तं वा दंड अनन्त वा दंड नो दंडभी दंड समारभेज्ज्यं - तितबेमी।

आइंसे अज्ञायणं...उड़सों उड़सों ससमत्तो

सुपक्षंध्य-१, अज्ञायणं-८, उड़सों-२

॰ बीओ – उड़सों ॰

[२१५] से भिक्खू परकमेज्जा वा चिंदेज्जा वा निनीएज्जा वा तुयठेज्जा वा सुसाणि वा सुण्डगंरसं वा गिरिगुहसं वा स्वभूमलसं वा कुंभायंतरणसं वा नरत्था वा कहिचि विहरमणं तं भिक्खुं उवसंकमितुं गहावती बुध्या आसंतो समणं। अहं खलु तव अढ़ाए असंत वा पानं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पदिगंहं वा कंबंलं वा पायपुन्नं वा पाणं मूहां जीवां सत्तां समारभ समुद्धिसं कींं पामिच्च अचेष्टं अनिचं अभिज्ञं आहूं चेतेमी आवसंहं वा समुस्सिंगं हे भेजजह वसह आउसंतो समणं। भिक्खूं तं गहावतिसं समणं वन्यं पदियाइङ्के-आउसंतो। गहावती नो खलु ते वयं आहामि नो खलु ते वयं परिज्ञामि जो तुम्म मम अढ़ाए असंत वा पानं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पदिगंहं वा कंबंलं वा पायपुन्नं वा पाणं मूहां जीवां सत्तां समारभ समुद्धिसं कींं पामिच्च अचेष्टं अनिचं अभिज्ञं आहूं चेपरं हेपसं हेपसं हेपसं हेपसं हेपसं हेपसं हेपसं हेपसं हेपसं वा समुस्सिंगं, वे विरतो आउसो गहावती। एयसं अकरणं।

[२१६] से भिक्खू परकमेज्जा वा [चिंदेज्जा वा निनीएज्जा वा तुयठेज्जा वा सुसाणि वा जाव हुरत्था वा कहिचि विहरमणं तं भिक्खुं उवसंकमितुं गहावती आयग्याणए पेहाए असंत वा पानं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पदिगंहं वा कंबंलं वा पायपुन्नं वा जाव चेपरं आवसंहं वा समुस्सिंगंति तं भिक्खूं परिघाः, तं च भिक्खु जाणेज्जा- सहसंडगंयाए परवायणं अन्नंसं वा अंतित सोच्चा अयं खलु गहावाइं मम अढ़ाए असंत वा पानं वा आवसंहं वा समुस्सिंगं, तं च भिक्खू पदिलेहाए आगमेत्ता आणेज्जा अनासेवणए, तितबेमी।

[२१७] भिक्खूं च खलु पुढा वा अघुल्र वा जे इमे औहच्छ संयु फुस्संति से एंता हङण खणह छिद्घ दहापह आहुपं विलुप्त सहसाकारेह विपरुङ्गुसह, ते फासे धीरे पुढा अहियसंह अदुपा आयार- गोयरमाइक्के तिक्किया नमण्येंसं अदुपा विक्कुलीए अनुपवेण सम्म पदिलेहाए आयत्तुले बुद्धहि एयं पवित्रं।

[२१८] से समपुज्ज्यं असमपणुन्नसं असंत वा पानं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पदिगंहं वा कंबंलं वा पायपुन्नं वा नो पाएज्जा नो निमंतेज्जा नो कुज्जा वेयावियं परं आद्यमणं, ति बेमी।

[दीपरत्नसागर संस्थोिलतः] [२३] [१-आयारो]
[२१९] धम्ममायानह पवेदियं माहेण्य मतिमया समणुण्ये समणुण्यास्स असनं ता जाव कुज्जा वेयावधियं परं आडायमाने - लितबेमि ।

अड्डेम अज्ञायणे बीि उदेसो समत्तो

० तड़ो - उदेसो ०

[२२०] मज्ज्ञमेंण वयस्व वि एगे संबुज्ञमाण समुहिता, सोच्चा मेहावी पन्धियाण निसामिया समिःमे धम्मे आरिहिं पवेदिते, ते अनवक्कमाण अनितीवाणमाण अपरिमाणमाण नौ परिग्नावंती सवावंती च एं लोगोसे निन्दा दंड पाणीहं पाण कम्मं अकुलमाण एस महं अंगे वियाहिहए अो जुतिमस्स खेयणे उवावं चवणं च नच्चा ।

[२२१] आहारोवच्चा देहा परिसह-पभंगुरा पासिने सविविनिरं हंतेगियामाणोहं ।

सुयकंब्दो-१, अज्ञायण-८, उदेसो-३

[२२२] ओए दं दयाए, जे सनिन्हाण-सत्यस्स खेयणे, से बिक्षु कलाणे बलणे मायणे खङणे विन्यणे समयणे परिग्नह अममाणमाण कालेनुजाई अविणणे दुओ छेत्ता नियाइ ।

[२२३] तं बिक्षु सोक्ष्फा-परिवेशमाणगयं उवसेरक्कमित्तु सवाहावी बुढ़ा- आउसंतो समण! नॉ खलु ते गामध्मा उवाहित्? आउसंतो सवाहावी! नॉ खलु मम गामध्मा उवाहित्, सीयकांस च नॉ खलु अं संवात्तमिह अहियासित्तए नॉ खलु मे कप्तपि अग्निकां उजजालेलए वा पजजालेलए वा कायं आयावेलए वा पयावेतए वा अन्वेनिः वा वयणायो, सिया स एवं वदत्तस परो अग्निकां उजजालेलता परजजालेलता कायं आयावेजळ वा पयावेजळ वा तं च बिक्षु पविलेहाए आगमेलता आणवेजळ अनासेवणाए - लितबेमि ।

अड्डेम अज्ञायणे तड़ो - उदेसो ०

[२२४] जे बिक्षु तिहि वत्येहि परिवुसिले पायचाँडैःहि तस्स णो एवं भवति- चउत्थं वत्यं जाइसांमि, से अहेसगळाई वत्याई जाएजा अहापरिमाणहियाई वत्याई धारेजा नॉ धोएजा नॉ राज्जा नॉ घोय-रताई वत्याई धारेजा अपरिउनमाण गामतेसुओ ओमोच्चेच एवं खु वत्यधारीस साॉर्ग्यं ।

[२२५] अह पुण एवं जाणेजा उदावकं खलु हेमते गिम्मेप भविन्ने अहापरिजुणाई वत्याई परिनवेज्जा अदुरु संतृस्ते अदुरु एकाझरु अदुरु अवेले ।

[२२६] लायवियं आगमाणे तवं से अभिसमान्नए भवति ।

[२२७] जमेमं भवव्या पवेदितं तमेव अभिसमैच्छा सवतो सवत्ताए समतेम समभिजाणिज्जा ।

[२२८] रत्स णं बिक्षुस्स एवं भवति पुड़ो खलु आमसि नालमहामसि सीय-फां अहियासित्तए से वसुमं सव-समजनाग-पणणणं अपणणं केढ अकरणए आउइ हवसिख्ते हुं तं संखं जमेमं विहमाइए, तत्थावि तस्स कालपरियाए से वि तत्थ विवांतकरिए, इच्छेंतं मिमोहायणं हियं सुंि खम्न निस्सेयसं आत्मगामियं - लितबेमि ।

अड्डेम अज्ञायणे चउत्थं उदेसो समत्तो
○ पंचमो - उदेसो ○

[२२९] जे भिक्खू दोहि वर्त्येऽहि परिवसिते पायति एहि तस्स पाण्ये तिवन कत्यं जाइसामिः, से अहेस्वरीर्जाईं वत्माईं जाएजाः जावे एवं खु तस्स भिक्खुस्स सार्थिकमिः अहु पुणे एवं जाएजाः उवाइस्सकं खलु हेमं कस्मे पड़िस्स, अहापरिज्ञुणां वत्माईं परिहेड्याः, अहास्वरीर्जाईं वत्माईं परिहेड्याः, अदुवा संस्तत्सरे, अदुवा ओमचरे अदुवा एगसाडे अदुवा अचेले, लाधविव्य आगममाणे तवे से अभिसमण्णाणे भवति, जमेयं भागवता पवेदिमि तमेव अभिस्मेचच्चा सववतो सवद्वत्ते समतत्मेव समभिज्ञाणीया,

जावे से भिक्खुस्स एवं भवति - पुद्रो अबलो अहंमसि नालमहंसि गिहतस्सकंस्यमि भिक्खायर्यिवां गम्याः, से एवं वदंतत्सस परो अस्सिंह्य असन्य वा पाण्य वा खागर्य वा साइर्य वा आहु दलएजाः से पुवर्मेव आलोएजाः आउस्सतो। गाहावतो नो खलु मे कप्पयं अभिहस्ते असन्य वा पाण्य खागर्ध सुपक्षंधो-१, अंज्ञायनं-८, उदेसो-५

वा साइर्य वा भोताः वा पानेः वा अन्ने वा एववपराः।

[२३०] जावे से भिक्खुस्स अयं प्रणचे अहु च खलु पाप्णतले अप्पदिण्यतेहि गिलाणो अगिलाणे हि अभिवंक्ष साहभमिः हि कीर्माण वेयाव्यां सातितज्जस्सामि अहु वा व खलु अप्पदिण्यतो पप्पदिण्यतस्स अगिलाणे गिलाणा साहभमिः अश्य दुस्सु कुज्ज वेयाव्यां कर्नाश्य आहु पड़े अण्णक्खेसामि आहुं च सातितज्जस्सामि आहु पड़े अण्णक्खेसामि आहुं च नो सातितज्जस्सामि, आहु पड़े नो अण्णक्खेसामि आहुं च सातितज्जस्सामि, आहु पड़े नो अण्णक्खेसामि आहुं च नो सातितज्जस्सामि, एवं से अहाकिदिमेव्य धर्ममि सम्महिज्ञाणाणे संते विरेन्तु सुममहितस्से सत्यावि तस्स कालपरायणे, से तथ्य विअंतिकारे, इच्छेतु विमोहायतं हिंय सुहु खम्म निस्सदयं आनुसमाययं - तित्तबैमि।

अहंमे अज्ञायणे पंचमो उदेसो समत्तो

○ छहो - उदेसो ○

[२३१] जे भिक्खू एगो वत्येऽपिते पायविक्ष्ण तस्स नो एवं भवुक-बिवियं वर्त्यं जाइसामि, से अनेस्सण्णिं वर्त्यं जाएजाः अहापरिमहिं वर्त्यं धारेजाः जावे हेमं कस्मे पड़िस्स, अहापरिज्ञुणां वर्त्यं परिहेड्याः अहापरिज्ञुणां वर्त्यं परिहेड्याः- अदुवा अचेले लाधिव्य आगममाणे जावे समतत्मेव समभिज्ञाणीया।

[२३२] जावे से भिक्खुस्स एगो भवुक- एगो अहंमसि, न मे अध्य कोहि, न याहमवि कस्सइ, एवं से गाणििमवेष्य अप्पाणे सम्मभिज्ञाणीजाः, लाधविव्य आगममाणे तवे से अभिसमण्णाणे भवुक जावे समभिज्ञाणीया।

[२३३] से भिक्खू वा भिक्खुणी वा असन्य वा पाण्य वा खागर्य वा साइर्य वा आहारे माणे नो वामाओ हणुयाओ धार्मिं हणुयं संवारे जाः आसाेमाणे, धार्मिं वाम हणुयाओ वाम हणुयं नो संवारे जाः आसाेमाणे, से अन्नासायमाणे लाधिव्य आगममाणे तवे से अभिसमण्णाणे भवुक, जमेयं भागवता पवेदिमि तमेव अभिस्मेचच्चा सववतो सवद्वत्ते समतत्मेव समभिज्ञाणीया।
[234] जस्स पां भिक्षुस्स एवं भवति- से गिलामि च खलु अहं इमं सम्म समेत इमं सरीरगं अनुपूर्वेन परिवहितलए से आनुपूर्वेण आहारं संबोधिता, आनुपूर्वेन आहारं संबोधिता कसाए पयगुए किच्चा समाहियत्रचे फलगवायद्वी उडाय भिक्षु अभिनिवुड्छे।

[235] अनुपविष्टिता गाम्ब वा नगरं वा खेंड वा कब्र्दं वा मठं वा पह्र्णं वा दोषमूहं वा आग्रं वा आसं वा सन्नवेसं वा निगमं वा रायांणं वा तपाईं जागुणं, तपाईं जागुणं से तमालय से एनात्मवकक्षेत्रे एनात्मवक्षेत्रेपर्यं अपेक्षे अप्प-पणं अप्प-हरीं अपोसे अपोस्दए अपुर्वितंपणग-द्रव महिद्य-माकवंदसंताणा पृतिहिंद-पृतिहिंद पम्मजिन्य-पम्मजिन्य तपाईं तंद्रेज्य तपाईं परंपराते एतं वि समेत इतरियं कुज्जा तं सच्चं सच्चावदी औें तिणं चिृण-कहंकहे आतौते अनातीते चिविच्छणं छेँउं कायं संविहिणिय विश्वसंविहिणणं असं विसंविहिणणं, तत्त्वान्ति तस्स कालपरिया जाव आनुगमिनयं - तिब्बतिम।

अद्वर्षं-अज्ञायणं छेँढा उद्देस्रो समत्तलो

रूप तत्समौ - उद्देस्रो

[236] जे भिक्षु अचेते परिवर्तिते तस्स पां भिक्षुस्स एवं भवति- चाचिमि अहं तपायं अनुपवर्तिते सीयफासं अहियासितल्ये सेक्विंता अहियासितल्ये दंस-मसगफासं अहियासितल्ये एण्टे अन्नते विश्वसङ्ग फारे अहियासितल्ये उपिरिपण्डियादार चांहं नो सिधान्तमि अहियासितल्ये एंसे से कुष्टि क्रिदिबंधन घराईत।

[237] अद्वातं तत्त तर्कक्षिमं भुज्जो अचेतं तपायं अनुपवर्तिते फूसंति सीयफासं फूसंति तेदपासं फूसंति दंस-मसगफासं फूसंति एण्टे अन्नते विश्वसङ्ग फारे अहियासितल्ये अचेते लाभवियं अग्रामानवं तसे से अभिसमन्नगवत जाव समतलमैव समताजिताया।

[238] जस्स पां भिक्षुस्स एवं भवति- अहं च खलु अन्नसं भिक्खूं असं वा पानं वा खाइंं वा साइंं वा आहुं दलियसमाम आहं च नो सातितिस्सामिन, जस्स पां भिक्षुस्स एवं भवति-अहं च खलु अन्नसं भिक्खूं असं वा पानं वा खाइंं वा साइंं वा आहुं दलियसमाम आहं च नो सातितिस्सामिन, जस्स पां भिक्षुस्स एवं भवति-अहं च खलु अन्नसं भिक्खूं असं वा पानं वा खाइंं वा साइंं वा आहुं दलियसमाम आहं च सातितिस्सामिन।

जस्स पां भिक्षुस्स एवं भवति- अहं च खलु अन्नसं भिक्खूं असं वा पानं वा खाइंं वा साइंं वा आहुं दलियसमाम आहं च नो सातितिस्सामिन, अहं च खलु तेन अहाविरलेतनं अन्नसंज्ञेन आहापिरिमहिएं असंणं वा पाणेन वा खाइंं वा साइंं वा अभिकंव सातितिस्साहस्स कुज्जा वेयाविदियं करणाम, अहं वावेतेन अहाविरलेतनं अहापिरिमहिएं अहासंज्ञेन असंणं वा पाणेन वा खाइंं वा साइंं वा अभिकंव सातितिस्साहें किरीमानं वेयाविदियं सातितिस्सामिन लाठिवियं आग्रामानवं जाव समतलमैव समताजिताया।

[239] जस्स पां भिक्षुस्स एवं भवति- से गिलामि च खलु अहं इमं समेत इमं सरीरं अनुपूवेन परिवहितलए से आनुपूवेन आहारं संबोधिता आनुपूवेन आहारं संबोधिता कसाए पयगुए किच्चा समाहितचे फलगवायद्वी उडाय भिक्षु अभिनिवुड्छे अनुपविष्टिता गाम्ब वा जाव रायांणं वा
तणाईं जाएज्जा जाव संथरेत्ता पाथ वि समाम कव च जोंग च इसिय च पचप्चक्षान्जा तं सच्चं सच्चाचारस्वं ओए तिल्ल छल्ल-खंडक्ते आतिल्ले अनातिल्ले चिद्वाण भेऐं कव संवेदंवषिय विश्ववे परिष्ठोवस्मं असं विस्तं भडंता भेरवमनुष्टितं तत्त्विव तस्स कालपरियाणे, से तत्थ विवांतिकाराणे, इवरं विमोहायतं हियं सुणं खमं निर्मसुक्तं आनुगामामिहं," तिल्लेमि।

अस्मे अज्ञायणं सत्तं गुरुसो सभंतं

 추진्धी - उदेसो ॥

[२५०] आनुपुध्वी-विमोहां, जाइ धीरा समासंज्जा
     वसुमंतो मडमंतो, सच्चं नच्छं अनेसिसं।

[२५१] दुःखं च सत्वितंणं, बुढा धम्मसं पारंगा
     अनुपुववीं संख्यां, आरंभां तिउतित।

[२५२] कसेा पयणुए किच्छा, अप्पाहरे तितिक्षुए
     अह भिक्खू गिलाएज्जा, आहारसेव अकंिरय।

सुयवंधी-१, अज्ञायण-८, उदेसो-८

[२५३] जीविस नामिकेर्ज्जा, मरणं नोवत पतर्य।
     दुहुंच वि न सज्जेज्जा, जीविस मरणं तह।।

[२५४] मझात्थे बिज्जरागेही, समाहितंपुपाले।
     अंत्त बहं विउसिज्ज, अज्ञात्तं सुदर्मेके।

[२५५] जं खिंचुवककम् जारे, आउकेमससं अप्पणो
     तस्सेव अंतर्द्रापे, खिंण सिखेकेज्जं पंडित।

[२५६] गगमे वा अदुवा रणो, थंडलं पंडलेहीय।
     अप्पपणं तु विन्नाम, तपाईं संथरं मुह।।

[२५७] अप्पाहरे तुअर्ज्जा, पुढो तत्त्वियास।
     नालिवें उवरे, मापुस्मेहं वि पुहुं।।

[२५८] ससूपण्या ये जे पाण, जे य उक्रमेवरा।
     भुंजंति मंस-सौमियं, न छणे न पमजजाण।।

[२५९] पाणं देंहं विहिसंति, ताण्याो न विउखभे।
     आस्वेहं वितितहं, तिप्पमाणोस्हियास।।

[२५०] गंगेहं वितितहं, आउ-कालससं पारे।
     परंहियातर्गं चोंयं, दविसंस वियाणात।।

[२५१] अयं से अवरे धम्मं, नायपुल्लं साहित।
     आपधवजं पडीयां, विज्जहज्जा तिहा तिह।।

[२५२] हरिषिसु न लिवज्जेज्जा, थंडलं मुष्मिओसए
     विउसिज्ज अप्पाहरे, पुढो तत्त्त्वियास।।

[२५३] इंदिरंहं गिलायंते, सामंयं आहरे मुनी।
     तहारं से अगरिहं, अच्छे जे समाहित।।
[274] अभिक्रमे पड़िके, संकुचए पसारए।
कायसाहारण्डा, एतथ वादवि अचैयणे।

[275] परक्रमे परिकलते, अदुवा चिङ्द्रे अहायते।
ठाणेण परिकलतें, निद्विदे य अंतसो।

[276] आसीणेतेष्टसं मरणः, इंदियणि समीरान।
कोलावसं समासवज्ज, वितं पाउरसान।

[277] जाओ वजझं समुपप्पज्जे, न तत्थ अवलंबान।
ततो उकस्से अप्पणां, सद्य फासे तत्थस्लिप्यासान।

[278] अयं चायततरे सिया, जो एवं अनुपालान।
सववगायनिरोधकेवि, ठाणातो न विउयभमे।

[279] अयं से उत्तमे धम्मे, पुवव्याणास सुगुगहे।
अति पदभेहिल्ला विहे चिङ्द्र माहणे।

सुयवक्षेष्ठे-१, अज्ञायण-८, उदेसो-८

[280] अतिलं तु समासज्ज, ठावए तत्थ अप्पणं।
वोसिरे सववसो कायं, न मे दहे परीसान।

[281] जावज्जीवं परीसान, उवसग्ना य संख्या।
संवुः देहभेयाए, इति पण्णेहिप्याणा।

[282] भैउसुसु न रज्जेज्जा, कामसु बहुतरेसु वि।
इच्छा-लोभं न सेवेज्जा, धुववनं सपेह्यान।

[283] सासेहिं निमंतेज्जा, दिवं मायं न सद्द्य।
ते पड़ुभज्ज माहणे, सववं नूमं विधुपिण्या।

[284] सवव्यंहिं अमुच्छित, आउकलसस पारए।
ततितिकं परमं नच्छा विमोहनतरं हितं।
तित बेमि
अहमे अज्ञायण अहुमी उदेनो समत्तो।

मूनि दीपपतनसागरेण संशोधितं: सम्पादितश्च अहमं अज्ञायणं समत्तं

ॐ नवमं अज्ञायणं -उवाहानसुयं ॐ

पढ्मो- उदेसो ॐ

[285] अहासुन वदिस्त्वा, जहा से समणे भगवं उठाए।
संख्यां तंसि हेंमंते, अहुणा पवव्याए श्रीयथा।

[286] नो कोविमेण क्वट्तेय, फिहिस्त्वामि तंसि हेंमंते।
से पारए आकवहाए, एवं खु अनूधिमियं तस्स।

[287] चत्तति चाेहिम मासे, बहवे पाणा-जाड्या आकर्ण।
अभिक्रमे कायं विहिरिसु, आहस्त्याण तत्थ हिसिसु।

[288] संवछंरं चाेहिम मासे, ज न रिककसि वत्यं भगवं।
अधीले ततो चार्दूं तं वोसंजु वत्थमननगरे ॥

अदु पौरिंसं तिरिंयं भितिं, चक्खुमासंजज अंतसो झायड़ ।
अह चक्खु-भीया संहिया, तं हंता हंता बहवे कंदिसु ॥

सायणों सप्तिमिसंसेंहं, इत्यीो तथौ तथौ परिणय ।
सागारियं न संवेंइ, से सयं पवेंसियां झालति ॥

जे के हमें अगारथा, मीसीहावं पहाय तथै झालति ।
पुढ़ो वि नामिहासिंसु, गच्छति नाइवतत्ता अंजु ॥

तो सुकरमेंतमेरगेसंसि, नामिहासे य अभिवायामणे ।
हयपुवो तथौ दंडिहे, लूसीपवले अप्पपुणींहि ॥

फरसाइं दुतितितिखाईं, अतिअच्च मुनी परकममणे ।
आधार-नहं-गीताइं, दंडजुड़ाइं मुहिजुड़ाइं ॥

गठिए मिहो-कहासु समयमि, नायसुए विसौंगे अदक्खु ।

एताइं से उरालाईं गच्छं, नायपुलें असरणयाय ॥

अवि साहिए दुवे बासे, सीतोंदं अभीच्छा निक्खंते ।
एगत्तगए पिहियच्छे से, अहिणापयंदसं षंते ॥

पुढविं च आउकांयं, तेवकांयं च वाउकांयं च ।
पणगाइं बीय-हरियाँइं, तसकांयं च सववसो नच्छा ॥

एयाईं संति पडवेहे, चित्तमंताईं से अभिनाय ।
पिरविज्ञया न विहिरतिया, इति संखाय से महावीरें ॥

अदु थायरा तसत्ताएं, तसजीवा य शावरुताएं ।
अदु सववजोणिया संता, कम्मुणा कपिया पुढ़ो बाला ॥

भगवं च एवं मन्नेसं, सोवहिए हु लुपपती बाले ।
कयमं च सववसो नच्छा तं, पिरविकाँखे पावगं भगवं ॥

दुविंहं सिमिच मेहावीं, किरियमक्खायङ्लेतिसं नाणी ।
आयण-सोयमतिवाय-सोंयं, जोगं च सववसो नच्छा ॥

अइवलियं अनाउं, सवमन्नेसं अपरणयाय ।
जसीतियों परिणया, सववमकम्माहाओ से अदक्खु ॥

आहकां न से संवें, सववसो कम्मुणा य अदक्खु ।
जं किचि पावगं भगवं, तं अकुल्यं वियंदं भुजित्या ॥

नो सेवं य परवतं, परपाए वि से न भुजित्या ।
पिरविज्ञया ओमाणे, गच्छति संखिडि आसरणाय ॥

माणणे असन-पानसं, नाणुगिङ्गः रसेयु अपरिणणे ।
अदिचिन्पि नो पमिज्ञया, नोवि य कंडूयेये मुनी गायं ॥

अपं तिरिंयं पेहाएं, अपं चिह्नों उपेहाएं ॥
अपने बुद्धसिद्धान्त, पंथपेदी चरे जयमाने

[२८६] सिसीरूस सिरिक्ष्वन्ने, तं वोसज्ज वत्थ्मनगारे
पसारितः बाहुं परकमें, नो अवलंबित्यान कंधसि

[२८७] एस विही अणुकृंतो, माहणण महःभया
अपडितणण वीरेण, कास्वेन महेसिणा - तित्वे

नवमे अज्ञान्येण पद्मी उद्देशो सममितो

० बीओ - उद्देशो ०

[२८८] चरियासणाठौ सेजजायी, एगतियाहो जाओ बुढ़याहो
अढ़ख कोई सयाणायी, अई सेविच्छा ने महावीरो

[२८९] आंभ्वण-सभ्य-पवायसु, पणेयासालाय एगादा वासो
अदुवा पलियाञ्जणोसु, पलाळुणजसु एगादा वासो

[२९०] आंगंतारे आरामागारे, तह य नगरे वि एगादा वासो

सुयक्ष्येको-९, अज्ञान्येण-९ उद्देशो-२

सुयणे सुन्नगारे वा, रक्षिक्षाले व एगादा वासो

[२९१] एतेहि मुनी सयणेहि, समणेऽ आसी पतेसर वासे
राइ दिवं वि जयमाने, अप्पमत्ते समाहितेझा ति

[२९२] नतं वि नो पगामाए, सेवि भगवं उदाए
जग्गावती य अप्पाण्, ईसी साई व अपडितने

[२९३] संजुज्ञामणे पुनरवि, आसिसु भगवं उदाए
निक्षिप्त एगादा राओ, बहं चंकिताय मुहुलांगा

[२९४] सयणेहि तत्तुणवणागा, भीमा आसी अनेकवाया य
संस्तग्नाय जे पाणा, अदुवा जे पक्षिणो उवचरंति

[२९५] अदु कुचरा उवचरंति, गामरक्खा य सत्तिहत्या य
अदु गामिन्य उवस्मागा, इत्थी एगतिया पुरिसा य

[२९६] इहलोडयाईं परलोडयाईं, भीमाईं अनेकऽवाइं
अवि सुध्भि-दुध्भि-गंधाईं, सदाईं अनेकऽवाइं

[२९७] अहियासए सया समिते, फासाईं विस्वज्ञाइं
अरइं रईं अभिभूय, रीयं माहणें अहुवाइं

[२९८] स जणेहि तत्य परिकुंतसु, एगादा वि एगादा राओ
अवाहित कसाइयः पेमाणे, समाहि अपडितणे

[२९९] अयमंतरिंसि को पत्य ? अहमसिति मिक्षु आहुद्व
अयम्मत्ते से धम्मे, तुसिणीए स कसाइय ज्ञाति

[३००] उकरेपेदी पवेचति, सिसीरे मारण पवायते
तसिद्वें परगारा हिमवाय निवायमसिति

[३०१] संघाडिओ पवितिससामो, एहा य समादहमाणा
पिहिया व सक्खामो अतिदुक्खं हिमग-संकासा ॥
[302] तंसि भगवं अपहिण्यं, अहं वियदे अहियासए दविए ।
निक्खम्म एगदा राओ, चाएं भगवं समियाए ॥
[303] एस विही अपुकंको, माहोण मईभया ।
अपहिण्यं वीरेण, कास्वेण महेस्विणा - तित्रेमि ॥

नवं ्*अज्ञ्ययं, बीओ उदेसो समत्तो ॥
[304] तण्फासो सीयाफास य, तेउफास य दंस-मसगे य ।
अहियासए सया समिए, फासाइ विङ्कुवाइ ॥
[305] एह दुचचर-लादघमारी, वजजभूमि च सुबभूमि च ।
पंत सेजं सेवंसु, आसणगणि चेवं पंताइं ॥
[306] लाढेह तसुवोसगगा, बहवे जाणवया लूसिसु ।

सुश्वकंथो-१, अज्ञ्ययं-२ उदेसो-३

अह लहेरदसिण भते, कुकुरा तत्थ हिःसिणु निविदितं ॥
[306] अपे जने निखारें, लूसण दणे दसमाणे ।
छुबुकारति अहसु समण, कुकुरा इसंतुति ॥
[308] एलिकुकं जना भूजो, बहवे वजजभूमि फसासी ।
लि ह्गराह नासीयं, समणः तत्थ एव वहिरखि ॥
[309] एवं पि तत्थ विहरंता, पुड़पुव्वा अहेसि सुणाएः ।
संसुंचमाण सुणाएः, दुच्चराण तत्थ लादेह्क ॥
[310] नियाय घं दाणेह, तं काय वासजमानगरी ।
अह गामकंतए भगवं, ते अहियासए अभिसमेच्चा ॥
[311] नामें संगमाससेस वा, पारए तत्थ से महावीरे ।
एवं पि तत्थ लादेह, अल्पपुव्वो वि एणया गामो ॥
[312] उबसंकंतपूपदिण्ण, गामितं वि अप्पतं ।
पड़ेकिखमिलु लूसिसु एरतो पयं पलेहिति ॥
[313] हयपुव्वो तत्थ दंडेण, अदुवा मुहिण्णा अदु कुंकलणे ।
अदु तेलुण कवलणे, हता हता बहवे कंदिसु ॥
[314] मसाणि दब्बलपुव्वव्र, अहेंभिया एणया कार्यं ।
परीसहाइ लुप्घिसु, अहवा पंसुणा उवकिंसु ॥
[315] उच्चावत्व निहितिसु, अदुवा आसणाओ खलिसु ।
वोइकाण पणयाससेः, दुक्खसहे भगवं अपहिण्ये ॥
[316] सूरे संगमाससेस वा, संवेदः तत्थ से महावीरे ।
पड़ेसमाणे फसाईं, अचले भगवं रीठाया ॥
[317] एस विही अपुकंको, माहोण मईभया ।
अपित्थ एगया भगवं, अद्वमांसं अदुवा मासं पि ॥
[318] अवि साहित् दुवे मासे, छष्पि मासे अदुवा अपित्तता
रायोवयं अपिणणेन, अन्नगिलायमेगया भुजेण ॥
[319] छढ़ेण एगया भुजेण, अदुवा अहमेन दसमेण
दुवानसमेण एगया भुजेण, पेहमाणे समाहिं अपिणणेण ॥
[320] नच्चा णं से महावीरे नोढ़िव य पावं रसमकासी
अन्नहिं वा न कारित्था, कीर्तं पि नाणुपाणित्या ॥
[321] गामं पविसे नयं वा, घासमेरे कड़ परद्वाणे
सुविसुद्धेशिया भगवं, आयत-जोगयाें संवित्या ॥
[322] अदु वायसा दिगिंणित्ता जेअन्ने रससिणों सत्ता
घासेस्वाणे चिंतें सयं, बिवित्तें य पेहाए ॥
[323] अदु माहणं व समवं वा गामपिडोलं च अतिहि वा
सीवाकमुसिवारे वा कुक्कुरं, वाविव विं ठिं चूरं वुरतो ॥
[324] वितितीछयं वज्जंतोऽ, तेस्यपप्पत्यं परिहंतो
मंदं परकमे भगवं, अहिष्माणो घासमेसित्या ॥
[325] अवि सूडयं वा सुक्कं वा, सीपिंड पुरुणकुमासं
अदु बुक्कसं पुलाणा वा, लद्दे पिंडे अलुद्व दवितए ॥
[326] अवि ज्ञाति से महावीरे, आस्यथे अककूकु ज्ञान ।
उद्द्व अहे तिरियं च, पेहमाणे समाहिपपिणेण ॥
[327] अकसाई विगयेगोहि य सदस्वेसुस्मुचिछ ज्ञाति
छुमत्त्येविव परकममाणे नो, पमांरं सइं पि कुवित्या ॥
[328] सुमसेव अभिसमागु, आयतजोगमासोहीए ॥

[32] [दीपरत्नसागर संशोधितः] [32] [१-आयारी]
अभिनिववुड़े अमाइल्ले आवकहं भगवं समिआसी ॥

[३३४] एस विही आजुककंतो, माहणें मईमया ॥
अपडेणे वीरेणः कासवेण महेसिणा, त्तिबेमी ॥

नवमे अज्ञायणे चउत्त्यो उदेसो समत्तो
मुनि दीपरत्नसागरेण संशोधितः सम्पादितश्च नवम अज्ञायण समत्सं

0 पठमो सुयक्षंधो समत्तो 0
नमो नमो निम्मलदंसणस्स
0 बीओ सुयक्षणो 0

पढ़न्य अज्ज्यण्य - पंडेसणा
0 पढ़न्य - उद्देसो 0

[335] से भिखू वा भिक्षुणी वा गाहावङ्कुलं पंडवाय-पडियाए अनुपविष्टे समापे सेषजं पुणं जाणेज्जाअ असनं वा पानं वा खाउं वा साइं वा पाणेिं वा पणावि वा बिईं वा हिरिं वा संसतं उम्मिन्सं सीओएण वा ओसितं रघणं वा परिखणयं तहयण्यं असं वा पानं वा खाँतं वा साइं वा परहत्यंसि वा परस्यांसि वा अफासुं अनेसणिज्जाति मन्नमाणे लाखेसि वि संते नो पहिगाहेज्जाप।

से य आह्वच पडिगाहिणि सिया से तं आयय एण्टमक्कमेज्जाए एण्टमक्कमेज्जाता- अहे आरांमसिः वा अहे उवस्यसिः वा अप्ये अप्यापणे अय्य-बीए अप्य-हिरिणे अप्यरे अप्युंद्रए अप्युंद्रिग-पणत्र-दग्ध्य-मक्कडांतान्य विभिन्न-विभिन्न पुण्यत्र विसंहिणि-विसंहिणि तारं संजयामेव बुंजेज्जावा पीएज्जावा, जं च नो संचांज्जास भूतल्लावा पायए वा से तमायय एण्टमक्कमेज्जाए एण्टमक्कमेज्जाता- अहे झामःथोडिलसि का अड्डासिः वा किंडा-रासिः वा तुस्ता-रासिः वा गोमय-रासिः वा अन्नांतरसि वा तहयण्यांरसि थोडिंलसि पंडितेहिय-पंडितेहिय फमजिज्य-फमजिज्य तारं संजयामेव परइरेज्जाप।

[336] से भिखू वा भिक्षुणी वा गाहावङ्कुलं पंडवाय-पडियाए अनुपविष्टे समापे सेषजायो पुणं ओसहीो जाणेज्जाकंसिण्याओ सासिण्याओ अविलंकडाओ अतिरिच्छिण्यनाओ अन्वाचिण्यनाओ तनणििं वा छिवाडि अनमिक्कांलाभजिज्यं पेहाए अफासुं अनेसणिज्जाति मन्नमाणे लाखे संते नो पहिगाहेज्जाप।

से भिखू वा जाव पविदे समापे से जाओ पुणं ओसहीो जाणेज्जाअ अकसिणाओ असाँसियाओ विलंकडाओ तिरिच्छिण्यनाओ वुण्यििंनाओ तनणििं वा छिवाडि अभिक्कां भजिज्यं पेहाए अफासुं एसणििंज्जति मन्नमाणे लाखे संते पहिगाहेज्जाप।

[337] से भिखू वा भिक्षुणी वा गाहावङ्क जाव पविदे समापे सेषजं पुणं जाणेज्जावा- पिहुंयं वा बहुतं वा भजिज्यं वा मंधुं वा चाँउं वा चाँउ-पलंबं वा सइ भजिज्यं अफासुं अनेसणिज्जाति मन्नमाणे लाखे संते नो पहिगाहेज्जाप।

[338] से भिखू वा भिक्षुणी वा गाहावङ्कुलं जाव समापे सेषजं पुणं जाणेज्जापिहुंयं वा जाव चाँउं वा चाँउ-पलंबं वा असइ भजिज्यं दुकुठातं वा भजिज्यं तिकुठातं वा भजिज्यं फासुं एसणिज्जाय जाव पहिगाहेज्जाः

से भिखू वा भिक्षुणी वा गाहावङ्कुलं [पंडवाय-पडियाएः] पवितुतकमे नो अन्नउत्थिण्य वा गार्थिण्य वा परिहारो अघिरारिण्य वा संधिं गाहावङ्कुलं पंडवाय-पडियाएः पवितुत्सेज्जावा वा निक्खमेज्जावा।

से भिखू वा भिक्षुणी वा बहिया वियारभूमि वा विहारभूमि वा लिक्ष्ममाणे वा पविसमाणे वा नो अन्नउत्थिण्य वा गार्थिण्य वा परिहारो अघिरारिण्य वा संधिं बहिया वियार-
भूमि वा विहार-भूमि वा निक्षेपज्ज वा पविसेज्ज वा ।
से भिक्खु वा भिक्षुणी वा गामागुणाम दूरन्तज्ञाने नो अनन्त-उपथीएण वा गार्थित्यिण वा परिहारिणो अपरिहारिण वा सदृश्य गामागुणाम दूरन्तविज्ञान ।

[339] से भिक्खु वा भिक्षुणी वा [गाहावड़-कुलं पंडितवाय-पदियाए अनुपविवेकु] समापे नो अनन्ततिथ्यिण वा गार्थित्यिण वा परिहारिणो अपरिहारिणस वा असंन वा पान वा खाइम वा साइम वा देज्ज वा अनुपदज्ज वा ।

[340] से भिक्खु वा भिक्षुणी वा जाव समापे सेज्ज पुन जाणेज्ज-असंन वा पान वा खाइम वा साइम वा असिंपदियाए एंग साहिमिण्य समुदित्रिस्स पाणाइ भूयाङ जीवाङ सत्ताङ समारभ समुदित्रिस्स कीं पारिच्छ अप्चक्त अनिसयं अभिहृं आहू चेळड़ं त्त तहप्पाङ असंन वा पान वा खाइम वा साइम वा पुरिपस्तकरं वा अपरिसस्तकरं वा बिहिया नीहों वा अनीहों वा अल्टिफ्यं वा अनल्टिफ्यं वा परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा आसेव्यं वा आनासेव्यं वा अफसुस्यं जाव नो पदित्हाहेज्ज ।

ev बत्ते साहिमिण्य, एंग साहिमिण्य, बह्वे साहिमिण्यो समुदित्रिस्स चत्तारी आलावगा भाणियत्व।

[341] से भिक्खु वा भिक्षुणी जाव पविव्य समापे सेज्ज पुन जाणेज्ज-असंन वा पान वा खाइम वा साइम वा बह्वे समाण-माहाण-अतिहि-किक्रण-वणीमए पगणित-पगणिय समुदित्रिस्स पाणाइ वा भूयाङ वा जीवाङ वा सत्ताङ वा समारभ समुदित्रिस्स जाव नो पदित्हाहेज्ज ।

[342] से भिक्खु वा भिक्षुणी वा जाव पविव्य समापे सेज्ज पुन जाणेज्ज - असंन वा पान वा खाइम वा साइम वा बह्वे समाण-माहाण-अतिहि-किक्रण-वणीमए समुदित्रिस्स जाव चेळड़ं त्त तहप्पाङ असंन वा पान वा खाइम वा साइम वा अपरिसस्तकरं अबिहिया नीहों अनल्टिफ्यं अपरिभुत्तं अनासेव्यं- अफसुस्यं अनासेव्यं ति मन्ननामै लामे तंते नो पदित्हाहेज्ज, अह पुन अं जाणेज्ज-पुरिसस्तकरं बिहिया नीहद्ध अल्टिफ्यं परिभुत्तं आसेव्यं - फाश्य एसण्जं ति मन्ननामै लामे तंते पदित्हाहेज्ज ।

[343] से भिक्खु वा भिक्षुणी वा गाहावड़-कुलं पंडितवाय-पदियाए पविसितुक्मे से जाई पुन कुलाङ जाणेज्ज-इम्सु खलु कुलेसु नितिए पिंडे दिज्जळ नितिए अग्र-पिंडे दिज्जळ नितिए भाण दिज्जळ नितिए अवव्यभाण दिज्जळ तहप्पाङ कुलाङ नितियाङ नितिमाणाङ नो भृताण वा पाणाए वा पविसेज्ज वा निक्षेपज्ज वा एंग खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्षुणीस वा सामग्यं जं सच्च्येहिं समिए सहिए सया जाए, लिम्बेर।

बेटे सुखकंधे पढ़े अज्जयणे पढ़ीभू उद्दैत समात्तो
॰ बीओ - उद्दैत॰

[344] से भिक्खु वा भिक्षुणी वा गाहावड़-कुलं पंडितवाय-पदियाए अनुपविवेकु समापे सेज्ज पुन जाणेज्ज-असंन वा पान वा खाइम वा साइम वा आहिमिपोसहिसुं वा अद्वामासिएसु वा मासिएसु वा दोमासिएसु वा तिमासिएसु वा चामासिएसु वा घमासिएसु वा उस्सु वा उस्संधिसु वा उउपरियडेसु वा बह्वे समाण-माहाण-अतिहि-किक्रण-वणीमेंगे एगो उखाहो परिआयज्ज-माणे पेहाए तोहिं उखाहिं परिआयज्जमाणे पेहाए तिंहिं उखाहिं परिआयज्जमाणे पेहाए चउहिं उखाहिं
परिसिद्धज्ञाने पेहेड़ कुंभीमुआ वा कलोवाइड वा सन्निहि संनिचियाओ वा परिसिद्धज्ञाने पेहेड़ तह्पणगारं असनं वा पानं वा खािमं वा साइमं वा अपुरिसंतरक्क जाय अनासेवितं अफासुं अनेसणिजं जाय पदिगाहेज़ा।

अह पुणं एवं जाणेज्या-पुरिसंतरक्क बहिया नीहंद अतत्स्थं परिभूलं आसेविं-कासुं एसणिजं ति मननमाणे लाभं संते पदिगाहेज़ा।

[341] से भिक्कू वा जाव समाणे से जातं पुणं कुलाई जाणेज्या, तं जहा-उगव-कुलाणि वा भोग-कुलाणि वा राइण्य-कुलाणि वा खतित्य-कुलाणि वा इक्कहाग-कुलाणि वा हरिवंस-कुलाणि वा एसिय-कुलाणि वा वेरिय-कुलाणि वा गंगाग-कुलाणि वा कोठाग-कुलाणि वा गामरक्क-कुलाणि वा बोककासलियकुलाणि वा अन्यप्रस्तुतं वा तह्पणगारेदु कुलेसु अदुंहितेसु अग्निहितं असनं वा पानं वा खािमं वा साइमं वा फासुं एसणिजं जाय पदिगाहेज़ा।

[342] से भिक्कू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पिंडियाए अपुपुविणं समाणे से जातं पुणं जाणेज्या- असनं वा पानं वा खािमं वा साइमं वा समवापसु वा पिंड-निघेरेसु वा इंद-महेरु वा खंदमहेरु वा उदम-महेरु वा मुरुंद-महेरु वा भूय-महेरु वा जाक्ख-महेरु वा नाग-महेरु वा भूष-महेरु वा चेतिय-महेरु वा रुख-महेरु वा गिरि-महेरु वा दर-महेरु वा अगड-महेरु वा ताग-महेरु वा दह-महेरु वा नई-महेरु वा सर-महेरु वा सागर-महेरु वा अगड-महेरु वा-अन्यप्रस्तुतं वा तह्पणगारेदु विवक्षेतु।

महमहेरु वाहमाणेदु बहवं समाण-माहण-अतिरिति-किकिन-पणिमाए एगो उक्षाओ परिसिद्धज्ञाने पेहेड़ दोहं जाय सन्निहि-संनिचियाओ वा परिसिद्धज्ञाने पेहेड़-तह्पणगारं असनं वा पानं वा खािमं वा साइमं वा अपुरिसंतरक्क जाय नो पदिगाहेज़ा, अह पुणं एवं जाणेज्या - दिनं जं तेसं दायवं,

अह ततथ्भुज्ञाने पेहेड़-गाहावइ-भारियं वा गाहावइ-भगिनि वा गाहावइ-पुत्रं वा गाहावइ-धूयं वा सुणं वा धाईं वा दारं वा दासं वा कम्मकं वा कम्मकरं वा से पुववाभेव आलाएणज-आउसिति वा भगिनि तित वा दाहिस्ते मे एततो अनन्यं भोयणजायं, से तेसं वदंस्तंस परो असनं वा पानं वा खािमं वा साइमं वा आहुदु तलाणज-तह्पणगारं असनं वा पानं वा खािमं वा साइमं वा सतं वा आजेजा परो ता से देच्जा फासुं एसणिजं ति मननमाणे लाभं संते पदिगाहेज़ा।

[343] से भिक्कू वा भिक्खुणी वा परं अद्वैयाण-भेरा संक्षिण्यं नत्ता संक्षिण-पिंडियाए नो अभिसंधारेज्या गम्याए, से भिक्कू वा भिक्खुणी वा - पारिणं संखिण्यं नत्ता पदीणं गच्छे अनादायमाणे पदीणं संखिण्यं नत्ता पारिणं गच्छे अनादायमाणे, दाहिणं संखिण्यं नत्ता उद्रीणं गच्छे अनादायमाणे उद्रीणं संखिण्यं नत्ता दाहिणं गच्छे अनादायमाणे, जत्थेय सा संखिण्यं सिया तं जहा-गांभिः वा नगरसं वा वसेंसं वा कलवसं वा मथंबसं वा पहुण्यंसं वा दोणमुनितसं वा आगरसं वा निगमंसं वा आसमंसं वा सन्नित्वेंसंसं वा रायहणिःसं वा- संखिण्यं संखिण-पिंडियाणेनो अभिसंधारेज्या गम्याए,

केवली बौद्र आयणंमें- संखिण्यं संखिण-पिंडियाए अभिसंधारेमाणे आहक्रममियं वा उद्रेसिमं वा मैसाजाणं वा कीयंगं वा पामिचं वा अरछेज्यं वा अनिसिंहं वा अभिहं वा आहुदु दिज्ञाणेन भुजेज्या, असंजय भिक्कू-पिंडियाए खुद्डयिदुवरायायो महल्लियायो कुज्जा महल्लिय दुवारियायो खुढ्डियायो कुज्जा, समादो सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा, विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुज्जा, पवायाओ
सिज्जाओं निवायाओं कुज्जा, निवायाओं सिज्जाओं पवायाओं कुज्जा, अंतो वा बफ़ि है वा उवससयसस हरियाणि छिद्रय-छिद्रय दातीय-दातीय संयथारं संग्रेनज़ा।

एस खलु भगवया सेजज्जा अक्षेत्र, तम्भा से संजें नियंड़े तह्पपगां पुऱे-संख्दि वा पच्छा-संख्दि वा संख्दि संख्दि पियाया नो अभिसांधारेजजा गमणा, एय खलु तस्स भट्टकुस्स भट्टकुस्स वा सामग्रियं जं सत्वहेंह्दः समिल सहए सया जए- दित्वमें।

पपस्स अज्जरयणे बीओ उद्रेसो समालो

**तड़ओ - उद्रेसो**

[348] से एगइओ अन्नतं संखंधि असलिता पिबिता छड़ड़क्ज्जा वा वमेज्जा वा भूलते वा से नो सम्म परिणामेज्जा अन्नतरे वा से दुरंधै रोयात्कं समुप्रज्ज्ज्ज्, केवली भूझा आयाममें।

[349] इह खलु भिक्खु गाहवड़ह्दि वा गाहवड़ह्दि वा परिवायएह्दि वा परिवायएह्दि वा एगज्ज झँड़ि सोङ्झ पाऊ बो वित्तमिस्स हुत्तह्दि वा उवससयं पियलेह्माणो नो लमेज्जा तमेव उवससयं समसिस्स भाक्कमाज्ज्ज्जा अन्नमलने वा से मतले विपरियासिस्ब्धूए इतिविगरह्दि वा किलोबे वा तं भिक्खु उवसकमितलं बुझा आउसतो समणा अहेआरामसंि वा अहेउवससयं वा राओ वा वियस्वे वा गामध्मम- नियंतिंग कढ़ु रहसिंग मेहणध्मम-पियरयारणाए आउझामो, तं चेवगईओ सातुज्जज्जा अक्करिणज्जं चेयं संख्यं एते आयाणा सत्ती संविंज्ज्मा न्या पच्छाया भवति, तम्भा से संजें नियंठे तह्पपगां पुऱे-संख्दि वा पच्छा-संख्दि वा संख्दि संख्दि-पियाया नो अभिसांधारेजजा गमणा।

[350] से भिक्खु वा भिक्कुयणी वा अन्नयं संख्दि सोच्चा निसम्म संपहाव्र उस्पुय-भूषणं अम्पणेणं धूवा संख्दि, नो संचाएँ तत्त्व इत्तरंह्दि कुलेह्दि सामुदाणिंयं एसिमं सेसिमं पियवं पियगहिलता आहारं आहारतए, माइड़णं संफासे, नो एवं करेज्जा, से तत्त्व कालेण अनुपविसिलता तथिकतरंह्दि कुलेह्दि सामुदाणिंयं एसिमं सेसिमं पियवं पियगहिलता आहारं आहारेज्जा।

[351] से भिक्खु वा भिक्कुयणी वा सेज्जं पुऱ जानेज्ज-गाम्ज्जा वा जाव रायाहणि वा इमसि खलु गामसि वा जाव रायाहणिसि वा संख्दि सिया तं चि य गाम्ज्जा वा जाव रायाहणि वा संख्दि- पियाया नो अभिसांधारेजजा गमणा, केवली भूझा आयाममें, आइणा\textsuperscript{8}माणं संख्दि अनुपविसमाणस पाणए वा पाणए अक्कण पुऱं भव्हं हत्तणं वा हत्तणं सचानिपुढ़े भव्हं पाणए वा पाणए आविष्करित भव्हं सीसि वा सीसे संपहिपुढ़े भव्हं काणए वा काणं संख्दिपुढ़े भव्हं दंड़ं वा अड़िणं वा मुहिणं वा लेनुणं वा कवालेण वा अभिपुढ़े भव्हं, सीहोदणं वा अभिपुढ़े भव्हं रसायं वा परिणधी-पुढ़े भव्हं अनेनिणं वा परिकुन्तपुढ़े भव्हं अनेनिणं वा दित्तमाणं पियगहिलपुढ़े भव्हं- तम्भा से संजें निगणघे तह्पपगां आइणा\textsuperscript{8}माणं संख्दि संख्दि-पियाया नो अभिसांधारेजजा गमणा।

[352] से भिक्खु वा भिक्कुयणी वा गाहवड़-कुसं पियवं-पियाया अनुपविधे समाणे सेज्जं पुऱ जानेज्जा असं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा एसिज्जे सिया अनेनिणं वा वित्तिंछ समावणेणं अपणाणं असमाहाड़ा ले्स सां पर्यगां असं वा जाव लाभे संते नो पियगहीजजा।

[353] से भिक्खु वा भिक्कुयणी वा गाहवड़-कुसं पियवं-पियाया पवित्रितकामे सवं बर्त्रगमाया गाहवड़-कुसं पियवं-पियाया पवित्रसेजज् वा निक्कमेज्जा ज्जा, से भिक्खु वा भिक्कुयणी वा सुयक्षंघी-२, अज्जरयणे-१ उद्रेसो-३
बहिया विहार-भूमि वा वियार-भूमि वा निक्खमाणे वा पवित्रमाणे वा सत्त भंगामायाए बहिया विहार-भूमि वा वियारभूमि वा निक्खमेज वा पवित्रेज वा, से भिक्खु वा भिक्खुणी वा गामाणुगाम्र दूजज-माणे सत्त भंगामायाए गामाणुगाम्र दूजजेज्ज र।

[३७५] से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अह पुण एवं जाणेज्जा- तिव्वदेसियं वां संसारमाणे पेहाए तिव्वदेसियं वा महियं संचयमाणी पेहाए महावाणे वा रंग समुद्रं पेहाए तिरिरिचं संपादामा वा तसा-पाणा संथानासंचयमाणी पेहाए, से एंव नंशा नो सत्त भंगामायाए गाहाव-कुलं पिंडवाय-पिड़याए पवित्रेज वा निक्खमेज वा बहिया विहार-भूमि वा वियार-भूमि वा पवित्रेज वा निक्खमेज वा गामाणुगाम्र वा दूजजेज्ज र।

[३७६] से भिक्खु वा भिक्खुणी वा गाहाव-कुलं पिंडवाय-पिड़याए अनुपविक्षी संभाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा- वैश्वानियं वा मचछदियं वा मंरत्माणे वा मचछलं वा मचछलं वा आहेणं वा पहेणं वा हिंगोलं वा संमेतवं वा दहरसं पेहाए अंतर्सं से मरणा बुढपणा बुढबिया बुढहिया बुढोसा बुढुदया बुढुतिंग पणण-दग-महियं-मक्कडागसंताणणा बहे तथ समण-माणेय-अतिचिकित्वं वणीमणा उवागं उवागमिस्तंती तत्तथाधिकालिनी नो पणणस्स निक्खमणपवेसाए नो पणणस्स वाणण-पुचछ-परियंगणणुपचह-धमणुगच्छिताए, से एंव नंचा तापणरातु पुरे-संखिं वा पचछ-संखिं वा संखिं वंड-पिड़याए नो अभिसंधारेज्ज गमणाए।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा गाहाव-कुलं पिंडवाय-पिड़याए अनुपविक्षी संभाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा मंसादियं वा मचछदियं वा जाव हिंरमणं पेहाए अंतरसं से मरणा अपणा पणा जाव संताणणा नो तत्थ बहे समण-माणेय जाव उवागमिस्तंती अपणणालिनी निक्खमण-पवेसाए निक्खमण वाणण-पुचछ-परियंगणणुपचह-धमणुगच्छिताए, सेव नंचा तापणरातु पुरे-संखिं वा पचछ-संखिं वा संखिं वंड-पिड़याए अभिसंधारेज्ज गमणाए।

[३७७] से भिक्खु वा भिक्खुणी वा गाहाव-कुलं [पिंडवाय-पिड़याए] पविसितुकामे सेज्जं पुण जाणेज्जा- खैरिणियाऽ गावी खैरिजमाणीो पेहाए असं वा पणा वा खाइं वा साइं वा उससंखिंजमाणे पेहाए पुरा अपजहिए सेव नंचा नो गाहाव-कुलं पिंडवाय-पिड़याए निक्खमेज वा पविसेज्ज वा, से तापणे एगजमाकवमेज एगजमाकवमेज अनाथायमसंतो चिदोज्जा, अह पुण एवं जाणेज्जा- खैरिणियाऽ गावी खैरिणियाऽ पेहाए असं वा पणा वा खाइं वा साइं वा उसक्रियं पेहाए पुरा जूहिए से एवं नंचा ताहो संखिजमागे गाहाव-कुलं पिंडवाय-पिड़याए निक्खमेज वा पविसेज्ज वा।

[३७८] भिक्खाग नामनम् एवमाहुं- संभाणे वा वस्माणे वा गामाणुगाम्र दूजज-माणे- सुक्कंख्यो-२, अज्ञायणं-१ उद्देसो-४
युद्धाएं खलु अय गामे संजिनुझाए नो महाले से हंटा भयंतारो बाहिरगत्य नामाणि भिक्षायरियाए 
वयः, संती तत्वेढायस्त्र भिक्षुभस्त्र पुरु-संयुक्ता वा पच्छा-संयुक्ता वा परिवस्तिते, पं जहा- गाहावि का 
गाहाविणाओं वा गाहावि-लुक्ता वा गाहावि-धूयाओं वा गाहावि-सुष्याओं वा धाइयो वा दासा वा दासीय वा 
क्रमकरा वा क्रमकरकोई वा, तह्य्यागाराई कुलाई पुरे-संयुक्ताणि वा पच्छा-संयुक्ताणि वा पुवामेव 
भिक्षायरियाए अनुपविस्त्सामि,
अथि व इत्य लभिस्तानि- पिंड्य वा लोप्य वा खीरि वा दढ्यि वा नवनीयि वा घयं वा गुलं वा 
तेलं वा महुं वा भर्त्य वा संस्कृि वा फाणिय वा पूण वा धिरिणि वा, तं पुवामेव भोच्चा 
पेच्चा पिंड्यागहिं संतिथि संमहिजय तत्तो पच्छा भिक्षुहि सिद्धि गाहावि कुलं पिंड्याय-पिंड्याय 
पविस्त्सामि निक्षमिस्त्सामि वा माइयाणि संफासिे, तं नो एवं करे ज्ञा, से तत्थ भिक्षुहि सिद्धि काले 
अनुपविस्त्ति तत्त्तिथितेहि कुलेहि सामुदायिहि असिि वैसिि पिंड्यायं पिंडागहेति आहारं आहारे ज्ञा, 
एं खलु तस्क्षुभस्त्र वा भिक्षुणीए वा सांभिग्यि [जं सद्वड्हि समिए सहिए सया जाे - लितिििि]
।

पढ़िमि अज्ञायणि- पुत्थो उद्देसि सम्मति

○ पंचमि से उद्देसि 0

[३७९] से भिक्खु वा जाव पिंड्ये समाणि सेज्न्य पुण जाणेज्ञा- अग्रपिंड उक्षिध्यपमाणि 
पेहाए अग्रपिंड निक्षिध्यपमाणि पेहाए अग्रपिंड हीरमाणि पेहाए अग्रपिंड परिभायज्ञमाणि पेहाए अग्रपिंड 
परिभायज्ञमाणि पेहाए अग्र-पिंडि परिभायज्ञमाणि पेहाए पुण असििणि वा अवहारि वा पुण जड्यतयं समाणि- 
माहणि-अतिधि-किविणि वणीमाग खद्द-खद्द उवसंकमति- से हंटा अहमिवि खद्द उवसंकमामि, माइयाणि 
संफासिे, नो एवं करे ज्ञा ।

[३६०] से भिक्खू वा जाव पिंड्ये समाणि- अन्तरा से वप्पाणि वा फलिहाणि वा पागाराणि वा 
तोऽरणि वा अतिधाणि वा अगर-पासायणि वा-सध परक्कभे संज्यामेव परस्त्यक्माज्ञा, नो उज्जयुं 
गच्छे ज्ञा, केवलि बृहा आयामेय- से तत्थ परक्कभामि पवलेज्ञ वा पक्खलेज्ञ वा पवरे्डे ज्ञा व से 
तत्थ पयलमाणि वा पक्खलमाणि वा पवढ्यामाणि वा पत्थ तैिे वा पयचारणि वा पसायणि वा खेलणि वा 
सिद्धाणि वा बत्रे वा पित्रणि वा पूण वा सुक्केण वा सोणेण वा उवलितेण सिया, तह्य्यागारां तामि 
नो अनतरहियाए पुष्टीी नो ससिणिद्हे पुष्टीी नो ससिणकाम खद्दी नो चित्मंत्तानि सिलाए नो 
चित्मंत्तानि लेलुए कोलाकासंसि वा दासिे जीविधिे सञ्चिे स्पणाभ जाव ससितं साणि नो आमज्ञे ज्ञा वा 
नो पमज्ञे ज्ञा वा सिलिहज्ञा वा नो निलिहज्ञा वा नो उवलेज्ञ वा नो उवरेज्ञ वा नो आयावेज्ञ वा 
नो पयावेज्ञ ज्ञा, से पुवामेव अपससरक्षक त्यं वा पत्त वा कतं वा सककरं वा जाज्ञा, जायल्ता से 
तानाए एगतमवक्कम्बज्ञा एगतमवक्कम्बति अहें ज्ञामथिलिसि वा जाव अनवयरसि वा तह्य्यागारसि 
थंडिलंसि पिंडिधीय-पिंडिधीय पम्ज्ञि-पम्ज्ञि तामि संज्यामेव आमज्ञे ज्ञा वा जाव पयावेज्ञ वा ।

[३६१] से भिक्खू वा [भिक्खुणी वा गाहावि-कुलं पिंडिवाय-पिंडिवाय अपुविव्ही] समाणि सेज्न्य 
पुण जाणेज्ञा- गोपं वियालं पिंडिप्ये पेहाए भद्रिसं वियालं पिंडिप्ये पेहाए, एवं मणुसं आसं जद्यि 
सीह वधि विगं प्रीविं अच्छे तरछे पिरिर्य सियालं वियालं सुमि कोलसुण्यं कोकतिय चित्तचित्लि- 
वियालं पिंडिप्ये पेहाए सह परक्कभे संज्यामेव परस्त्यक्माज्ञा, नो उज्जयुं गच्छे ज्ञा,

से भिक्खू वा जाव समाणि-अन्तरा से ओवाओ वा खाणि वा कंटेन वा घसिे वा भिलुगा वा
विसमे वा विज्ञे वा परियाभजेज, सति परक्कमे संज्ञामेव, परक्कमेज नो उण्जयुं गच्छेजाः।

[362] से भिक्खू व भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलसस दुवार-बाहि कंडक-बौंदियं भरिषिहं रे ते संया पुवामेव उगमं अणुण्यविय अपद्विहं अपमूहिज नो अवंगुणिज वा पविसेज वा निक्खमेज वा ते संया पुवामेव उगमं अणुण्यविय पदिलहं अपमूहिज-पमजिज तत्रो संज्ञामेव अवंगुणिज वा पविसेज वा निक्खमेज वा।

[363] से भिक्खू व जाव समाणे सेजं पुण जाणेज- समणं वा माहणं वा गामिललं वा अतिहं वा पुवविपिं रे नो ते संया सपिदुवारे चिठ्ठेज [प०-केवली बृजा आयामेयं-पुरा रे तस्दा परो असं वा पान वा जाडं वा साइं वा आहु दत्तरेज, अह भिक्खूं पुवविदिह एस फुज्झं एस दारुणं एस उवासो जो ते संया सपिदुवारे चिठ्ठेजा] से तपायाए एगतनवक्खमेज एगतनवक्खमेतता अनावायसलोए चिठ्ठेजा, से से रो अनावायसलोए चिल्लमाणस ससं वा पान वा जाडं वा साइं वा आहु दत्तरेज, से य एवं देजन- आउसंतो समण' इतमे ई असणं वा पाणे वा जाडं वा साइं वा सवजनाणे निसं तं भुजं वा ं परिभाए वा ङं, तं चेंढंगो प्रिदगाहतता तुस्तिणो उवेजेज, अवियां एं यं मम मेव सिंया, माढ्शण ररसं, नो एवं करेज, से तपायाए तत्त गच्छेज तत्त गच्छेतता से पुवामेव आलोजेजः।

आउसंतो समणं इतमे ई असं वा पान वा जाडं वा साइं वा सवजनाणे निसं तं भुजं वा ं परिभाए वा ङं, सेजंवेंवं वंदं परो वर्जन- आउसंतो समणं, तुमं चेंढं ं परिभाएत, से तत्त परिभाएमा नो अपणं खंब खंब डायय-डायं उसं-उसं रसिं-रसिं मणुणं-मणुणं निदरं-निदरं लुक्खं लुक्खं से तत्त अमूचिहं अगिदे अगिदे अपणं सहमेव परिभाएत, से ङं परिभाएमा परो वर्जन- आउसंतो समणं। मा ं तुमं परिभाएति सवे वेगालता दिया ु भोखामो वा, पाहामो वा से तत्त भुज्माणे नो अपणं खंब खंब डायय-डायं उसं-उसं रसिं मणुणं मणुणं निदरं निदरं लुक्खं लुक्खं से तत्त अमूचिहं जाव बहुसमेव भूजेजं वा पीएजं वा।

[364] से भिक्खू व भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिन्दवाय-पित्ताय अनुपविद्भं] समाणे सेजं पुण जाणेजज-समणं वा माहणं वा गाम-पिन्दलं वा अतिहं वा पुवविपिं रे नो द उवायक्कम पविसेज वा ओभासेज वा, से तपायाए एगतनवक्खमेज एगतनवक्खमेतता अनावायं चिठ्ठेजा अह पुगों जाणेजज- पविसेजनं वा दिल्लं वा, तामं नियंतंतं तपायाज संज्ञामेव पविसेज वा ओभासेज वा एं सामणं जाव रज्ज जाव-नित्तं।

पदमें अणुवंचाणे पंचमो उद्देसी समत्तो

त्यो चडो–उद्देसी

[365] से भिक्खू व जाव समाणे सेजं पुण जाणेजज- रसंसिणी बहवे पाण घासेरावें संत्रे सलिनबयं रे तं जहां- कुकुड-जाईं वा सुपर-जाईं वा अगंपिंसि वा वासं संत्रा सलिनबयं रे सड परक्कमेव संज्ञामेव परक्कमेज नो उण्जयुं गच्छेज्र।

[366] से भिक्खू व जाव समाणे-नो गाहावइ-कुलसस वा दुवार-साहं अबलविय-अवलविय चिठ्ठेजा, नो गाहावइ-कुलसस दगचछड्डणमत्ता चिठ्ठेजा, नो गाहावइ-कुलसस शंधनिउयए चिठ्ठेजा,
नो गाहावड़-कुळस्स सिंगाेणस्स वा वच्चस्स वा संलोे सप्तिदुवारेचिंडेज्या, नो गाहावड़-कुळस्स आलों वा धिगरगंि वा संधि वा दग्ग-भव्य वा बाहाओ पंगित्तच्य-पंगित्तच्य अंगंिलयाए वा उदित्सिय-उदित्सिय अवनिम्य-अवनिम्य उन्नतिम्य-उन्नतिम्य निज्जाएज्या, नो गाहावड़ अंगंिलयाए उदित्सिय-उदित्सिय जाएज्या, नो गाहावड़ अंगंिलयाए चालिय-चालिय जाएज्या, नो गाहावड़ अंगंिलयाए तज्जन्य-तज्जन्य जाएज्या, नो गाहावड़ अंगंिलयाए उकलुपिय-उकलुपिय जाएज्या, नो गाहावड़ बंदिय-बंदिय जाएज्या, नो चेव वं फसं वाज्या।

[365] अह तत्थ कंचि भुज्जमाण वेहाए तं जहा- गाहावड़ वा जाव कम्मकर्र वा से पुञ्चमेव आलोएज्या आउसो लिता वा भड़िणि लिता वा दाहिसि भेव भोध्याणियायं अभा अन्नय भोणाणियायं भा से से संगीतास्स परो हत्या वा मल्लं वा दण्डी वा भायव्य वा सीओडम-विय्येड्य वा उसिणोडम-विय्येड्य वा उच्छोल्लेज्या वा पहोएज्या वा, से पुञ्चमेव आलोएज्या-आउसो लिता वा भड़िणि लिता वा, मा एय तुमं हत्या वा मल्लं वा दण्डी वा भायव्य वा सीओडम-विय्येड्य वा उसिणोडम-विय्येड्य वा उच्छोल्लेज्या वा पहोएज्या वा अभिकंकसि भेव दाँ एवमेव दल्लाहाए से से संगीतास्स परो हत्या वा मल्लं वा दण्डी वा भायव्य वा सीओडम-विय्येड्य वा उसिणोडम-विय्येड्य वा उच्छोल्लेज्या आहु दलाएज्या, तह्वप्पगारङे पुरंकसकरण हत्येण वा मल्लेण वा दवती वा भायव्य वा असंस वा पाण वा खाइयं वा साइयं वा अफासयं [अन्नसस्कहं ति मन्नमाण लाभे संते] नो पडिगाहेज्या।

अह पुणं वा जानेज्या- नो पुरुसिकसकरण जाव उदाल्लेन्य तह्वप्पगारङे वा उदाल्लेन्य हत्येण वा जाव भायणे वा असंस वा जाव साइयं वा अफासयं जाव नो पडिगाहेज्या।

अह पुणं वा जानेज्या- नो उदाल्लेन्य ससिणसिण तें से चेव, एवं ससरक्के उदाल्लेन्य, ससिणेम्ह महियाउँ उसे। हरियाले दंगळुए, मनोसिला अंजणे लोणे। मेल वल्निय सेड्य सोरल्लिय पिंकुकुकुस उकुकुकु आस्तेन्य। अह पुणं वा जानेज्या नो असंसीं संसाइं तह्वप्पगारङे संस्क्रेण हत्येण वा जाव भायणे वा असंस वा जाव साइयं वा अफासयं जाव पडिगाहेज्या।

[368] से भिक्खू वा जाव समाणे से ऊँच पुणं जानेज्या-पिढयं वा बुढयं वा [भजियं वा मंघुं वा चाउलं वा] चाउलपलंब वा अस्त्यज्य भिक्खु-पियड़याए चित्तमंत्याए सिलाए जाव सालणाए कोहेसु वा कोहेसित वा कोहिसस्तित वा उपकिण्यु वा उपकिण्यि वा उपकिण्यस्तित वा तह्वप्पगारङे पिुङ्ग वा जाव चाउलपलंब वा-अफासुयं [अन्नसस्कहं ति मन्नमाण लाभे संते] नो पडिगाहेज्या।

[369] से भिक्खू वा जाव समाणे से ऊँच जानेज्या-बिलं वा लोण उदित्सिय वा लोण अस्त्यज्य भिक्खु-पियड़याए चित्तमंत्याए सिलाए चित्तमंत्याए लेंजुए कोलावंससि वा दात्रे जीवपिदं दआर्ये सांदेस समाणे संबी दहिए सुसे सउआं सउटिंग-पणण-दग्ग-महिय-मक्कड़ संताणाए भिदेसु वा भिदंति वा भिदिसस्ति वा रुचिसु वा रुचिहि वा रुचिसस्ति वा-बिलं वा लोण उदित्सिय वा लोण-अफासुयं जाव लाभे लंटे नो पडिगाहेज्या।

[370] से भिक्खू वा जाव समाणे सेंजज पुणं जानेज्या- असंस वा पाण वा खाइयं वा साइयं वा अगिनिनिखं तह्वप्पगारङे असंस वा पाण वा खाइयं वा साइयं वा अफासयं [अन्नसस्कहं ति मन्नमाण] लाभे संते नो पडिगाहेज्या केलवी बूंच आयाणामें, अस्त्यज्य भिक्खु-पियड़याए उसिंचस्माणे वा
भिक्कुण गुप्तविलिङ्ग एस पड़णा एस हें एस कारण एस उत्तमाण्स ज्ञान पातिर्स अस्तक ज्ञान अस्तक अनुभव असरण्य अनुसःण ति मननामण लाभे संते नो पिड़गासेज्जा एवं खचु तस्य भिक्कुणस वा भिक्कुणीए वा सामजिक रूपान्वित।

पदमें अवज्ञायन छझो उदेसी समततो ।

[३७१] से भिक्कु वा [भिक्कुणी वा गाहावड़-कुलं पिंदविल-पिंदविलए अणुपविल|] समायें सेज्जं पुण जाणेज्जा- असं वा पाणुं वा खाइंग वा साइंग वा संधयस्त वा ध्यंस्त वा मलस्त वा पासांस्त वा ह्यंस्तपत्तस्त वा अन्ययस्त वा तहपंगारस्त अंतलखर्जायस्त उनमिन्दकलतें सियां- तहपंगार मालोंड असं वा पाणुं वा खाइंग वा साइंग वा अफसुंग [अनेसणिज्जं ति मननामण लाभे संते] नो पिड़गासेज्जा केवली बुद्ध आयणामयें-अससंज्जए भिक्कु-पिंदविलए पीठ वा फलंग वा निस्सेणिय वा उद्घाह वा अवहुं ऊस्स्विय दुरुश्चेष्ट ।

से तत् दुरुंभाण पपलेज्जा वा पवेडज्जा वा से तत् पपलमाण वा पपवंमाण वा हर्तं वा पांवं वा बहुं वा उंवं वा उदरं वा सेसं वा अन्त्यं वा कायसं इत्यां-जालं लूसेज्जा वा पाणाणिः वा भरुणाणिः वा जीवाणिः वा सत्ताणिः वा अतिभरुणेज्जा वा वितेज्जा वा लेसेज्जा वा संधेसेज्जा वा संधियमेज्जा वा परियावेज्जा वा मलामेज्जा वा याणं तणं संकामेज्जा वा तं तहपंगार मालोंड असं वा जाव लाभे संते नो पिड़गासेज्जा ।

से भिक्कु वा जाव समापे सेज्जं पुण जाणेज्जा-असं वा पाणुं वा खाइंग वा साइंग वा कोदियाओ वा कोदोज्जा वा अससंज्जए भिक्कु-पिंदविलए उषुक्षर्ज्जय अवज्ञाय आहु दलएज्जा-तहपंगार असं वा मालोंड ति नत्यां लाभे संते नो पिड़गासेज्जा ।

[३७२] से भिक्कु वा जाव समापे से ज्जं जाणेज्जा- असं वा पाणुं वा खाइंग वा साइंग वा महाओलित-तहपंगार असं वा जाव लाभे संते नो पिड़गासेज्जा केवली बुद्ध आयणामयें-अससंज्जए भिक्कु-पिंदविलए महाओलित असं वा जाव उढब्बेदमाण पुड्डविकाय समारम्भेज्जा तह तेत-वाप-फाँसिग्य- तसकाण्य समारम्भेज्जा, पुणर्वो आलिंपमाण पछ्चिमक्षमं करेज्जा, अह भिक्कूण गुप्तविलिङ्ग [एस पड्डणा एस हें एस कारण एस उद्घारो] जं तहपंगार महाओलित असं वा लाभे संते नो पिड़गासेज्जा ।

से भिक्कु वा भिक्कुणी वा जाव समापे सेज्जं पुण जाणेज्जा-असं वा पाणुं वा खाइंग वा साइंग वा पुड्डविकाय-पिंदविलं-तहपंगार असं वा जाव-अफसुंग जाव नो पिड़गासेज्जा ।

से भिक्कु वा भिक्कुणी वा जाव समापे सेज्जं पुण जाणेज्जा-असं वा पाणुं वा खाइंग वा साइंग वा आउकाय-पिंदविलं-तहपंगार असं वा जाव- अफसुंग अनेसणिज्जं ति मननामण लाभे संते नो पिड़गासेज्जा ।

से भिक्कु वा भिक्कुणी वा गाहावड़-कुलं पिंदविल-पिंदविलए अणुपविलः समायें सेज्जं पुण जाणेज्जा असं वा पाणुं वा खाइंग वा साइंग वा आलखर्जय-पिंदविलए लाभे संते नो पिड़गासेज्जा केवली बुद्ध आयणामयें- अससंज्जए भिक्कु-पिंदविलए अगल आक्षिक निस्सक्षिक औरहिर आहु
दलएज्जा अह भिक्षुणि पुजीवादितम [एस पड़णे एस हेऊ एस कारण एसउवरू जं तह्पागार असन वा 
जाव अगनिकार-पढ़ियाए अफानुमं जाव नो पढ़िगाहेज्जा।
सूयकंक्षण-२, अज्ज्यायण-१ उद्देसी-६

[३७३] से भिक्षू वा भिक्षुणी वा जाव समान एसंज़ पुण्य जाणेज्जा- असन वा पान वा 
खाइम वा साइम वा अस्ससंज़ भिक्षु-पाद्याे अफानुमं वा तालियंग वा 
पत्तेः

वा साहावा वा साहा-भंगेन वा पिरुणेन वा पिरुण-हत्येन वा चेलेन वा चेलबनेन वा 
हत्येन वा मूहेन वा फूमेज्ज वा वीएज्ज वा, से पुल्मावेय आलोएज्ज आउसो तित वा 
भिनित तित वा मा 
एय नुमं असन वा पान वा खाइम वा साइम वा अस्ससंज़ भुपेन वा जाव मूहेन वा फूमाहि वा 
वीयहि वा अस्सिनखिंि से दां एमेव दलायीहि। से सेवं कंदतस्स परो सूणेन वा 
फुमिता वा वीइता वा आहु 
दलएज्जा-तह्पागार असन वा जाव अफानुयां वा जाव नो पढ़िगाहेज्जा।

[३७४] से भिक्षू वा भिक्षुणी वा जाव से जं पुण्य जाणेज्जा-असन वा पान वा खाइम वा 
साइम वा वणसाइकपढ़ियं-तह्पागार असन वा जाव लामे संतो नो पढ़िगाहेज्जा।

[३७४] से भिक्षू वा भिक्षुणी वा गाहावड-कुं ग िंडवाि-पाद्याे अणुपविवेक समाने सेज़ पुण्य 
जाणेज्जा-असन वा पान वा खाइम वा साइम वा तसकाय पढ़ियं-तह्पागार असन वा जाव 
तसकाय 
पढ़ियं अफानुयां अनेसणिज्ज ति मननमाने लाने संतो नो पढ़िगाहेज्जा।

[३७५] से भिक्षू वा भिक्षुणी वा जाव सेज़ पुण्य पानग-जायं जाणेज्जा, तं जाह-उससें दम 
वा संसें दम वा चाउलोदंग वा अनवरं वा तह्पागार पानग-जायं अहुणा-धोयं अणंनिन्त अवोकांि 
अपरिणं अविरल्- अफानुयां अनेसणिज्ज ति मननमाने लाने संतो नो पढ़िगाहेज्जा, अहु पुण ए 
जाणेज्जा-चिरोषण्यं अंविन वुक्कं परिणणं विद्वगं फसयां [एसणिज्ज ति मननमाने लाने संतो] 
पढ़िगाहेज्जा।

से भिक्षू वा भिक्षुणी वा समाने सेज़ पुण्य पानग-जायं जाणेज्जा तं जाह-तिलोदंग वा 
तुसोदंग वा जवोदंग वा आयंपं वा सोवरं वा दुः-वियं वा-अनवरं वा तह्पागार पानगजयम पुल्मावेय 
आलोएज्ज-आउसो तित वा भिंती तित वा दाहिस ते एतो अनवरं पानग-जायं तूं, से सेवं 
कंदत परो 
वेदेज्जा आउसंतो समान तुमं चेवं जानग-जायं पढ़िगहेज्जा वा उस्तियंचणं ओयतियंचण गिपहाहि- 
तह्पागार पानग-जायं संघं वा गिगहेज्जा परो वा से देज्जा, फसयां जाव लामे 
संते पढ़िगाहेज्जा।

[३७६] से भिक्षू वा जाव से जं पुण्य पानग-जायं जाणेज्जा-अनतरहियाए पुडवीए जाव 
संताणाण ओत्रु निगिकाते सियं, असंज भिक्षु-पाद्याे उदवलोने वा सस्तिपद्र वा 
सक्साण वा 
मलेण वा सैटादण वा संभूपाल्ता आहु दलएज्जा, तह्पागार पानग-जायं अफानुयां लामे 
संते नो 
पढ़िगाहेज्जा, एंड खल तसस भिक्खुस्सा वा भिक्षुणीए वा सामगिण जं सववेि हि समिष सहिश सया 
जं - तिगिमि।
परिस्थितियां आहेत, तात्पर्य, पाप, जानकारी, अफसूरुं [अनेकात्मकता ति मन्नदान] लाभ संतोष नो पिडगाहेजला।

[378] से भिक्खु या जावा समाने से आगंतुरेसु, आरामागारेरु वा गाहावड़-कुलेरु वा परियावसहेसु वा आन्य-गंधाणि वा पान-गंधाणि वा सुरभि-गंधाणि वा अम्भाय-अग्घाय-से तत्त्व आसय-पद्धारामुरु गिस्दे बदेर आज्ञाववन्ने अहोगंडे-आहोंगें नो गण्डामधेजला।

[379] से भिक्खु वा जावा समाने सेजजं पुण जानेज्जा सानुय वा बिरातिन वा साधनालित वा-अन्नतरं वा तात्पर्यां आमंग असास्तिपरिणां अफसूरुं जाव नो पिडगाहेजला।

से भिक्खु वा भिक्खुपी वा जावा समाने सेजजं पुण जानेज्जा-पिपाले वा पिपाल-पुणं वा विरियं वा वरियं-पुणं वा सिंगबेरं वा सिंगबेर-पुणं वा-अन्नतरं वा तात्पर्यां आमंग असास्तिपरिणां-अफसूरुं अनेकात्मकता [ति मन्नदान] लाभे संतोष नो पिडगाहेजला।

से भिक्खु वा भिक्खुपी वा जावा समाने सेजजं पुण पल्ल-जायं जानेज्जा, तंजहा-अंबपलं वा अंबागपलं वा तालपलं वा झिड़िरिपलं वा सुरसिपलं वा सल्लइ-पलं वा-अन्नतरं वा तात्पर्यां पल्लज्जां आमंग असास्तिपरिणां-अफसूरुं अनेकात्मकता [ति मन्नदान] लाभे संतोष नो पिडगाहेजला।

से भिक्खु वा भिक्खुपी वा जावा समाने सेजजं पुण प्राताल-जायं जानेज्जा, तं जहा-आसास्तिपरिणां वा नगरोह-परां वा पिलुंख-परां वा नीपुर-परां वा सल्लइ-परां वा अन्नतरं वा तात्पर्यां प्राताल-जायं आमंग असास्तिपरिणां अफसूरुं अनेकात्मकता जाव नो पिडगाहेजला।

से भिक्खु वा जावा समाने सेजजं पुण सरहुं-जायं जानेज्जा तं जहा-अंब सरहुं वा अंबाग-सरहुं वा कविंद सरहुं वा दालिम-सरहुं वा बिल्ल-सरहुं वा-अन्नतरं वा तात्पर्यां सरहुं-जायं आमंग असास्तिपरिणां अफसूरुं जाव नो पिडगाहेजला।

से भिक्खु वा भिक्खुपी वा [गाहावड़-कुलेरु पिडियाँ-पिडियां अनुपविके] समाने सेजजं पुण मंथं-जायं जानेज्जा तं जहा-उंब-मंथं वा नगरोह-मंथं वा पिलुंख-मंथं वा आसास्त-मंथं वा-अन्नतरं वा तात्पर्यां मंथं-जायं आमंग दुर्गं सामीय-अफसूरुं जाव लाभे संतोष नो पिडगाहेजला।

[380] से भिक्खु वा जावा समाने सेजजं पुण जानेज्जा-अम्मांगं वा पूर्णिमां वा महुं वा महं वा सत्पिं वा सॉसं वा पुराण गंगा एत्य पाण अनुपपुसूय काय वंब्वोड़काइं अविःतां एत्य पाण अविःतां-अफसूरुं अनेकात्मकता [ति मन्नदान] लाभे संतोष नो पिडगाहेजला।

[381] से भिक्खु वा जावा समाने सेजजं पुण जानेज्जा-उच्चेभरं वा अंक-करत्यं वा करत्यं वा सिमांढं वा पूर्णिमां वा-अन्नतरं वा तात्पर्यां आमंग असास्तिपरिणां [अफसूरुं अनेकात्मकता [ति मन्नदान] लाभे संतोष नो पिडगाहेजला।
पदमे अज्ञाने आद्यो उददेहो समतो

[३८०] इह खलु पाईणं पठीणं वा दाहिणं वा उदीणं वा संतेगाय पड़ादृ भवति गाहावइं वा जाव कम्करों वा, तेससं च च एव वृत्तबुधं भवइं- जे इसे भवति समणां भगतों तीर्थता वयमता गुणमता संजया संवृदा बश्चाचारी उवराया मेहुनाओ धम्माओ, नो खलु एसं कपडा आहाकभमिं अस्ने वा पाने वा खाद्मे वा सामे वा भोलीं वा पायः वा, सेजजं पुण्य इमं अंगं अप्पणे अहां निंदिं तं जि-अस्नं वा जाव सवमेय समणां निसिरामो, अवियां वं च भव वि अप्पणे अहां अस्नं वा जाव चेंससामो, एच्य्यागः निविस मो सोच्चा निसिम तह्यागारं अस्नं वा जाव अफासुं अनेसिण्यं ति मन्नमाणे सरद हि से या जए - लिभे मि।
आयाममें, पुरा पेहाए तस्स परो अडाए असनं वा पानं वा खाईं वा साइं वा उवकरेज्ज वा उवकेख्हेज्ज वा, अह भिक्षुणी पुन्वोवद्वित्ता ऐस पड़ण्ड ऐस हेज्ज एस कारणं एस उपएसो जं नो तहस्पगारां गुलाई पुव्वामेव भत्ताए वा पाणाए वा पवित्तेज्ज वा निखमेज्ज वा से तमायाए एगतमकक्कक्मेज्ज एगतमवक्कक्मेज्ज अनवायमयसंलोण चिह्नेज्जा ।

से तत्थ कालेन अनुपविसेज्जा अनुपविसेत्ता तत्थियःरेत्तरेहि कुलेहि सामुदालिनिय एसिं सुधाकान्धेन-२, अज्ञायण-१ उदेसो-६

वेसिं पिपाव्यं एलिता आहारं आहारेज्जा, सिया से परो कालेन अनुपविड्डस आहाकिमिंय असनं वा पानं वा खाईं वा साइं वा उवकरेज्ज वा उवकेख्हेज्ज वा तं चेंग्जो तुसिणीो उवहेज्जा, आहेडेम पत्चवाइक्खिन्स्कामी, माइङ्गिङ्ग संकासे, नो एवं करेज्जा, से पुव्वामेव आलोएज्जा आउसो तित वा भिगिने तित वा, नो ख्लु मे कपड़ आहाकिमिंय असनं वा जाव साइं वा भृत्ताए वा पायाए वा मा उवकरेहि मा उवकेख्हेज्जा, से सेवं विक्कस्तो परो आहाकिमिंय असनं वा पानं वा खाईं वा साइं वा उवकेख्तेत्ता आहु दलएज्जा तहस्पगारां असनं वा अफसेंयं लामे संते नो पिपागेज्जा ।

[३८५] से भिक्खु वा [भिक्षुणी वा गाहावङ्ग-कुलं पिपाव्यं-पिपायं अनुपविड्डेण] समाणे सेज्जं पुण जापेज्जा- मंस कं मचछः वा भिज्जज्जमांपणं पेहाए तेल्लप्पणं वा आएए उवकेखिज्जमां देवाए नो ख्द-खद उवकस्मिन्तु ओमाचेज्जा नन्नत्थ गिथणाण्नस्साए ।

[३८६] से भिक्खु वा जाव समाणे अनन्तं भोप्यण-जायं पिपागेज्जा सुभिं-सुभिं बोच्चा दुभिं-दुभिं पिपाव्यं, माइङ्गिङ्ग संकासे, नो एवं करेज्जा, सुभिं वा दुभिं वा संवं भ्ङुजे न छङ्डए ।

[३८७] से भिक्खु वा जाव समाणे अनन्तं वा पानुगथायं पिपागेज्जा पुष्पं पुष्पं आवित्तता कसायं कसायं पिपाव्यं, माइङ्गिङ्ग संकासे, नो एवं करेज्जा, पुष्पं पुष्पकरति वा कसायं कसायं तित वा संव्यमेव भृजुज्जा, नो किची चिं पिपाव्यं ।

[३८८] से भिक्खु वा भिक्षुणी वा बहुपरियायण्ण भोप्यण-जायं पिपागेज्जा बहवे सहाम्मिया तथ वसंत संभोज्या समणुणा अपरिहार्या अद्य गणा, तेसिं अनालेज्जा अणामित्ता पिपाव्यं वे माइङ्गिङ्ग संकासे नो एवं करेज्जा, से तमायाए तथ गच्छाज्जा गच्छलता से पुव्वामेव आलोएज्जा- आउसंतो समणा इमे मे असपे वा पापे वा खाइं वा साइं वा बहुपरियायण्ण तं भृजुह कं से सेवं वयंतं परो वप्पण-आउसंतो समणा, आहार्यमेयं असंतो वा जाव साइं वा जावयं-जावयं पिपासुङ्ग तावयं तावयं भोक्खामो वा पाहामो वा सव्यमेव पिपासुङ्ग सव्यमेय भोक्खामो वा पाहामो वा ।

[३८९] से भिक्खु वा जाव सेज्जं पुण जापेज्जा-असंतो वा पानं वा खाईं वा साइं वा परं समुदिस्स बहिया नीहड़ं जं परेहि असमणुणाण्ण अनिसिहि अंफासुंय [अंफासिग्यं ति मन्नमाणे लामे संते] नो पिपागेज्जा जं परेहि समणुणाण्ण सम्म निसिंड-फासुंय एसिणिजं ति मन्नमाणे लामे संते पिपागेज्जा, एयं ख्लुं तस्स भिक्खुस्स कं भिक्षुणीए वा सामगिंग्यं [जं सव्यमेहि समिं सहिं सया जए, लिबेधि] ।

पदमेअज्ञायणेन्तयमेनूदेसोसमतलो
•दसमोउदेसो•

[३९०] से एंग्जो सहारणं वा पिपाव्यं पिपागेज्जा ते सहाम्मियं अनापुच्छतात्जस्त- जस्त इचछ्द तस्स-तस्स ख्द-खद दलइ, माइङ्गिङ्ग संकासे, नो एवं करेज्जा । से तमायाए तथय
गन्ध्रेज्ञा गन्ध्रेत्ता एवं वेण्जा- आउसतो समागा। संति मम पुरे-संधुया वा पच्छा-संधुया वा तं जहाँ- आयरिणे वा उदज्ञावे वा पच्छे वा येवे वा गणी वा गनहेरे वा गनावचछेदे वा अतियाई एर्सी खट-खट दाहामि, से नेवं वर्यं परो वेण्जा- कामं खलु आउसो! अहापनज्ञतं निसराहि जाविडयं-जायडयं परो वयड- ताविडयं-ताविडयं निसरेज्ञा, सचवेमें परो वयड सचवेमें निसरेज्ञा।

[391] से एहो अणुपुन भोण्याय पद्यागहेत्ता पंतेण भोण्याय पतिचछापेति, मा मेयं सुयवर्णो-२, अज्ञाध्यय-१ उदैस०-१०।

दायं संतं दूरं सयमागे आयरिणे वा जाव गनावचछेदे वा, नो खलु मे कसझिं किंचि वि दायवं सिया माइडाणण सिंसासे, नो एवं करेज्ञा। से तमाया तथ गच्छेज्ञा। गच्छेल्ला पुरवामेव उत्ताणे हत्ये पिह्गां कहु- इमं खलु इमं खलुरति आलेराणा नो वि निवहेज्ञा। से एहो अणुन्तः भोण्याय निसरेज्ञा भट्टयं भट्टयं भोण्या, विवण्यां विरसमाहरु, माइडाणण सिंसासे नो एवं करेज्ञा।

[392] से भिक्खु वा सेज्ञा पुणा जाणेज्ञा-अंतूसुखयं वा उच्छ-अप्रतं वा उच्छ-सीखण्यां वा उच्च-सालं वा उच्छ-स्तरं वा सिबलं वा सिबलं तालं वा असिं खेळु पिह्गाहियंसिः अपेस सिया भोण्याजावा बहुउज्ञाययस्मिए तहप्पगरं अंतूसुखयं वा जाव सिबल-स्तरं वा-अफासुं अनेस्नि ज्ञं ति मनन्मागने लाभे संते नो पिह्गाहेज्ञा।

से भिक्खु च जाव सेज्ञा पुणा जाणेज्ञा- बहु अधिः वा मंसं वा मछो वा बहु कंटं असिः खेळु पिह्गाहियंसिः अपेसिया भोण्या-जावा बहुउज्ञाययस्मिए तहप्पगरं बहु-अधिः वा मंसं वा बहु कंटं-अफासुं अनेस्नि ज्ञं ति मनन्मागने लाभे संते नो पिह्गाहेज्ञा।

से भिक्खु च जाव सेज्ञा सिया ण परो बहु- अधिः मंसं वा मछो वा उवनिमतेज्ञा आउसतो समागा। अभिकंपसि बहु-अधिः मंसं पिह्गाहितः?, एतप्पगरं निस्यों सोचि निसिम्म से पुरावामेव आलेराणा आउसो ति वा भ्रणु ति वा नो खलु मे कप्पडः से बहु-अधिः मंसं पिह्गाहितः, अभिकंपसि वे दां जाविडयं ताविडयं तोगगं दलयाहि, मा अधिडाई, से सेवं सत्तस्प सेरो अभिहु अंतो-पिह्गाहिगसि बहु-अधिः मंसं परिभाषेत्ता निहु दलेराणा, तहप्पगरं पिह्गां परह्यत्यंसि वा परपायक्षि वा अफासुं अनेस्नि ज्ञं ति मनन्मागने लाभे संते नो पिह्गाहेज्ञा।

से आहेच पिह्गाहितः सिया तं नो हिंति वेण्जा नो अण्हिति वेण्जा, से तमाया एगंत- एगंत-मवकमेज्ञा एगंतमवकमेत्ता असे आरामसि वा असे उवस्यांसि वा अपय्यं संतं एनं मछो वा बहु अधिः एनं गहाय से तमाया एगंतमवकमेज्ञा एगंतमवकमेत्ता असे ज्ञामथिदिलसि वा जाव पमणिज्ञ-पमणिज्ञ तओ संज्ञामेव परह्यतिविज्ञा।

[393] से भिक्खु वा जाव समाने सिया से परो अभिहु अंतो-पिह्गाहे बिलं वा लोण उविभं वा लोण परिभाषेत्ता निहु दलेराणा, तहप्पगरं पिह्गां परह्यत्यंसि वा परपायक्षि वा- अफासुं अनेस्नि ज्ञं ति मनन्मागने लाभे संते नो पिह्गाहेज्ञा।

से आहेच पिह्गाहितः सिया तं च नाइदूराग जाणेज्ञा, से तमाया तथ गच्छेज्ञा गच्छेल्ला पुरवामेव आलेराणा- आउसो ति वा भ्रणु ति वा इमं ते कि जाणेज्ञा दिण्यं उदयु अजाणया? से य भणेज्ञा- नो खेळु मे जाणेज्ञा दिण्यं, अजाणया दिण्यं, कामं खलु आउसो, इदानि निसरामि तं भुजह वा णं परिभाषेत्ता वा णं, तं परेि शमुपुनः शमुपुनः तओ संज्ञामेव भुजेज्ञा वा पीएज्ञा वा,

[पार्श्वप्रकाशीय संस्थापित] [47] [1-आयारो]
जं च नो संचारण्ति भौतिक वा पायु वा साहित्यिक तत्त्वं वस्तिति संक्षोध्या समपन्नम् अपरिहारिया अदृश्य तेसि अनुप्यादत्वं सिया, नो जत्थ साहित्यिक सिया जेहें बुद्धिरयावने कीर्ति तत्त्वं कायवं सिया, एवं खलु तस्म बिकुःस्सि वा बिकुःणीए वा सामग्रियायः [जं सच्चिद्धहि समिमए सहीः सया जंए] - तित्तेबिमि।

पदमें अज्ञातण्यं दस्मी उद्देसोऽस्मत्तो

सुप्रक्षण्ये-२, अज्ञातण्ये-१ उद्देसोऽ-११

॰ एगारसमो - उद्देसो ऐ॰

[३९४] भिङ्कागा नामे ग्रीमतः समाप्या वा वस्माप्या वा ग्रामारण्याम् वा दुःकर्मणे मण्यं भौम्य-जायं लभ्यता से भिङ्को गिलाडः, से हंदं वण तस्माहरह, से य भिङ्को नो भुजेजजा तुमं चेव वण भुजेजजा, से एगं भौक्ष्याभिति कृं पलिविचय-पलिविचय आविष्कारो तं जहः इमे विग्नं इमे लोषः इमे तित्ते इमे कद्रयः इमे कसाए इमे अंविले इमे महुरे नो खलु एतो किंचि गिलाणसस सप्तिति तित मान्द्यण संसारे, नो एवं करेजजा ताहित्यं आलोधज्ञा जहाहित्यं गिलाणसस सदरङ्गि-तित, तं तित्त्वं तित्तल्पति तित कुःणिति तित कसायं कसाप्रति तित अंबिंको अंबित्वति तित महुरे महरेण्ति त।

[३९५] भिङ्कागा नामे ग्रीमतः समाप्या वा वस्माप्या वा ग्रामारण्याम् दुःकर्मणे वा मण्यं भौम्य-जायं लभ्यता से य भिङ्को गिलाडः से हंदं वण तस्माहरह, से य भिङ्को नो भुजेजजा आहर्जजा, से णो खलु मे अंतराए आहर्ज्ञायमि इवेचयायं आयत्तणाइ उवाककम्।

[३९६] अह भिङ्को जागेज्ञा सत्ता पिडेसनायणो सत्ता पाणेणायणो, तत्त्वं खलु इमा पदमा पिडेसनणा-असंसंधं हत्ये असंसंधं मट्टे-तह्र्पणगरण असंसंड्यं हत्येण वा मल्कण वा असंधं वा जाव साइम वा संधं वा णं जागेज्ञा परो वा से देज्जा-फासुयं [एसणिज्जं ति मननमाने लाम्मे संते] पड़गाहेजजा-पदमा पिडेसन।

अहमारा दोच्चा पिडेसनणा-संसंधं हत्ये संसंधं मल्ले-[तहह्पणगरण संसंड्यं हत्येण वा मल्कण वा असंधं वा पाणं वा खाइमं वा साईमं वा संधं वा णं जागेज्ञा परो वा से देज्जा फासुयं एसणिज्जं ति मननमाने लाम्मे संते पड़गाहेजजा]- दोच्चा पिडेसन।

अहमारा तथा पिडेसना-इह खलु पाईमं वा पद्दियं वा दहिणं वा उद्रीणं वा संतेगंडया संहं भविति- गाहार्वइ वा जाव कस्मकर्विं वा तेसि च णं अन्नतरे विशक्ष्णेसु भायण-वायपसु

उदविनङ्ग्नत्तपेयु दिया तं जहा-धारांसि वा पितरकंसि वा सरगंसि वा फरगंसि वा, वरगंसि वा, अह िपणं जागेज्ञा- असंसंधं हत्ये संसंधं मल्ले, संसंधं वा हत्ये असंसंधं मल्ले, से य पड़गाहेजजाः सिा पाणिपोड़गाहेज वा, से पुवामेव आलोधज्ञा आउसो तित वा भगिनि तित वा एणण तुमं असंसंड्यं हत्येण संसंड्यं मल्कण संसंड्यं वा हत्येण संसंड्यं मल्कण असिं पड़गाहेजगंसि वा पाणिसि वा नीहु उदिता दल्याहि तहह्पणगरं भौम्य-जायं संधं वा णं जागेज्ञा परो वा से देज्जा-फासुयं एसणिज्जं लाम्मे संते पड़गाहेजजा। तच्चा पिडेसन।

अहमारा चतुर्था पिडेसना- से भिङ्को वा जाव से जह िपण जागेज्ञा-पिहंयं वा [भूजं वा भूजियं वा मंधुं वा चालं वा] चालापलंबं वा असिं खलु पड़गाहियंसि अधे पच्चकम्मे अधे
पन्जवजाएँ, तहहङ्गारं धियः या जाव चाँद-पलंब वा संयं वा ं जाआजः परो वा से देजः-[फासुूं एसचिणजं ति मन्नमाणे लाभे संते] पड़हगाहेजः। चउत्थथा पिंडेसणाः।

अहावर चंचमा पिंडेसणाः- से भिक्खू वा जाव समाणे उगहितमेव भोयण-जायं जाणेजः तं जहा सरांसि वा डिडिंसि वा कोसंसि वा, अह पुण व एवं जाणेजः- बुद्धरियाणरे पाणीसु दगले, तहहङ्गारं असं वा पान वा खाइं वा नाइं वा संयं वा ं जाआजः [परो वा से देजः-फासुूं एसचिणजं ति मन्नमाणे लाभे संते] पड़हगाहेजः। पंचमा पिंडेसणाः।

अहावर छढः पिंडेसणाः- से भिक्खू वा जाव पगहियमेव भोयण-जायं जाणेजः- ं च सुयकांधो:-२, अज्ञायणं-१ उदेशो-११।

सयझाए पगहियं ं च परहःए पगहियं, तं पाय-परियावनं तं पाणि परियावनं- फासुूं [एसचिणजं ति मन्नमाणे लाभे संते] पड़हगाहेजः। छढः पिंडेसणाः।

अहावर सत्त्वा पिंडेसणाः- से भिक्खू वा जाव समाणे बहुउजङ्य-धम्मिि भोयण-जायं जाणेजः, ं च कल्ले बहवे दुमा-उजङ्य-समान-माहण-अतिहिकिकण-वागीस्त मायान कंवति तहहङ्गारं उजङ्य-धम्मिम भोयण-जायं संयं वा ं जाआजः परो वा से देजः-[फासुूं एसचिणजं ति मन्नमाणे लाभे संते] पड़हगाहेजः। सत्त्वा पिंडेसणाः

इत्यारहाँ सत्त पिंडेसणाः, अहावरां सत्त पाणेसणाः।

tथथ खलु इमा पद्मा पाणेसणाः- असंसंवे हत्या असंसंवे मलत०

अहावरा दोच्चा पाणेसणाः संसंवे हत्या संसंवे मलत०

अहावरा तथा पाणेसणाः- इह खलु साङ्क्या वा वार्षण्या वा दाहिण वा उद्वर्ण वा संतेंगिया सङ्ख्या भवति।

अहावरा चउत्थथा पाणेसणाः- से भिक्खू वा जाव समाणे सेज्जज्ज पुण पाणेग-जायं जाणेजः तं जहा-तितोदवं वा तुसोदवं वा जोदवं वा आयाम वा सोव्रं वा सुद्वविक्यं वा असिं खलु पड़हगङ्यसि अप्ये पच्चकम्मने अप्ये पन्जजावजः तहहङ्गारं तितोदवं वा तुसोदवं वा जोदवं वा आयाम वा सोव्रं वा सुद्वविक्यं वा संयं वा ं जाआजः परो वा से देजः-फासुूं एसचिणजं जाव पडहगाहेजः।

अहावरा पंचमा पाणेसणाः- से भिक्खू वा जाव समाणे उगहितमेव पाणेग-जायं जाणेजः।

अहावरा क्षढः पाणेसणाः- से भिक्खू वा जाव समाणे पगहियमेव पाणेग-जायं जाणेजः।

अहावरा सत्त्वा पाणेसणाः- से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावृ-कुळे पिंडवाय-पिंडियाए अपाधिये समाणे बहुउजङ्य-धम्मिम पाणेग-जायं जाणेजः।

[३८५] इत्यावरसि सत्तांह पिंडेसणां सत्तांह पाणेसणां अन्नतरं पडिं धियाजमणे नौ एवं वर्जाः- भिच्चा पिंडवन्ना खलु एते भव्यातरो परस्मे संम्भ पिंडवन्ना, जे एते भव्यातरो एयाओ भिच्चाण पिंडवजित्तां विहरति जो य अहंसि एतं पडिं धियाजित्तां बिहरामि स्वेत्वैंते उ स्त्रिणिया उव्विद्य अन्नोन्नससमाहीं एवं च ं विहरति, एतं खलु तस्म भिक्खुस्स वा भिक्खुपीए वा सामगिययो तदित्वेमि।

पद्मभार अज्ञायण एगारसमो उदेशो समलतो

पद्म अज्ञायणः - समलतं

मृनि दीपारतसागरेन संःशोःच: समपादितथ्च पद्मम अज्ञायण समलतं

[दीपारतसागर सःशोःच:] [४९] [१-आयारी]
बीयं अज्ञायणं - सेज्जा

[३९८] से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अभिक्रिक्ष्य उपवस्यं एसिस्तए अनुपविस्तता गामं वा
[नगरं वा खेडः वा कब्जः वा मटबं वा पडलं वा दोपमुखं वा आगः वा निगमं वा आसमं वा सन्निघवेसं वा]
रायवागः वा सेज्जं पुणं उपवस्यं जाणेज्जा- साँईं [सपान सबीयं सहिरेयं सउस सउदयं सउलिंग-पणग-दग-महिं-मकडः] संतानं ताप्पर्यां उपस्सां नो ठाणं वा सेज्जं वा निसीहिं वा चेतेज्जा।
सुयक्षंदो-२, अज्ञायणं-२ उर्दु-१

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुणं उपवस्यं जाणेज्जा-अपपं अपपानं जाव अपप
संतानं ताप्पर्यां उपस्सं पद्दतिलहि पमङ्जितता ताओ संज्ञामेव ठाणं वा सेज्जं वा निसीहिं वा
चेतेज्जा।

सेज्जं पुणं उपवस्यं जाणेज्जा- असिस्पदियाए एगं साह्मिंयं समुदिस्स पाणाईं भूयाईं
जीवाईं सत्ताईं समारभं समुदिस्स कीयं पामिच्छं अच्छेज्जं अनिसाईं अभिमिं आहुं चेतेति,
ताप्पर्यां उपस्सं पुरेसिंतरकें वा अपुरेसिंतरकें वा जाव अनासविते वा नो ठाणं वा सेज्जं वा निसीहिं वा
चेतेज्जा।

[सेज्जं पुणं उपवस्यं जाणेज्जा- असिस्पदियाए बहवे साह्मियया समुदिस्स पाणाईं भूयाईं
जीवाईं सत्ताईं समारभं समुदिस्स कीयं पामिच्छं अच्छेज्जं अनिसाईं अभिमिं आहुं चेतेति ताप्पर्यां
उपस्सं पुरेसिंतरकें वा अपुरेसिंतरकें वा अलतंहिं वा अनलतंहिं वा परिभुंते वा अपरिभुंते वा
आसविते वा अनासविते वा नो ठाणं वा सेज्जं वा निसीहिं वा चेतेज्जा।

सेज्जं पुणं उपवस्यं जाणेज्जा- असिस्पदियाए एगं साह्मिंयं समुदिस्स पाणाईं भूयाईं
जीवाईं सत्ताईं समारभं समुदिस्स कीयं पामिच्छं अच्छेज्जं अनिसाईं अभिमिं आहुं चेतेति ताप्पर्यां
उपस्सं पुरेसिंतरकें वा अपुरेसिंतरकें वा जाव अनासविते वा नो ठाणं वा सेज्जं वा निसीहिं वा
चेतेज्जा।

सेज्जं पुणं उपवस्यं जाणेज्जा- असिस्पदियाए बहवे साह्मिययाऽं समुदिस्स पाणाईं भूयाईं
जीवाईं सत्ताईं समारभं समुदिस्स कीयं पामिच्छं अच्छेज्जं अनिसाईं अभिमिं आहुं चेतेति ताप्पर्यां
उपस्सं पुरेसिंतरकें जाव अनासविते वा नो ठाणं वा से उजं वा निसीहिं वा चेतेज्जा।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुणं उपवस्यं जाणेज्जा- बहवे समणां-माहां-अति-किवण-वणींमें पगाणिं-पगाणिं समुदिस्स पाणाईं भूयाईं जीवाईं सत्ताईं समारभं समुदिस्स कीयं
पामिच्छं अच्छेज्जं अनिसाईं अभिमिं आहुं चेतेइ ताप्पर्यां उपस्सं पुरेसिंतरकें वा अपुरेसिंतरकें वा
जाव अनासविते वा नो ठाणं वा सेज्जं वा निसीहिं वा चेतेज्जा।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुणं उपवस्यं जाणेज्जा-बहवे समणां-माहां-अति-किवण-वणींमें समुदिस्स पाणाईं भूयाईं जीवाईं सत्ताईं जाव अनासविते नो ठाणं वा सेज्जं वा निसीहिं
वा चेतेज्जा अहं पुणं जाणेज्जा- पुरेसिंतरकें जाव आसविते पद्दतिलहि पमज्जितता ताओ संज्ञामेव
ठाणं वा सेज्जं वा निसीहिं वा चेतेज्जा।
से भिक्षु वा भिक्षुणी वा सेज्ज पुण उवसय सजन्हज असंसज भिक्षुपडियाए कहिए वा उक्कबिए वा छने वा लिते वा घड़े वा मड़े वा संबड़े वा संपुस्मिते वा तहपगरे उवसय अपृसिरसतरकड़ [अनत्तिधिए अपरिभूते] अनासेविए नौ ठाणव वा सेज्ज वा निसेहियं वा चेतेष्जा, अह पुणव जाणेज्जा पुरिसिरसतरकड़ आसेविए पड़लेहिता पमणिजता तो जसञ्जामेव ठाणव वा सेज्ज वा निसेहियं वा चेतेष्जा।

[३९९] से भिक्षु वा भिक्षुणी वा सेज्ज पुण उवसय सजन्हज असंसज भिक्षु-पडियाए खुदियायो दुवारियायो महलुनियाओ कुज्जा, जहा विडेसीए जाव संथाराग संजनेज्जा बहिया वा निन्ननकु तहपगरे उवसय अपृसिरसतरकड़ [अनत्तिधि अपरिभूते] अनासेविण्य नौ ठाणव वा सेज्ज वा सुपकखंधी-२, अज्जायण-२ उद्दीतो।

निसेहियं वा चेतेष्जा, अह पुणव जाणेज्जा- पुरिसिरसतरकड़ आसेविए पड़लेहिता पमणिजता तो जसञ्जामेव ठाणव वा सेज्ज वा निसेहियं वा चेतेष्जा।

से भिक्षु वा भिक्षुणी वा सेज्ज पुण उवसय सजन्हज असंसज भिक्षु-पडियाए उदगप्षुसूचणिक एंवाण वा भूलाणि वा पत्ताणि वा पुष्काणि वा फलाणि वा बीयाणि वा हरियाणि वा ठाणाओ ठाण सारति बहिया वा निन्ननकु तहपगरे उवसय अपृसिरसतरकड़ जाव नौ ठाणव वा सेज्ज वा निसेहियं वा चेतेष्जा अह पुणव जाणेज्जा-पुरिसिरसतरकड़ [अनत्तिधि अपरिभूते आसेविए पड़लेहिता पमणिजता तो जसञ्जामेव ठाणव वा सेज्ज वा निसेहियं वा चेतेष्जा।

से भिक्षु वा भिक्षुणी वा सेज्ज पुण उवसय सजन्हज असंसज भिक्षुपडियाए पीढ़ वा फलं वा निसरणिव वा उदहरण वा ठाणाओ ठाण सारं बहिया वा निन्ननकु तहपगरे उवसय अपृसिरसतरकड़ जाव नौ ठाणव वा सेज्ज वा निसेहियं वा चेतेष्जा अह पुणव जाणेज्जा- पुरिसिरसतरकड़ जाव चेतेष्जा।

[४००] से भिक्षु वा भिक्षुणी वा सेज्ज पुण उवसय सजन्हज तं जहा-खंशंसि वा मंशंसि वा मालंसि वा पासायंसि वा हरमयंतमसि वा अन्नसंसि वा तहपगरंसि अंततिक्षजायंसि, ननत्य आगाणनागाधेहि कारणेहि ठाण वा सेज्ज वा निसेहियं वा चेतेष्जा। से य आहच्छ चेतेज्ते सिया नो तत्त्य सीयुंड-वियंडेन वा उसियंड-वियंडेन वा हत्याणि वा पादाणि वा अंरणि वा जंगणि वा मुह वा उत्तरितेग वा पहोलीजा वा। नो तत्त्य उसं गरीजेजा, तं जहा-उच्छारं वा पासांवं वा खंडं वा सिंधाणि वा फंटं वा पूरं वा सोणिवं वा अन्नंवं वा सरीरावंवं वा, केवली बृह आयणेमेय, से तत्त्य उसं गरीजेजा पयतेज्जं वा मवेज्जं वा से तत्त्य पयलमाणि वा पवंदमाणि वा हत्यं वा [पां वा बाहु वा ऊंठ वा] ऊंठ वा सीमं वा अनंतरं वा कारणं इंदिय-जालं लुसेज्ज वा पाणाणि वा भूताणि वा जीवाणि वा सत्ताणि वा अभिमणेज्ज वा [तवेज्ज वा लेसेज्ज वा संसेज्ज वा संबेज्ज वा परियायेज्ज वा किलमेज्ज वा ठाणाओ ठाणं संकामेज्ज वा जीविआओ] ववराेज्ज वा अह भिक्षुण पुववविद्हेण्य एस पडणं [एस हेतु एस कारणं एस उत्त्तसं] जं तहपगरे उवसय अंततिक्षजाए नो ठाणं वा सेज्जं वा निसेहियं वा चेतेष्जा।

[४०१] से भिक्षु वा भिक्षुणी वा सेज्ज पुण उवसय सजन्हज- सैथियं सखुंड सपसुभंतिपां तहपगरे सागरिए उवसय नो ठाणं वा सेज्जं वा निसेहियं वा चेतेज्जा आयणेमेय भिक्षुस्स गहावव-कुलेण सदं संसवमाणसं अलसगें वा विसुंड्या वा छुड़ी वा उवाहेज्जा अन्नतरं वा
[402] आयाममें भिक्खुस सागारिक उवस्स तत्वस्मानसस्स- इह खलु गाहाइव वा सुयकंधे-२, अज्ञायण-२ उदेसो-१

[403] आयाममें भिक्खुस गाहाईवहिः सद्दी स्तत्वस्मानसस्स, इह खलु गाहाईव अप्पनो साध्व अगलकाय उज्जालेज्ञ वा पज्जालेज्ञ वा भिक्खु उच्चांयं मण्ड नियच्छेज्ञाः- एते खलु अगलकाय अकोसंतु वा मा वा अकोसंतु जाव मा वा उद्वेवतु, अह भिक्खुं पुव्वोदिष्ठ एस पड्डण्ण जाव जं तह्प्पगारे सागारिक उवस्स नो ठाणं वा सेज्ञं वा निसीहिः वा चेतेज्ञा।

[404] आयाममें भिक्खुस गाहाईवहिः सद्दी स्तत्वस्मानसस्स- इह खलु गाहाईवसस्स कुंडेले वा गुणेः वा मणि वा मोतिते वा हिरणेः वा सुवर्णेः वा कडःगणिः वा तुडःयाणिः वा तिसराणिः वा पालंबाणिः वा हारे वा अद्वेहारे वा एगालवी वा मुर्तालवी वा कनालवी वा रयाणालवी वा तुरणिः वा वज्रारिः अलक्रिय-विश्वसिः पेपहाः, अह भिक्खु उच्चांयं मण्ड नियच्छेज्ञाः- एरिसिः वा सा नो वा एरिसिः- इति वा एस बृहा इति वा एस मण्ड साव्याः, अह भिक्खुं पुव्वोदिष्ठ [एस पड्डण्ण एस हेक एस कारण एस उवस्स] जं तह्प्पगारे उवस्स नो ठाणं वा सेज्ञं वा निसीहिः वा चेतेज्ञा।

[405] आयाममें भिक्खुस गाहाईवहिः सद्दी स्तत्वस्मानसस्स- इह खलु गाहाईवणीो वा गाहाईव-धौयाओ वा गाहाईव-सुपाहाओ वा गाहाईव-धाईवो वा गाहाईव-दासीो वा गाहाईव-कम्मकरीो वा तासि च एं एवं वुलपुव्व भव्व- जे इमे भव्वति समण्ड, भव्वांतो [सीले मता वयमता गुमानता संस्या संमुदा बन्धारी] उद्वया महुणिः धम्माः, नो खलु एतसिः कपड्ड मेहुणं धम्मं परियारणिः आउहिल्लए, जौ ये खलु एहिः सद्दी मेहुणं धम्मं परियारणिः आउहेज्ञा पुत्तं खलु सा लमेज्ञा-ओयसिः तेयसिः वच्चसिः जससिः संपराथ्य आलोण्णारिसिः एयपागारे निघोसं सोच्चा निसम्म तासिः च एं अनन्यरिः सह्थी।

तं तवसिं भिक्खुं मेहुणं धम्मं पप्पियारणिः आउद्वेज्ञा, अह भिक्खुं पुव्वोदिष्ठ [एस पड्डण्ण जाव उवस्स] जं तह्प्पगारे सागारिक उवस्स नो ठाणं वा सेज्ञं वा निसीहिः वा चेतेज्ञा, एंह खलु तस्स भिक्खुस वा भिक्खुणीस वा सामपिग्य [जं सव्वदहिः समीं सहिः सयाज्ञ- तित्बेम्म]।
भीए अनुक्रमण पढ़ने उद्देशी समतली

○ भीओ - उद्देशी ○

[406] गाहावई नामेगे सुई-समायारा भवति, भिक्खू य असिंगाणे मोयसमायारे से तर्गधे दुगधे पड़िक्ये पड़िमोबे यत्व भवसं, जं पुजवकसं मं पछापकसं जं पछापकसं जं पुजवकसं जं भिक्खु-महियाए वहमाणे करेजा वा नो वा करेजा, अह भिक्खू मुदयोधिदा [एस पड़णा जाव एस उवएसो] जं तहपपगारे उवसंए नो ठाणं वा [सेजजं वा निसीहयं वा] चेतेजा।

[407] आयाममें भिक्खुस्स गाहावईहि संधि संवसमानसस- इह खलु गाहावईस्स अपनो सहज्यावे विचक्खूबे भोजन-जावे उवकवहिदे सिया अह पच्छा भिक्खु पड़ियावे असं सं पानं वा खाइं वा शाइं वा उखेलेजा वा उवकरेजा वा तं व भिक्खु अभिक्षणजा भोज्या वा पायावे वा विव-नुशववाधे-2, अज्ञायणं-2 उद्देशी-2

हिततह वा, अह भिक्खूं मुदयोधिदा [एस पड़णा जाव जे] जं तहपपगारे उवसंए नो ठाणं वा जाव चेतेजा।

[408] आयाममें भिक्खुस्स गाहावइणा संधि संवसमानसस- इह खलु गाहावईस्स अपनो सय्यादा विचक्खूबे दारायई मिन्न-पुजवावे भवति, अह पच्छा भिक्खुस्सुंयावे विचक्खूबे दारायई भिदेजज वा किपेजज वा पामिच्येजज वा दास्तन वा दारामिनानं कु अग्निकायं उज़जालेजज वा पज़जालेजज वा तत्थ भिक्खु अभिनिद्यं आयावतं वा पयावतं वा वियहिततह वा, अह भिक्खूं मुदयोधिदा [एस पड़णा जाव जे] जं तहपपगारे उवसंए नो ठाणं वा जाव चेतेजा।

[409] से भिक्खु वा भिक्खुणी वा उच्चार-पास्तवणं उपवाहिजजमाण रायो वा विआले वा गाहावई-कुलसस दुरारवाहं अवंगुणेजज, तेंगे व तसंधिचारी अनुपवसेजज, तस्स भिक्खुस्स नो कपेड़ एवं वडलीए-अयं तेंग पविसई नो वा पविसई उवलियई नो वा उवलियई अहपततिः नो वा अहपततिः वदत्त वा नो वा वदति तेंग हं अहनेन हं तस्स हं अनन्तम्बस हं अयं तेंग अयं उच्चारं अयं हंता अयं एथक्षासी, तं तवस्ंभिं भिक्खुं अतेनं तेंगनं तं संकति, अह भिक्खुणं मुदयोधिदा [एस पड़णा एस हेतु एस कारणं एस उवएसों जं तहपपगारे उवसंए नो ठाणं वा सेजजं वा निसीहिः वा] चेतेजा।

[410] से भिक्खु वा भिक्खुणी वा सेजजं पुनं उवसंलय जाणेजज-तण-पुजेसु वा पलाल-पुजेसु वा सांदे [सपणे संबी तहरे सहु सुउद छालिं-पणग-दग महिय-मक्कडा] संताणए तहपपगारे उवसंए नो ठाणं वा सेजजं वा निसीहिः वा चेतेजा।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा सेजजं पुनं उवसंलय जाणेजज-तण-पुजेसु वा पलाल-पुजेसु वा अपपं [अपपणे जाव अपपुलिंग-पणग-दग महिय-मक्कडासंताणाए तहपपगारे उवसंए पढ़िलिहिः पमर्गितात तं संजयामें ठाणं वा सेजजं वा निसीहिः वा] चेतेजा।

[411] से आगंतरेसु वा आरामगारेसु वा गाहावई-कुलेसु वा परियावसहेसु वा अभिक्षण-अभिक्षणं साहिम्मएहि औवसमागेहि नोवएजज।

[412] से आगंतरेसु वा आरामगारेसु वा गाहावई-कुलेसु वा परियावसहेसु वा जे भयंतारो उड़बद्रिङ्ग वा वासावसिङ्ग वा कपणं उववतिणावित्त तत्थेन भुज्जो संवसंति, अयमाउसो। कालाइक्कंक- किरिया वि भवइ।
[४९३] से आगंतुरसु वा आरामागारसु वा गाहावइ-कुलेसु वा फ़रियावसहसु वा जे भरंतारे उड़बद्धियं वा वासावसियं वा कपं उवातिसाविता तं दुगुणा लिगुणेन वा अपरिहिरिता तत्वेव भूजो सवसित अयमासों। उवाहाण-किरिया वि भवः।

[४९४] इह खलु पाईं वा पड़ीं वा दाहीं वा उद्रीं वा संतेगइया सड़का भवितं, तं जहाँ-गाहावइ वा जाव कम्मकरीओ वा तेसिं च रं आयार-गोयरे नो रुमिसंते भवः, तं सद्धमान्यं तं पत्तियमाणेहं तं रोयमाणेहं बहवे समान-माहान-अतिहिक्किविन-वणीमय समुदिस्स तद्व-तद्व अगारीहं अगाराइं चेतिताइं भवितं, तं जहाँ-आस्याणाणं वा आयाताणं वा देवकुलाणं वा सहांस्या वा पवणि वा पणिय-गिमाणं वा पणिय-सालाओं वा जान-गिमाणं वा जान सालाओं वा सुहक्कम्माणं वा दाख- कम्माणं वा बद्रक्कम्माणं वा वक्कक्कम्माणं वा बनक्कम्माणं वा इक्काक्कम्माणं वा कड़क्कम्म- सुयक्कखंड-२, अज्ञायन-२ उद्देसों-२

ताणं वा सुसालक्कम्माणं वा सत्कक्कम्माणं वा गिरिक्कम्माणं वा कंदरक्कम्माणं वा सेलोवडाण- कम्माणं वा भवनगिमाणं वा जे भरंतारे तहस्पगाइं आस्याणं वा जाव भवनगिमाणं वा तेहं ओववमाणेहं ओवयंति अयमासों अबिभिक्कत-किरिया वि भवः।

[४९५] इह खलु पाईं वा पड़ीं वा दाहीं वा उद्रीं वा संतेगइया सड़का भवितं तं जहाँ-गाहावइ वा जाव कम्मकरीओ वा तेसिं च रं आयार-गोयरे नो रुमिसंते भवः तं सद्धमान्यं तं पत्तियमाणेहं तं रोयमाणेहं बहवे समान-माहान-अतिहिक्किकिविनवणीमय समुदिस्स तद्व-तद्व अगारीहं अगाराइं चेतिताइं भवितं, तं जहाँ-आस्याणं वा जाव भवनगिमाणं वा, जे भरंतारे तहस्पगाइं आस्याणं वा जाव भवनगिमाणं वा तेहं अनोवयमाणेहं ओवयंति अयमासों। अनभिषिक्कत-किरिया वि भवति।

[४९६] इह खलु पाईं वा जाव कम्मकरीओ वा, तेसि च रं एवं वुत्तुपुवं भवः, जे इमे भवति समान भरातं तीलमंतो उवरया मेहुणो धम्माः, नो खलु एवं आयारपार कपढः आहाकम्माण्य उवस्सए वस्त्रेः, से जागिमणि अरेवं अप्पणो सआदाः चेतिताइं भवितं, तं जहाँ-आस्याणं वा जाव भवनगिमाणं वा, सत्तवणि ताणं समानणं निसरामो, अरविङ्गेवं वंच पछ्चा अप्पणो सआदाः चेतिस्समी तं जहाँ-आस्याणं वा जाव भवनगिमाणं वा आयारपां निगुणों सोच्चा निसभम जे भरंतारे तहस्पगाइं आस्याणं वा जाव भवनगिमाणं वा, उवागच्छति उवागच्छतात इतरेंहं पाहुंवें वाह्तति, अयमासों। वज्जज-किरिया वि भवः।

[४९७] इह खलु पाईं वा पड़ीं वा दाहीं वा उद्रीं वा संतेगइया सड़का भवितं, तं जहाँ- गाहावइ वा जाव कम्मकरीओ वा, तेसि च रं आयार-गोयरे नो रुमिसंते भवः तं सद्धमान्यं तं पत्तियमाणेहं तं रोयमाणेहं बहवे समान-माहान-अतिहिक-किविन-वणीमय समुदिस्स तद्व-तद्व अगारीहं अगाराइं चेतिताइं भवितं तं जहाँ-आस्याणं वा जाव भवनगिमाणं वा जे भरंतारे तहस्पगाइं आस्याणं वा जाव भवनगिमाणं वा, उवागच्छति उवागच्छतात इतरेंहं पाहुंवें वाह्तति, अयमासों। महावज्ज-किरिया वि भवः।

[४९८] इह खलु पाईं वा पड़ीं वा दाहीं वा उद्रीं वा संतेगइया सड़का भवितं तं जहाँ- गाहावइ वा जाव कम्मकरीओ वा तेसिं च रं आयार-गोयरे नो रुमिसंते भवः तं सद्धमान्यं तं पत्तियमाणेहं तं रोयमाणेहं बहवे समान-माहान-अतिहिक-किविन-वणीमय समुदिस्स तद्व-तद्व अगारीहं
अगराइ चेतिताई भवति, तं जहा- आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा, जे भयंतारो तहप्पगाराइ आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा उवागच्छिता उवागच्छिता इतितेरहें पाहुहें वहिति, अयमाउसो! सावजज-किरिया वि भवइ।

[४९१] इह खलु पाईण वा पडीण वा दाहीण वा उद्दीण वा संतेगइया जाव तं रोयमाणः एं गं समणजायं समुहिष्ठस्तत्तत्त्व अगराइ चेतिताई भवति, तं जहा- आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा महाय पुदविकाय-सामार्थेंगण जाव महाय तसकाय-सामार्थेंगण महाय विस्वरूपें हिं पावकम- किचिचें हिं जहा- छायणां लेवणां संथार-दुवार-पिहणां सीतोदें वा परिहियपुवने भवइ अगनिकाण वा उजालियपुवने भवइ, जे भयंतारो तहप्पगाराइ आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा उवागच्छिता उवागच्छिता इयराईयपें हिं पाहुहें हिं दुपकखं तं कर्म्म सेवंति, अयमाउसो! महासावजज-किरिया सुपकखंधो-२, अज्जायण-२ उदेसो-२

वि भवइ।

[४९२] इह खलु पाईण वा पडीण वा दाहीण वा उद्दीण वा संतेगइया सड़ूण भवति तं जहा- गाहावई वा जाव कम्मकरीया वा तेसि च रं आयार-गोयरे नो सुनिसंतं भवइ तं सहास्माणें हिं तं पतियमाणें हिं रोयमाणें हिं अप्पण साधाण तथ्य-तस्त्त अगरायं हिं अगराइ चेतिताई भवति तं जहा- आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा महाय पुदविकाय-सामार्थेंगण जाव महाय तसकाय-सामार्थेंगण महाय विस्वरूपें हिं पावकम- किचिचें हिं जहा- छायणां लेवणां संथार-दुवार-पिहणां सीतोदें वा परिहियपुवने भवइ अगनिकाण वा उजालियपुवने भवइ, जे भयंतारो तहप्पगाराइ आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा उवागच्छिता उवागच्छिता इयराईयपें हिं पाहुहें एं गपखं तं कर्म्म सेवंति, अयमाउसो! अप्पसावजज-किरिया वा भवइ एं खलु तस्स भिक्षुस्स वा भिक्षुणीए वा साममिगण [जं सचवेदें हें सभिम्म तहिद्ये सत्या जाते - दितबंभे।

बीए अज्जायण- बीङ- उदेसो- समातो

० ताद्रो - उदेसो ०

[४९३] से य नो सुलभे फासुए उंठे आहेसणिज्ञे नो य खलु सुदे इमें हिं पाहुहें, तं जहा- छायणां लेवणां संथार-दुवार-पिहणां पिंडवाणाणां, से भिक्खु चरियेन-रे भान-रे निमीहिणये-रे सेजः-संथार-पिंडवाणाण-रे शंति भिक्खुणों एकमकार्यों उपजुया नियाग-पिडवाणां अमायं कुववमाणा वियाहिणा, संतेगइणा पाहुहिणा उक्षिंतपुवता भवइ एं निक्षिंतपुवता भवइ, परिभाय फुव्वा भवइ, परिभूतपुवता भवइ, परिहियपुवता भवइ, एं वियागरमणे समिया वियागरति ? हंता भवइ।

[४९४] से भिक्खु वा भिक्खुणी वा सेजं खु पुण उद्वसंय जाणेज्जा- खुरुपिया खुरुपियाणा नियाणाणा नोयाणा संविशुद्धाओं भवति, तहप्पगारे उद्वसं राणा वा विआवे वा निक्कमगमणे वा पविसमणे वा पुणा हर्षण पत्त खालण वा ता संजगमयें निखमेंज्ज वा पतिसेज्ज वा, केरली बुआ आयामणये- जे तत्त्व समणणा वा माहणणा वा छट्त वा मलत वा दंड वा लहिया वा भिसिया वा नालिया वा चेंलं वा जिमियतो वा चम्मेण वा चम्मकोपेण वा चम्म-छेदेण वा दुबबं दुनिनिखिततें अनिकं चलाचे- भिक्खु य राणा वा वियाले वा निक्कमगमणे वा पविसमणे वा पवलेज्ज वा, पवडेज्ज वा,...
से तत्त्व पवित्रमाणे वा पवित्रमाणे वा हत्या वा पायं वा [बाहु वा उर्ण वा उदरा वा सीसं वा अन्नयं वा कार्यसं] इंद्र-जायं लूसेज वा पाणाणि वा भूवाणि वा जीवाणि वा सत्ताणि वा अभिप्रेणज्ञ वा [वलेज वा लेसेज वास संपुष्येज वा संध्येज वा परिपुष्येज वा निकलमेज वा ठाणाआ ठाणेसंकेत्य वा जीवियाः] वर्णरोज्येज वा, अह भिक्षुपुणेवा विश्वविद्या एस चंड्यणा एस हेक्षा एस कारण एस उवासेज जं तह्यप्यगे उवससं पुरा हत्येसं पच्छा पाणेज तत्सं संज्ञात्येव निकलमेज वा पवित्रेज वा।

[४२३] से आगंतुरेसु वा आरामागारेसु वा गाहावड़-कुलेसु वा परियावसहेसु वा अनुवी हे उवससं जाएज्ञा, जं तत्त्व इतरे जे तत्त्व समहिद्यां ते उवससं अपुन्नवेज्या- कामं खलु आससे। अहानंदे अहापरिणातं वसिस्त्यामो जाय आउसंतो। जाय आउसंत्सस उवससं जाव सहामियाई ततो उवससंग्निभिस्तामो तेन पं विहिरिस्तामो।

सुयक्कंघो-२, अज्ज्यायण-२ उद्देशो-३

[४२४] से भिक्षु वा भिक्षुपूण वा जस्त्युससं संवेज्या तस्स पुनि समेभे नाम-गोच जाणेज्ञा, तत्रु पच्छा तस्स गिहे निमत्सेमन्त्तसं वा अनिमेत्त्याणसं वा असं वा पाणे खाइमं वा साइमं वा- अफावुथं [अनेमसिर्ज्ञां ति मनमासे लाखे संते] नो पिब्याहेज्ना।

[४२५] से भिक्षु वा भिक्षुपूण वा सेज्जं पुणु उवससं जाणेज्ञा- संसारागार्यं सागिनियं सूदं नो पण्णसं निक्ष्यमं-पवेसां नो पण्णसं वाणयं-पुछ्छुणपरियाणाणुपेह-धम्माणुओग] चिंताये तह्यप्यगे उवससं नो ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेतेज्ञा।

[४२६] से भिक्षु वा भिक्षुपूण वा सेज्जं पुणु उवससं जाणेज्ञा- गाहावड़-कुलसस मज्जामज्जेंं गंतुः पंच पिलिबंदं वा नो पण्णसं जाय चिंताये तह्यप्यगे उवससं नो ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेतेज्ञा।

[४२७] से भिक्षु वा भिक्षुपूण वा सेज्जं पुणु उवससं जाणेज्ञा- इह खलु गाहावड़ वा जाय कर्मकरः ओ अननमननमकोसंतियं वा [बंध्यं वा संभंतियं वा] उद्वैति वा नो पण्णसं निक्ष्यमं-पवेसां -जाय धम्माणुओग चिंताये, सेवं नच्चा तह्यप्यगे उवससं नो ठाणं वा जाय चेतेज्ञा।

[४२८] से भिक्षु वा भिक्षुपूण वा सेज्जं पुणु उवससं जाणेज्ञा- इह खलु गाहावड़ वा जाय कर्मकरः ओ अननमननसस गायं तेलेव वा घण्यं वा नवनीवं वा वसायं वा अव्यमंगं ति वा मक्खे ति वा नो पण्णसं जाय धम्माणुओगं चिंताये तह्यप्यगे उवससं नो ठाणं वा जाय चेतेज्ञा।

[४२९] से भिक्षु वा भिक्षुपूण वा सेज्जं पुणु उवससं जाणेज्ञा- इह खलु गाहावड़ वा जाय कर्मकरः ओ अननमननसस गायं सिपणेण वा कक्केण वा लोहेण वा वणेण वा चुणेण वा पुमाणे वा आप्यंसंति वा पर्यंसंति वा उद्वैति वा उद्वैति वा नो पण्णसं चिंताये तह्यप्यगे उवससं नो ठाणं वा [सेज्जं वा निसीहियं वा] चेतेज्ञा।

[४३०] से भिक्षु वा भिक्षुपूण वा सेज्जं पुणु उवससं जाणेज्ञा- इह खलु गाहावड़ वा जाय कर्मकरः ओ अननमनन गायं शीवद्र-वियंडेन वा उस्तिओद्र वियंडेन वा उच्छोतिति वा पद्धोतिति वा सिंचिति वा शिनावेति वा नो पण्णसं चिंताये तह्यप्यगे उवससं नो ठाणं वा जाय चेतेज्ञा।

[४३१] से भिक्षु वा भिक्षुपूण वा सेज्जं पुणु उवससं जाणेज्ञा- इह खलु गाहावड़ वा जाय कर्मकरः ओ निगिना ठिंडा निगिना उवलीणा मेहुंधम्म विन्नवेति रहस्यं वा मंतं मंतेति
नौ पण्णस्स [ब्यक्तमण-पेवसाए नो पण्णस्स वायण-पद्दचण-परियंदणाणपैष-धरणारुवूग्म] चिताए तह्य्य्यगार्यु उवसाए नो ठाणण ा सेज्ज्य ा निःसीहिडण ा चेतेज्ज्य।

[अधि०३२] से बिखु ा बिखुणि ा सेज्ज्य पुण ा उवसस्य जाणेज्जा आइणसलेख्य नो पण्णस्स जाव चिताए तह्य्य्यगार्यु उवसाए नो ठाणण ा जाव चेतेज्जा।

[अधि०३३] से बिखु ा बिखुणि ा अधिवेक्षितज्जा चताराण्य एसिताए सेज्ज्य पुण ा चताराण्य जाणेज्जा-सांद्य [सपान्य सौबो सहियु सूद्य ा सूद्य-पण्ण-दरक-महण-मककाण] चताराण्य तह्य्य्यगार्यु चताराण्य-अक्षसुण अणेनीणज्ज्य तिम मन्नमाणो] लाम्य संते नो पड़गाहेज्जा।

से बिखु ा बिखुणि ा सेज्ज्य पुण ा चताराण्य जाणेज्जा-अप्पंद चाच्य पाण ा चताराण्य लहुयं पाँडाहिरियं तह्य्य्यगार्यु चताराण्य- जाव चाच्य संते नो पड़गाहेज्जा।

[अधि०३४] इत्युयाई आयताण्य उवा०क्क्म भ बिखु ा जाणेज्जा इमाहि चउँहि पद्माहिं संधाराण्य एसिताए, तथयु खलु िमा पद्मा पद्मा- से बिखु ा बिखुणि ा उदिर्शय-उदिर्शय संधाराण्य जाणेज्जा, तं जहा-इकक्कें ा कल्तण्य ा जतुइं ा परण्य ा मोरण्य ा तण्य ा सोरण्य ा कुसं ा कुष्चणं ा पिप्पल्यं ा पललयं ा, से पुत्रावेय्य आलोएज्जा आउसैलत ा भोणारिनं ा वहतसि में एतो अन्यं च संधाराण्य कं, तह्य्य्यगार्यु संू ा वण जाणेज्जा परो ा से देज्जा- फसुण ा एसणिज्ज्य [तिम मन्नमाणो] लाम्य संते पड़गाहेज्जा- पद्मा पद्मा।

[अधि०३५] आहारा दोच्चा पद्मा- से बिखु ा बिखुणि ा और चाच्य संधाराण्य जाणेज्जा, तं जहा-गाहावईं ा गाहावई-हरियं ा गाहावई-भोणनं ा गाहावई पुणं ा गाहावई घुंं ा सुहं ा घाई ा दासं ा दासी ा कमकरिं ा कमकरिं ा से पुत्रावेय्य आलोएज्जा- आउसै लि ा भोणारिनं लि ा दहिसि में एतो ? अन्यं च संधाराण्य तह्य्य्यगार्यु संधाराण्य संू ा वण जाणेज्जा परो ा से देज्जा- फसुण ा एसणिज्ज्य- पड़गाहेज्जा- दोच्चा पद्मा।

आहारा तथा पद्मा- से बिखु ा बिखुणि ा जसुवस्स संवस्सज्जा ते तथयु अहा- समन्नागर, तं जहा- इकक्कें ा [कल्तण्य ा जतुइं ा परण्य ा मोरण्य ा तण्य ा सोरण्य ा कुसं ा कुष्चणं ा पिप्पल ा] पललयं ा तथस्य लाम्य संवस्सज्जा तथस्य अलाम्य उक्तकु रुं ा नेिस्ज़िय ा वििरेज्जा- तथा पद्मा।

[अधि०३६] आहारा चूम्भा पद्मा- से बिखु ा बिखुणि ा अहासंधभोण संधाराण्य जाणेज्जा, तं जहा- पुढोसिंं ा व कडसिं ा व अहासंधभोण, तथस्य लाम्य संवस्सज्जा तथस्य अलाम्य उक्तकु रुं ा नेिस्ज़िय ा वििरेज्जा- चूम्भा पद्मा।
[436] इच्छेयांच चालें पदिमां अनलयरं पडिमं पदिवज्ञमाणे तं चेव जाव अन्नोसन्न-समाहीए एवं च विहर्ववतः।

[438] से भिखूवा भिक्खुणीवा अभिमंक्षेरज्ञा संथारंगं पच्चिपिणित्तिए, से ज्ज्ञापूप संथारंगं जानेज्ञा- सांडं जाव संताणं तह्पातारं संताणं नौ पच्चिपिणेज्ञा।

[439] से भिखूवा भिक्खुणीवा अभिमंक्षेरज्ञा संथारंगं पच्चिपिणित्तए सेज्जं पुप संथारंगं जानेज्ञा-अप्पंं अप्पानं जाव अप्पुतिंग-पणंग-दग-महिं-मफका संताणं तह्पातारं संताणं प्यालेहियं प्यालेहियं पमजियं-पमजियं आयाविय-आयावियं विहुणियं विहुणियं तओं संज्याहेवं पच्चिपिणेज्ञा।

[440] से भिखूवा भिक्खुणीवा वा समांवा वा वस्माणं वा गामाणगामं तृदृज्ञमाणं वा पुव्वामेवं पन्नसं उच्चारपास्ववभूमि पदिलेहेज्ञा, केवली बूया आयामणेय-अप्पिलेहियाे उच्चार-सुयक्षयं-२, अज्ञा-यं-२ उद्देस्य-३।

पास्ववभूमि, भिखूवा भिक्खुणीवा वा राओं वा विद्वारो वा उच्चारपास्ववणं परिक्र्येवामाणं पयतेवज्ञ वा पवतेज्ञ वा, सेतत्त्व पयत्तमाणं वा पवत्तमाणं वा हत्थं वा पायं वा तुरंतेज्ञ वा पाणाणं वा [भूपायणं वा जीवाणं वा सल्ताणं वा अभिमेहेज्ञ वा वतेज्ञ वा लेसेज्ञ वा सयरेज्ञ वा संधेज्ञ वा परिया-वेज्ञ वा विलेज्ञ वा ठाणाओं ठाणं संकामेज्ञ वा जीवातों] ववरोज्ञ वा, अह भिक्खूवा पुव्वोद्विधा एस पड़णं एस हेअ एस कारणं एस उवागंजे जं पुव्वामेवं पन्नसं उच्चारपास्ववभूमि पदिलेहेज्ञा।

[441] से भिखूवा भिक्खुणीवा अभिमंक्षेरज्ञा सेज्जं-संथारंगं-भूमि पदिलेहित्तए नलनयं आयरीणवा वा उवज्ञराणवा वा [पवततीवा वा थेरीणवा वा गणिणवा वा गणहरेणवा] गणावच्छेड़ं वा बामेणवा वा बुद्धेणवा वा शेरेणवा वा मिलापणवा वा आएसेणवा वा अंतेणवा वा मज्झेणवा वा समेणवा वा विस्मेणवा वा पवाणवा वा निवाणवा वा, तापं संज्यामेवं प्यालेहियं-प्यालेहियं पमजियं-पमजियं तत्रों संज्यामेवं बहु-फासुयं सेज्जं-संथारंगं संथेज्ञाण।

[442] से भिखूवा भिक्खुणीवा वा बहु-फासुयं सेज्जं-संथारंगं संथंरत्ता अभिमंक्षेरज्ञा बहु-फासुयं सेज्जं-संथारं दुर्हेलित्तए।

से भिखूवा भिक्खुणीवा वा बहु-फासुयं सेज्जं-संथारं दुर्हेलित्तए से पुव्वामेवं सस्वारियं कायं पाए य पमजियं पमजियं तत्रों संज्यामेवं बहु-फासुयं सेज्जं-संथारं दुर्हेलित्तए तत्रों संज्यामेवं बहु-फासुयं सेज्जं-संथारं सेज्जं।

[443] से भिखूवा भिक्खुणीवा वा बहु-फासुयं सेज्जं-संथारं सयामणं नो अन्न-मन्नसं हत्थं पाएणं पायं काणं काणं आसाएज्ञा, से अनासामणं तत्रों संज्यामेवं बहु-फासुयं सेज्जं-संथारं सेज्जं।

से भिखूवा भिक्खुणीवा वा उस्सासामणं वा नीमासणं वा कासामणं वा छीयामणं वा जंभायमणं वा उड़ुएं वा वायनिस्गं वा करमणं पुव्वामेवं आसंं वा पोसंं वा पाणिणं परिपिणित्ता तत्रों संज्यामेवं उस्सेज्ञा वा नीसेज्ञा वा कासेज्ञा वा छीएज्ञा वा जंभाएज्ञा वा उड़ुएं वा वायनिस्गं वा करेज्ञा।

[444] से भिखूवा भिक्खुणीवा-समा वेग्ययं सेज्जं भवेज्ञा, विसमा वेग्ययं सेज्जं भवेज्ञा, विवता वेग्ययं सेज्जं भवेज्ञा, ससर्वखं वेग्ययं सेज्जं भवेज्ञा,
अप्प-ससरक्खा येगया सेज्जा भवेज्जा, सदसं-मसगा येगया सेज्जा भवेज्जा, अप्प-दस-मसगा येगया सेज्जा भवेज्जा, सपरिसडा येगया सेज्जा भवेज्जा, अपरिसडा येगया सेज्जा भवेज्जा, सादसगा येगया सेज्जा भवेज्जा, निर्ससगा येगया सेज्जा भवेज्जा, तह्यपगारहिं सेज्जाहिं संविज्ञानाहिं पगहिंतलाओं विहार विहरेज्जा, नो किंचि व गिलाराज्जा, एयं खलु तत्स भिक्खुस वा भिक्खुणीए वा सार्गिययं जं सत्वधेहिं समिय सहिय सया जएज्जासि - विबैं.isUser
[478] से भिक्षू वा भिक्षुकी वा गामाणुगाम दूजजमाने पुरुषे जुगमां पेंहमाने दृष्टि तत्से पाणे- उदुडू पार्श्य रीप्ज शाहु पार्श्य रीप्ज बितिरिच्छे वा कठु पार्श्य रीप्ज, सति पर्ककमे संज्ञामाने पर्ककमेज्जा, नो उज्जुमु गच्छेडा तो संज्ञामाने गामाणुगाम दूजजजेज्जा।

से भिक्षू वा भिक्षुकी वा गामाणुगाम दूजजमाने अंतार से पाणाणि वा बीयाणि वा हरियाणि वा उद्धे वा महिया वा अविद्वेष्टे सति पर्ककमे [संज्ञामाने पर्ककमेज्जा] नो उज्जुमु गच्छेडा, तो संज्ञामाने गामाणुगाम दूजजजेज्जा।

[479] से भिक्षू वा भिक्षुकी वा गामाणुगाम दूजजमाने अंतार से विरुवक्वाणि पच्छायाणि दस्तूमायाणि भिक्षुकी अनादिरियाणि दुस्सन्नपाणि दुप्पण्जयाणि अकाल-पद्वोरीणि अकालपरिसरीणि सति लांछे विहाराए संधरमानेँहि जनवरणहि नो विहारवित्याए पवज्जेज्जा गमाणे, केली बूँ आयाणमें, ते ण बांला अंग तेने अंग उक्कर अंग तेनो अउ तिय कठु तं भिक्षु अक्कोसेज्जा वा [बंधेज्जा वा संभेज्जा वा] उद्वेज्जा वा वत्त्य पद्गणहं कंबल वापुण्णि अखीधेज्ज सुरुक्कय्यो-२, अज्ज्याण-३ उद्देसो-१

वा अवहरेज्जा वा परिभेज्जा वा अह भिक्षुण पुवीवदिदा [अस पड़णा एस हेड एस कारण एस उवसो] जं नो तहप्पणारणि विरुवक्वाणि पच्छायाणि दस्तूमायाणि विहार-वित्याए पवज्जेज्जा गमाणे तो संज्ञामाने गामाणुगाम दूजजजेज्जा।

[480] से भिक्षू वा भिक्षुकी वा गामाणुगाम दूजजमाने अंतार से अरणाणि वा गणारणाणि वा जुवारणाणि वा दोरज्जाणि वा वेरज्जाणि वा विश्वज्जाणि वा सति लांछे विहाराए संधरमानेँहि जनवरणहि नो विहार-वित्याए पवज्जेज्जा गमाणे, केली बूँ आयाणमें, ते ण बांला तं चेव जाव गमाणे तो संज्ञामाने गामाणुगाम दूजजजेज्जा।

[481] से भिक्षू वा भिक्षुकी वा गामाणुगाम दूजजमाने अंतार से विहं सिया, सेजज पुण विं जाणेज्जा- एगाण्णा वा दुराण्णा वा तियाण्णा वा चुकाण्णा वा पंवाण्णा वा पाउण्णा वा नो पाउण्णा वा तहप्पगां विं अनेगाहगमणिंज झति काले [विहारए संधरमानेँहि जनवरणहि] नो विहार-वित्याए पवज्जेज्जा गमाणे, केली बूँ आयाणमें, अंतार से वासे सिया पाणेसु वा पणेसु वा बीएसु वा हरिएसु वा उदाएसु वा महियासु वा अविद्वेष्टे, अह भिक्षुण पुवीवदिदा [अस पड़णा एस हेड एस कारण एस उवसो] जं तहप्पगां विं अनेगाह गमणेंज जाव गमाणे तो संज्ञामाने गामाणुगाम दूजजजेज्जा।

[482] से भिक्षू वा भिक्षुकी वा गामाणुगाम दूजजमाने अंतार से नावसंतारिमै उदए सिया, से जप पुण नाव जापेज्जा- आसंज्जे भिक्षुप-पद्याए किपेज्जा वा पामिच्ज्जा वा नावाए वा नाव-परिणामं कठु थलाओ वा नाव जलाभी अगाहेल्जा जलाओ वा नाव जलाभी उक्कसेज्जा पुण्ण वा नाव उस्सिंजेज्जा सण्ण वा नाव उप्पिलावेज्जा तहप्पगां नाव उद्धगमणिं वा अहेगामिं वा तिरियागमिं वा परं जोयमेणराए अद्ज्जोयमानाराए वा अन्तत्रो वा भूजतराए वा दूजजजेज्जा गमाणे।

से भिक्षू वा भिक्षुकी वा पुवीमाने तिरिच्छ-संपातूमें नाव जापेज्जा, जापेता से तमायाए एकात्मकमेज्जा एकात्मकमेज्जा भड़गं पदियेहेज्जा पदियेहेता एगो भूणामंडगं करेज्जा करेज्जा ससीसीविंकं कायं पाय व पमज्जेज्जा पमज्जेता सागरं बहतं पच्छिकयाएज्ज पच्छिकयाएता एगं पायं जलं किच्चा एगं पायं थले किच्चा तो संज्ञामाने नाव दूजजजेज्जा।
उवेहेज्जा से यं परो नावा-ग्रो नावा-ग्रं वेदेज्जा-आउसंतो समण्य एवं ता तुम नावा उदयं हत्यों वा पाण्य वा मत्ते वा पडिनग्रेच्या वा नावा-उससंचण्य वा उससंचिर्या नो से तं परिणं परिजापेज्जा तुसिणौ उवेहेज्जा।

**तदः अन्ज्यायणं वहेच्या उदेसो समतो।**

वीओ - उदेसो 61
[446] से भिक्षु वा भिक्षुणी वा उदगर्सि पवभाः नो हत्थे यवा पाण्य कायन कायन आसाएन्जा, से अनासायमाणो तसू संजयामेव उदगसिस पवेज्जा।

से भिक्षु वा भिक्षुणी वा उदगर्सि पवभाः नो उम्मग्ग-निमिमियं करेज्जा, मामें उदगं कणेशु वा अर्थीसु वा नककसि वा मूहसि वा वियुज्ज्जज्जा, तसू संजयामेव उदगसिस पवेज्जा।

से भिक्षु वा भिक्षुणी वा उदगर्सि पवभाः दोबलियं पवेज्जा खियपामेव उवहि विशुज्जज्जा वा विसोहेज्जा वा अने चे पण सातिज्जज्जा, अह पुणेवं जाणेज्ज-पाणे सिया उदगाओ तीरं पाणिण्तेत, तसू संजयामेय उदउल्लेन वा ससणित्त्रेण वा कायन उदगतीरे चिह्नेज्जा।

सुयक्कंडो-२, अज्जायण-३ उदेसो-२।

से भिक्षु वा भिक्षुणी वा उदउल्लं वा ससणित्त्रेण वा कायन नो आमज्जेज्जा वा पमज्जेज्जा वा संलिहेज्जा वा लिलिहेज्जा वा उवलेज्जा वा उवहेज्जा वा आयावेज्जा वा पयावेज्जा वा अह पुणं एवं जाणेजज- विगोदे एम काय वोचिन्न सिपेन्ह काय तह्यगारं कायं आमज्जेज्जा वा पयावेज्जा वा तसू संजयामेय गामाणुगामं दूढोज्जज्जा।

[447] से भिक्षु वा भिक्षुणी वा गामाणुगामं दूढोज्जज्जानो परहं सद्धं परिवज्य परिज्ञविय गामाणुगामं दूढोज्जज्जा, तसू संजयामेव गामाणुगामं दूढोज्जज्जा।

[448] से भिक्षु वा भिक्षुणी वा गामाणुगामं दूढोज्जज्जानो अंतरं से जंघासंतारिम्मे उदगं निया, से पुव्यामेव ससीसोविरियं कायं पादे य पमज्जेज्जा, पमज्जेलता सागार् भूतं पच्चकैएज्जा, पच्च-क्खाभ्यंतं एंगं पायं जलं किच्छा एंगं पायं त्यलं किच्छा तसू संजयामेव जंघासंतारिम्मे उदए अहारियं रीएज्जा।

से भिक्षु वा भिक्षुणी वा जंघासंतारिम्मे उदगं अहारियं रीयमाणो नो हत्थेण हत्थ्य पाण्य पायं कायं आसाएज्जा से अनासायमाणो तसू संजयामेव जंघासंतारिम्मे उदए अहारियं रीएज्जा।

से भिक्षु वा भिक्षुणी वा जंघासंतारिम्मे उदए अहारियं रीयमाणो नो सायं विधियं नो पालाह-वंवियं महामहालयं सुदगसिस कायं विउसेज्जा, तसू संजयामेव जंघासंतारिम्मे उदए अहारियं रीएज्जा, अह पुणेवं जाणेज्ज-पाणे सिया उदगाओ तीरं पाणिण्तेत, तसू संजयामेव उदउल्लेन वा ससणित्त्रेण वा कायं दगतीरए चिह्नेज्जा।

से भिक्षु वा भिक्षुणी वा उदउल्लं वा कायं ससणित्त्रेण वा कायं नो आमज्जेज्जा वा पमज्जेज्जा वा, अह पुणेवं जाणेजज- विगोदे एम काय चिन्नसिपेन्ह मे काय तह्यगारं कायं आमज्जेज्जा वा जाव पयावेज्जा वा तत्सू संजयामेय गामाणुगामं दूढोज्जज्जा।

[449] से भिक्षु वा भिक्षुणी वा गामाणुगामं दूढोज्जज्जानो महंदियगामं हं पाहं हरियाणिष छंदिय-छंदियं विक्षिज्ज-विक्षिज्जं विक्षिज्ज-विक्षिज्जं उपमाणुं हरिय-हवाह गच्छेज्जा, जमेम पाएंहं महंदियं खिपंनेव हरियाणि अवहंतं, महाणं संपाल्ले, नो एवं कारेज्जा, से पुव्यामेव अप्पहियं मंगं पालिहेज्जा तत्सू संजयामेय गामाणुगामं दूढोज्जज्जा।
से भिक्खु वा भिक्खुणी वा गामागुणाम दूषजमान्यां अंतरा से वपपाणि वा फलिहाणि वा पागाराणि वा तोरणाणि वा अग्रलाणि वा अग्ल-पासागाणि वा गढ़जो वा दरीओ वा सड़ परस्परे संज्ञामेव परस्परमेज्जाया, नो उड़ु गच्छियाँ वा केवली बुद्धा आयामायेन, से तत्त्व परस्परमाण्यां पयलेज्ज वा पवेज्ज्जाया वा से तत्त्व पल्लमाणि वा पवामाणि वा गुक्सणाणि वा गुम्माणि वा तायाओ वा बल्नीओ वा तणाणि वा गहिराणि वा हरियाणि वा अवलल्बिय-अवलल्बिय उत्तरेज्जा जे तत्त्व पाः पिन्यिया उद्वागच्छस्ति ते पाणि जाएज्जा तओ संज्ञामेव अवलल्बिय(२) उत्तरेज्जा तओ गामागुणाम दूषज्जेज्जा।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा गामागुणाम दूषजमान्यां अंतरा से जवानाणि वा संगदाणि वा रहाणि वा सचक्कणाणि वा परस्परमणि वा एण्याणि वा विरूप्ष्य सलिनविं हेह्नए सड़ परस्परे संज्ञामेव परस्परमेज्जाया नो उड़ु गच्छियाँ, से नो परो संणागो एण्या- आउसंतो, एत यो समान्य एण्याए अभिनिर्यायां करेड, से नो बाह्नए गह्वय आगस्तह, से नो परो बाह्नए गह्वय आगस्तह, तो नो समय् सिया नो दुस्मण्य सिया नो उचचवय मण्य नियच्छेज्जा नो तेतिस बालाण घापारे वहरां चमडेज्जा, अप्पू-सुयक्ष्यं-२, अज्ञयाणम-३ उद्देसौ-२

स्प्युए अबहिलंस्से एतंगाण्यो अप्पाणिय वियोजेज्ज समहिण्य, तओ संज्ञामेव गामागुणाम दूषज्जेज्जा।

[४६५] से भिक्खु वा भिक्खुणी वा गामागुणाम दूषजमान्यां अंतरा से पाण्हियीया उद्वाग-च्छेज्जा, ते नो पाण्हियीया एवं वदेज्जा- आउसंतो समाणा, केवल एस गामे वा जाव रायहाणि वा केवल एथे आसा हल्दी गामापिंडलागण मणुस्स्पा परिहस्ति ? से बुढ़तेत बुढ़उदर बुढ़जे बुढ़जे हंस्यसे से अप्पहतते अप्पूदर अप्पज़ेन्य अप्पज़ेस् ?, एयपपराणि पस्तिणाणि नो पुच्छियाणा, एपपष्राणी पस्तिणाणि पुढ़ो वा अपुढ़ो वा नो आइक्षेज्जा एवं खुल तस्त भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामिग्रियों जे सििहं भीं भाव जर्ज्जाणि - हि बेप्मै।

ताङ्कः अज्ञयाणम् बीओ उद्देसो समतती

• ताङ्कः - उद्देसो Ḍ

[४६६] से भिक्खु वा भिक्खुणी वा गामागुणाम दूषजमान्यां अंतरा से वपपाणि वा [फलिहाणि वा पागाराणि वा तोरणाणि वा अग्रलाणि वा अग्ल-पासागाणि वा गढ़जो वा] दरीओ वा कूडागाराणि वा पासादाणि वा नूम-गिहाणि वा सख्गिहाणि वा पवन-गिहाणि वा सुख्व वा चेड़िय-कड़ थूम वा चेड़ियकड़ एहासाणि वा [आयात मणि वा देशक्लाणि वा सहाओ वा वपाओ वा पण्यी-मिहाणि वा पाण्य-सालाओ वा जान-गिहाणि वा जान-सालाओ वा सुहा-कम्ब्हाणि वा दब-कम्ब्हाणि वा वक-कम्ब्हाणि वा वण-कम्ब्हाणि वा इंजल-कम्ब्हाणि वा कड़-कम्ब्हाणि वा सुसाण-कम्ब्हाणि वा संति-कम्ब्हाणि वा गिरि-कम्ब्हाणि वा बंदर-कम्ब्हाणि वा सेलोवान-कम्ब्हाणि वा] ब्रह्मणगिहाणि वा नो बाहोम पषिणज्ञः-पषिणज्ञः अंगुलियाम उद्दिस्य-उद्दिस्य ओण-मिय-ओणमिय उद्दिस्य-उद्दिस्य निज्जामेज्जा तओ संज्ञामेव गामागुणाम दूषज्जेज्जा।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा गामागुणाम दूषजमान्यां अंतरा से कक्ष्याणि वा दार्सियाणि वा नूमाणि वा वल्याणि वा गहणाणि वा गहण-वितुमाणि वा वराणि वा वन-वितुमाणि वा पवन्याणि वा वनवय-वितुमाणि वा अग्राणि वा नालाणि वा दहाणि वा नदीओ वा वालीओ वा पोखियाओ वा दहियाओ वा गुजालियाओ वा तसणि वा सर-पतियाणि वा सर-सरपतियाणि वा नो बाहोम पषिणज्ञः-पषिणज्ञः जाव निज्जामेज्जा, तओ संज्ञामेव गामागुणाम दूषज्जेज्जा, केवली बुद्धा आयामायें जे तत्त्व
भिक्खू वा भिक्षुकी वा भिक्षुकी वा सात वा सात वा सात वा सात ते उत्तर्देव्य वा विल्लस्तेव्य वा बांट वा सत्ता वा कंडेर्ज्जा चारे ति में अथ तथापि, आह भिक्षुकीं पुनःतत्त्वदिवर्ग जाव जं मो भावाओ परिवर्ज्जा-परिवर्ज्जा जाव निर्ज्जा तओ संज्ञायमेव आयारिया-उवज्ज्जराधीं सद्दं गामानु-गामां दूजज्जेज्जा ।

[५६३] से भिक्खू वा भिक्षुकी वा आयारिया-उवज्ज्जा धिर्द् गामानु-गामां दूजज्जेज्जा नो आयारिया-उवज्ज्जारस्स हत्यारण हर्त्यान् [पाण्डः पाण्डः काण्डः काण्डः आसा एज्जा से] अनानायमण्ये तओ संज्ञायमेव आयारिया-उवज्ज्जारधीं सद्दं गामानु-गामां दूजज्जेज्जा ।

से भिक्खू वा भिक्षुकी वा आयारिया-उवज्ज्जारधीं सद्दं दूजज्जेज्जा अंतरा से पाण्डपियहि उवाण्डोऽधेज्जा, ते या पाण्डपियहि एवं वर्ज्जा- आउसतो तयाणा के तुष्मे ? काओ वा एह ? काही वा गण्डोऽधि हि ? जे तथ आरामिर एवं उवज्ज्जा वा से भासेज्जा वा वियागरेज्जा वा, आयारिया-उवज्ज्जारस्स भासामाण्यस्स वा वियागरेमणाण्यस्स वा नो अंतराभास करेज्जा, तओ संज्ञायमेव आरामिरिणे एवं दूजज्जेज्जा ।

सुर्यकण्ठो-२, अज्जयं-३ उदेसे-३

से भिक्खू वा भिक्षुकी वा आहारितिणिय गामानु-गामां दूजज्जे धे ते आरामिरिणिय गामानु-गामां दूजज्जे ।

से भिक्खू वा भिक्षुकी वा आहारितिणिय गामानु-गामां दूजज्जे अंतरा से पाण्डपियहि उवाण्डोऽधेज्जा, ते या पाण्डपियहि एवं वर्ज्जा- आउसतो तयाणा के तुष्मे ?, काओ वा एह ? काही वा गण्डोऽधि हि ? जे तथ सत्त्वातिषणे से भासेज्जा वा वियागरेज्जा वा, आरामिरिणिय भासामाण्यस्स वा वियागरेमणाण्यस्स वा नो अंतराभास भासेज्जा, तओ संज्ञायमेव गामानु-गामां दूजज्जे ।

[५६३] से भिक्खू वा भिक्षुकी वा गामानु-गामां दूजज्जे अंतरा से पाण्डपियहि उत्तर्देव्य ज्जा, ते या पाण्डपियहि एवं वर्ज्जा- आउसतो तयाणा अर्थायाई एतस्तो, पाण्डपे पास्तो, तं जहानु-स्तो वा गोण्डि वा महिदूति वा पुस्तु वा पक्षिलिङ वा सत्ततविलिङ वा जलयं वा से आइक्खह दसेह, तं नो आइक्खेज्जा नो दम्स्तो, नो तेसिलं तं परिण परिजज्जा, तुम्लिगो उवेज्जा, जाण्ड वा नो जाण्डति वेज्जा, तओ संज्ञायमेव गामानु-गामां दूजज्जे ।

से भिक्खू वा भिक्षुकी वा गामानु-गामां दूजज्जे अंतरा से पाण्डपियहि उवाण्डोऽधेज्जा, ते या पाण्डपियहि एवं वर्ज्जा- आउसतो तयाणा! अवायाई एतस्तो पाण्डपे पास्तो-उदगपसूक्याणी कैद्याणि वा मूलाणि वा पत्ताणि वा पुष्पाणि वा फलाणि वा बीयाणि वा हरियाणि वा उदंग वा सनिन्हिण्य अग्नि वा सनिन्हिण्य तस्ते से आइक्खह जाव दूजज्जे ।

से भिक्खू वा भिक्षुकी वा गामानु-गामां दूजज्जे अंतरा से पाण्डपियहि उवाण्डोऽधेज्जा, ते या पाण्डपियहि एवं वर्ज्जा- आउसतो तयाणा! अवायाई एतस्तो पाण्डपे पास्तो- उदगपसूक्याणि वा रहाणि वा गहाणि वा परचक्षकाणि वा परचक्षकाणि वा] सेण्ड वा दिसुभवं सनिन्हिण्य तस्ते से आइक्खह [दसेह तं नो आइक्खेज्जा नो दम्स्तो नो तेसिलं तं परिण परिजज्जा तुम्लिगो उवेज्जा जाण्ड वा नो जाण्डति वेज्जा तओ संज्ञायमेव गामानु-गामां] दूजज्जे ।

से भिक्खू वा भिक्षुकी वा गामानु-गामां दूजज्जे अंतरा से पाण्डपियहि [उवाण्डोऽधेज्जा तेस्तो पाण्डपियहि एवं वर्ज्जा]- आउसतो तयाणा! केवलए एतस्तो गामे वा जाव रायहाणि वा से आइक्खह जाव दूजज्जे ।

[दीपर्नवसागर संस्थिनतः] [८-आयारी]
से भिक्षु वा गामाणगाम दूराज्जेज्ज्या अंतरा से पाणिपिष्या आजपतो समणा। केवल इत्यादि गामाण वा नगरस्स का जाव रायहारीवे वा मंगले से आईहुँ तेन जाव दूराज्जेज्ज्या।

[464] से भिक्षु या भिक्षुणी या गामाणगाम दूराज्जेज्ज्या अंतरा से गोण वियालं पदिपः पेपाह [महिमस वियालं पदिपः पेपाह एव-मण्डस्य आसं हेतु सौं हेतु वर्थं विंगम दीवियं अतिरत्त तर्कतं परिसंग सियालं वियालं-सुणामो खोल-सुणायं कोंकोंखियं [चित्तचित्त-वियालं पदिपः पेपाह नो तेसं भीमो म्हणगमेण गच्छेज्ज्या नो मंगलो उमममण संकोणेज्ज्या नो गणणे वा वाने वा दुःखे वा अनुपन्वितत्ज्ज्या नो रुक्खियस दुःखेज्ज्या नो महमहामलंयस उदयंसं कायं विउसेज्ज्या नो वांव वा सरणं वा सणं वा सतंव वा कंखेज्ज्या अयुप्सुए [अभिहस्सा अगंतं अप्पाण वियोशेज्ज्या] समणीह तो संजयामेव गामाणगाम दूराज्जेज्ज्या।

से भिक्षु वा भिक्षुणी वा गामाणगाम दूराज्जेज्ज्या अंतरा से विनियम, सेज्जां पुण विंह जावेज्ज्या- इम्सिस खतु विंहिः सिहवे आमोसगा उवगरण पदियाए संपिरिया गच्छेज्ज्या, नो तेसी भीमो म्हणगमेण गच्छेज्ज्या जाव समणीह तो संजयामेव गामाणगाम दूराज्जेज्ज्या।

सुयक्तखंधा-२, अज्ज्याण-३ उदेसो-३।

[465] से भिक्षु या भिक्षुणी या गामाणगाम दूराज्जेज्ज्या अंतरा से आमोसगा संपिरिया गच्छेज्ज्या ते गं आमोसगा एवं देदज्जा- आउसंसो समणा। आहार एवं वर्थं वा पायं वा कंबं वा पायपुंखणं वा देई सिंहिकावहि तं नो देदज्जा नो निकिखिवेज्ज्या नो बंदियं-बंदिय जावेज्ज्या नो अंजंसं कुन्तु जावेज्ज्या नो कलुण-पदियाए जावेज्ज्या धम्मियाए जावेज्ज्या जावेज्ज्या तुसिणीय-श्वेयन वा उदेस्तज्ज्या ते गं आमोसगा संयं करणिज्जं ति कुन्तु अक्कोसंति वा जाव उदवतं वा वर्थं वा पायं वा कंबं वा पायपुंखणं वा अच्छेदज्ज्या वा आवेज्ज्या वा परिभेज्ज्या वा, तं नो गामससारियं कुज्ज्या, नो रायससारियं कुज्ज्या, नो परं उवसंककीलत्तु बूया- आउसंसो! गहावी एव खनु आमोसगा उवगरण-पदियाए संयं करणिज्जं ति कुन्तु अक्कोसंति वा जाव परिवेतं वा एव्यप्पगारं पणं वा वर्थं वा नो पुरंसु कुन्तु विहरेज्ज्या, अप्सुए जाव समणीह तो संजयामेव गामाणगाम दूराज्जेज्ज्या। एवं खनु तस्से भिक्षुस्स वा भिक्षुणी वा सामग्गियं, जं सव्वेल्हं समिन्त सहियं सया जावेज्ज्नसं- तिब्बेमी।

तस्स अज्ज्याणं तकु उदेजसो-समतत

tहंअ अज्ज्याणं समतत

मुंदी दीपर्नसागरं संशोधितं: समपादितवं तहंबं अज्ज्याणं समतत

चउतं अज्ज्याणं - भासंज्जानं

० पठमो - उदेसो ०

[466] से भिक्षु या भिक्षुणी या इमाई वं-आयाराई सोच्छा निस्म इमाई अनायाराई अनायारियपुंखवाई जावेज्ज्या- जे कोहा वा वायं विउंजति जे माणण वा वायं विउंजति जे मायावे वा वायं विउंजति जे लोभा वा वायं विउंजति जाणके वा फससं वयति अज्जणो वा फससं वयति सव्वं चेयं सावजं वज्जेज्ज्या विशेषमायेयं, धुं चेयं जावेज्ज्या अधुं चेयं जावेज्ज्या- अस्तनं वा पावं वा खावं वा साइं वा लब्धं नो लम्बियं भूंजियं नो भूंजियं अदुवं आगे अदुवं नो आगे अदुवं एड अदुवं नो एड
अदुवा एहिति अदुवा नौ एहिति एत्थवि आग्ने एत्थवि नौ आग्ने एत्थवि एड़ एत्थवि नौ एहिति एत्थवि नौ एहितिः। अनुवृद्ध निद्राभासी सभियाए सजाए भासं भासेज्ञा तं जहा- ें

एत्थवाणं दुःखवाणं दुःखवाणं पुरुषक्रवाणं पुरुषक्रवाणं अद्वित्ववाणं उद्वित्ववाणं उद्वित्ववाणं अद्वित्ववाणं अद्वित्ववाणं अद्वित्ववाणं अद्वित्ववाणं गच्छक्रवाणं गच्छक्रवाणं गच्छक्रवाणं गच्छक्रवाणं ें।

अह भिक्खु जाणेज्ञा चत्तारि भासेज्ञा तं जहा-सच्चमेगं पदयं भास्यां भीयं मोसं तद्यं सच्चमोसं जं नेव सच्च सदोपमं नेव सच्चमासं-सच्चमासं नामं तं चउध्यं भासेज्ञात।

से बेंम- जे अतीता जे य पुढ़पन्ना जे य अनाग्नया अरहतां भगवतो सदगे ते एयाणि चेे चत्तारि भासेज्ञा तं भासिंसू वा भासंसू वा भासिसमं वा भारवियं वा भारवियं वा भारवियं वा सवाईं च एवाणि अचित्नाणि वण्मानाणि गाम्बत्ताणि रसमानाणि फासमानाणि चयोवचहाईं विपरि-्णामधमाईं भवंतीति अक्याईं।

सुपक्ख्यो-२, अज्ञायण-५ उद्देशो-१

[६६५] से भिक्खु वा भिक्खुणी वा से उंजं पुण जाणेज्ञा-पुवं भासा अभासा भासिज्ञामाणि भासा भासा भाससमयित्कंता च नं भासिया भासा अभासा।

से भिक्खु वा० से उंजं पुण जाणेज्ञा- जा य भासा सच्चा, जा य भासा मोसा, जा य भासा सच्चमोसा, जा य भासा असच्चमोसा, तह्यगरं भासं सावजं सकिरियं कक्षं क्कुयं निकुरं फसं आन्हयकरं छेेयकरं भेेियकरं परिताणकरं उद्वाणकरं भूतोवहाईं अभिकंते नो भासेज्ञा।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा से उंजं पुण जाणेज्ञा- जा य भासा सच्चा सुहुमा जा य भासा असच्चमोसा तह्यगरं भासं असावजं अकिरियं अकक्षं अकक्षं अनिकुरं अफसं अन्नहयकरं अछेेयकरं अभेेियकरं अपरिताणकरं अनुतोवहाईं अभिकंते भासं भासेज्ञा।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा पूंम् आमंतेमाणे आमंतिते वा अपडुसुमोमाणे नो एवं एवज्णा- होले लि वा गोले लि वा वसुले लि वा कुकड़े़े लि वा धड़सः लि वा साणे लि वा तेंगे लि वा चारिण लि वा माई लि वा मुसावाई लि वा, एयाइं तुम तं जणगा वा, एत्यपगारं भासं सावजं सकिरियं जावे भूतो- वधाईं अभिकंते नो भासेज्ञा।

[६६८] से भिक्खु वा भिक्खुणी वा पूंम् आमंतेमाणे आमंतिते वा अपडुसुमोमाणे एवं एवज्णा- अणुः लि वा आउसो लि वा आउसो लि वा सावजं लि वा उपसे लि वा धन्मिते लि वा एयपगारं भासं असावजं जावे भूतोवहाईं अभिकंते भासेज्ञा।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा इत्यामंतेमाणे आमंतिते वा अप्पडुसुमोमाणे नो एवं एवज्णा- होले लि वा गोले लि वा [वसुले लि वा कुकड़े़े लि वा धड़सः लि वा साणे लि वा तेंगे लि वा चारिण लि वा माई लि वा मुसावाई लि वा इमेश्वराईं तुम् एयाइं तं जणगा वा- एत्यपगारं भासं सावजं जावे भूतोवहाईं अभिकंते नो भासेज्ञा]।
[661] से भिक्खु वा भिक्खुणी वा नो एवं वृद्धहृदिक्षेत्र लिंग वा साविक लिंग वा उवासिए लिंग वा धर्मिण्ये लिंग वा, एतपपगार भासं असावज्ञ जाव अभिमंक्त भासेज्ञ।

[470] से भिक्खु वा भिक्खुणी वा नो एवं वृद्धहृदिक्षेत्र लिंग वा साविक लिंग वा उवासिए लिंग वा धर्मिण्ये लिंग वा निविक्षेत्र लिंग वा निविक्षेत्र लिंग वा पदल वा पदल माव वा पदल पिन्फुज्जु वा सस्त्रव भायं वा पिन्फुज्जु विभाज्य वा राज्य भायं वा पिन्फुज्जु उद्धु वा सूचिए माव वा उद्धु सो वा राया जयमाव वा जघन- नो एतपपगार भासं भासेज्ञ पतन्त्व।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अंतरिक्षे लिंग वा गुज्ञानितिसंगरित लिंग वा समुद्रिष्ण लिंग वा निविक्षेत्र लिंग वा पाओव वृद्धहृदिक्षेत्र वा वृद्धहृदिक्षेत्र लिंग वा, एत खंता तत्सभ भिक्खुस्स वा भिक्खुणीवा वा सामस्यायं जं सत्वीहरु समित सहित जम्य जावका भालभाल संहिटभां भासाहिन्त तिन्तत्म।

यन्त्रे अज्ञान्य ठहरो। उद्धरण समात्तो।

० बीओ - उद्धरण।

उदरी उदरी लित वा, मूर्त मूर्त लित वा, सूचिम दृषिकृत लित वा, गिलासिणी गिलासिकी लित वा, वेडी वेडी लित वा, पीठस्य पीठस्य लित वा, सितिवयं सितिवयं लित वा, महुमेणी महुमेणी लित वा, हर्षितन्त हर्षितन्त लित वा, पादिर्हन्त पादिर्हन्त लित वा, लक्ष्मणिन्त लक्ष्मणिन्त लित वा, कण्डितन्त कण्डितन्त लित वा, औषधि औषधि औषधि लित वा, जेयागणे तपागारे तपागाराहिं भासाहिन्त बुड्या-बुड्या कुप्पत भाण्डा ते याव तपागाराहिं भासाहिन्त अभिमंक्त नो भासेज्ञ।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा जहा वेगळ्याइ स्वाइ पासेज्ञ ताहवि ताइ नो एवं वृद्धहृदिक्षेत्र लिंग वा वृद्धहृदिक्षेत्र लिंग वा, तं जहा- ओयसी ओयसी लित वा, तंयसी तंयसी लित वा, वटवसी वटवसी लित वा, जरसनी जरसनी लित वा, अभिमभू अभिमभू लित वा, परिवें परिवें लित वा, पासाइर्य पासाइर्य लित वा, दरियस्यिउज़ दरियस्यिउज़ लित वा, जे यावने तपागारे तपागाराहिं भासाहिन्त बुड्या-बुड्या नो कुप्पत मान्य ते याव तपागाराहिं भासाहिन्त अभिमंक्त भासेज्ञ।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा जहा वेगळ्याइ स्वाइ पासेज्ञ, तं जहा-वृपाणि वा [फलिताणि वा पागाराणि वा तोराणि वा अग्रंताणि वा अग्रंत पागाराणि वा गड़ावाणि वा दरीवाणि वा कृदागाराणि वा पासादाणि वा नूमिगाहाणि वा रख-गिहाणि वा पवय-गिहाणि वा रखव वा चेड-कड़ थूम्स वा चेड़-कड़ आपागाणि वा आयताणि वा देयकुराणि वा जसावाणि वा पानी-गिहाणि वा पानी-सालाणि वा जान-गिहाणि वा जान सालाणि वा सूना-कक्षाराणि वा दब्ब-कक्षाराणि वा ब्य-कक्षाराणि वा ब्य-कक्षाराणि वा इंगल-कक्षाराणि वा कृष-कक्षाराणि वा सुसान-कक्षाराणि वा सति-कक्षाराणि वा सिरि-कक्षाराणि वा केंदर-कक्षाराणि वा सेलोड्याण-कक्षाराणि वा] भासाहिता ताहवि ताइ नो एवं वृद्धहृदिक्षेत्र लिंग वा जहा, तं जहा-कुक्षे लित वा पुक्के लित वा साहकडे लित वा कल्पाणि लित वा करणिज्ञेज्ञ लित वा- एतपपगारं भासं सावज्ञ जाव नो भासेज्ञ।
से **भिक्खू** वा **भिक्खुणी** वा जहा वेगाइयाँ स्वाई पासेज्जा, तं जहा वप्पाणि वा जाव **भवनगिहाणि** वा- तहावि ताइ एवं वरज्जा, तं जहा आरंबकेति ति वा सावजकेदि ति वा पयतकेदि ति वा **पासादियं पासादिए ति** वा **दरिसणियं दरिसणीए ति वा अभिमुखः अभिमुखे ति वा** पड़िवं पड़िवे ति वा-**एयप्पगां भासं असावज्जं जाव भासेज्जा।

[७१] से **भिक्खू** वा **भिक्खुणी** वा असं वा पान्ना वा खाइयं वा साइयं वा उवक्षिंदियं पेहाए तहावि तं नो एवं वरज्जा तं जहा- सुकेरि ति वा सुदुके ति वा सुहुके ति वा कल्लाेणि ति वा करिणज्जे ति वा, एयप्पगां भाूसं सावज्जं जाव नो भासेज्जा।

से **भिक्खू** वा **भिक्खुणी** वा असं वा पान्ना वा खाइयं वा साइयं वा उवक्षिंदियं पेहाए एवं वरज्जा- तं जहा-आरंबकेति ति वा सावजकेदि ति वा पयतकेदि ति वा भद्र्यं भद्रेति ति वा **उसंदे उसंदे ति वा रसिण्यं रसिणे ति वा मणुण्यं मणुणि ति वा- एयप्पगां भासं असावज्जं जाव अभुतोवधाइवं अभिकंक्ष भासेज्जा।

[७२] से **भिक्खू** वा **भिक्खुणी** वा **मणुसं वा गोणि वा महिंसा वा मिंगि वा पर्यं वा पक्षं वा सरीसिंवं वा जलयरं वा से तं परिवृत्कारयं पेहाए नो एवं वरज्जा- थूले ति वा पम्भे ति वा वदे ति वा वज्जे ति वा पाहिे ति वा- एयप्पगां भासं सावज्जं जाव भूतोवधाइवं अभिकंक्ष नो भासेज्जा।

**सुग्रज्यां-२, अज्ज्यां-४ उदेस्यो-२**

से **भिक्खू** वा **भिक्खुणी** वा **मणुसं जाव जलयरं वा से तं परिवृत्कारयं पेहाए एवं वरज्जा तं जहा- परिवृत्कारि ति वा उविचयणे ति वा धिरसंसहणि ति वा बुद्धिपूक्षाइँदिथि ति वा- एयप्पगां भासं असावज्जं जाव अभुतोवधाइवं अभिकंक्ष भासेज्जा।

से **भिक्खू** वा **भिक्खुणी** वा **विस्वक्ष्वाओ गाओ भेहाए नो एवं वरज्जा, तं जहा- गाओ दोज्जाओ ति ति वा दम्मे ति वा गोरहे ति वा छहिमा ति वा रहजोगाति ति वा-**एयप्पगां भासं सावज्जं जाव भूतोवधाइयं अभिकंक्ष नो भासेज्जा।

से **भिक्खू** वा **भिक्खुणी** वा **विस्वक्ष्वाओ गाओ भेहाए एवं वरज्जा तं जहा- जुवंिज्वे ति वा घेणू ति वा रसवती ति वा हसे ति वा महल्ले ति वा महवय ति वा संवहणे ति वा-**एयप्पगां भासं असावज्जं जाव अभुतोवधाइयं अभिकंक्ष भासेज्जा।

से **भिक्खू** वा **भिक्खुणी** वा **तहेव गंतुमुज्जाणािं पव्वायि वननि य रक्षा महल्ला पेहाए नो एवं वरज्जा तं जहा- पासायजोगाि ति वा गिहजोगाि ति वा तोरणजोगाि ति वा फलिहजोगाि ति वा अग्गल-नावा-उदग-दोणी-पीठ-यंगरें-संगल-कुलिय-जंतुकी-नाबि-गंजी-आसण-सप्तण-जाण-उवससयजोगाि ति वा, एयप्पगां भासं सावज्जं जाव भूतोवधाइयं अभिकंक्ष नो भासेज्जा।

से **भिक्खू** वा **भिक्खुणी** वा **तहेव गंतुमुज्जाणािं पव्वायि वननि य रक्षा महल्ला पेहाए एवं वरज्जा, तं जहा-जालिमंित ति वा दीहव्द ति वा महाल्या ति वा पवायसाङ्ला ति वा विद्विनसाला ति वा पासायड़ा ति वा दरिसणीए ति वा अभिमुखः ति वा पड़िवा ति वा-**एयप्पगां भासं असावज्जं जाव अभुतोवधाइयं अभिकंक्ष भासेज्जा।

से **भिक्खू** वा **भिक्खुणी** वा **वहुसंभूय वनविला पेहाए तहावि तं नो एवं वरज्जा, तं जहा- पक्तक्ति ति वा पायज्जा ति वा तैलिप्ष्यति वा ताला ति वा वेहिया ति वा, एयप्पगां भासं सावज्जं जाव भूतोवधाइयं अभिकंक्ष नो भासेज्जा।
से भिक्खु वा भिक्खुणी वा बहुसंभूया वनफला अंबा पेहाए एवं वएज्जा तं जाहा-असंध्या ति वा बहुनिविष्टमफला ति वा बहुसंभूया ति वा भूयृवा ति वा- एयप्पागां भासं असावज्जा जाव अभूतीवधायं अभिषंक भासेज्जा ।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा बहुसंभूयाओ ओसीहों पेहाए तहावि ताओ नो एवं वएज्जा तं जाहा-पक्का ति वा नौत्तया ति वा छविया ति वा लाईमा ति वा भूजजमा ति वा बहुरुखज्जा ति वा- एयप्पागां भासं सावज्जा जाव भूतीवधायं अभिषंक नो भासेज्जा ।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा बहुसंभूयाओ ओसीहों पेहाए एवं वएज्जा, तं जाहा-स्था ति वा बहुसंभूया ति वा धिरा ति वा उस्या ति वा गभिया ति वा पसूषा ति वा ससार ति वा, एयप्पागां भासं असावज्जा जाव अभूतीवधायं अभिषंक भासेज्जा ।

[७७३] से भिक्खु वा भिक्खुणी वा जहा वेगइगाइ सदाइ सुणेज्जा तहावि ताई नो एवं वएज्जा, तं जाहा- सुसंदे ति वा दुसरे ति वा, एयप्पागां भासं सावज्जा जाव नो भासेज्जा ।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा जहा वेगइगाइ सदाइ सुणेज्जा ताई एवं वएज्जा, तं जाहा-सुसंदे सुसंदे ति वा दुसरे दुसरे ति वा, एयप्पागां भासं असावज्जा जाव भासेज्जा ।

एवं स्वाई- कप्ते ति वा नीले ति वा लोहिते ति वा हालिदे ति वा, सुकिल्ले ति वा; सुखकंघो-२, अज्ञायण-४ उदेषसे-२

गंधार्- सुबिगंधें ति वा दुबिगंधें ति वा; रसाई- तित्ताणिव वा कुडुयाणिव वा कसायाणिव वा अंबिलाणिव वा महुरणिव वा; फासाई- ककझाणिव वा मउणिव वा गुरुयाणिव वा लहुयाणिव वा सीयाणिव वा उसिनणिव वा निद्वाणिव वा रुक्खाणिव वा ।

[७७४] से भिक्खु वा भिक्खुणी वा वंता कोहं च माणं च मायं च लोंभं च अनुव्री निद्वाभासी निस्ममभासी अतुरियभासी विवेगभासी समियाइ संजज्जा भासं भासेज्जा । एयं खलु तस्स भिक्खुसम वा० सामगियां जं सव्वुड़ों समिय समिय सया जज्जास्ति - लिनभमि ।

[७७५] उद्योग अज्ञायण बीओ उदेषो समतो

मुनि दीपरतनसागरेण संशोधित: सम्पादितवर्ष चउत्तय अज्ञायण समतो

पंचमं अज्ञायणं - वत्थेसणं

० पढमो - उदेषो ०

[७७६] से भिक्खु वा भिक्कुणी वा अभिकंडेज्जा वत्थं एसित्तए सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा, तं जाहा- जंगियं वा भंगियं वा साग्यं वा पोलंगं वा खोमियं वा तूकड़ं वा, तहप्पागां वत्थं वा जे निगंगियं तरुणं जुगुं बलवं अप्पार्यं चिरसंगह्यं से एंगं वत्थं धारेज्जा, नो बितियं, जा निगंगियं चा चतारिसंघाठौ धारेज्जा, एंगं दुहत्तवियर दो तित्तवित्त्याराहो एंगं चउत्तवियर्यां, तहप्पागार्हं वत्थेचं असंधिजज्जमाणिहं, अह पच्छं एगमें संसीवेज्जा ।
से भिक्खु वा भिक्खुणी वा वे जर्ज पुण वर्तमान जाने-जाने-बहुव समाज-माहण-अतिं-किवन-
वगयी मंग-पंगण-समुदो धार तहर्पार वर्तम परिसंतरंक वा अपरिसंतरंक वा
भिया नीहड़ वा अनीहड़ वा अतिंदिय वा आंतिंदिय वा परिचुत वा अपरिचुत वा आसेविं वा
अनासेविं वा-अफसुं अनेसिंजजं ति मन्नमण लाभे संते नो पिडिगहेज़जा ।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा सेजज पुण वर्तमान जाने-जाने-बहुव समाज-धार समुदो धार वर्तमान जाने-
जाने बहुव समाज-धार की वर्तम आहु चेहइ त तहर्पार वर्तम अपरिसंतरंक जाने अनेसिंजजं ति
मन्नमण लाभे संते नो पिडिगहेज़जा अह पुण एवं जाने-जाने-परिसंतरंक भिया नीहड़ जाने एसिंजजं
ति मन्नमण लाभे संते पिडिगहेज़जा ।

[७४८] से भिक्खु वा भिक्खुणी वा से जर्ज पुण वर्तमान जाने-जाने-बहुव भिक्खु-पिडिगयाप
की वा धोळ वा रत्न वा घड़ वा मंड़ वा तंत्र वा तर्कमण वा तहर्पार वर्तम अपरिसंतरंक नो
पिडिगहेज़जा अह पुणें जाने-जाने-परिसंतरंक [भिया नीहड़ अतिंदिय परिचुत आसेविं-फासुं
एसिंजजं ति मन्नमण लाभे संते] पिडिगहेज़जा ।

[७४९] से भिक्खु वा भिक्खुणी वा से जर्ज पुण वर्तमान जाने-जाने विरूसुवाईं
महद्वादमोल्लाई सं जाना- आतिं सणणी वा सहिंण-सर्नकणी वा आयकणी वा कायणी वा
सूचकखंधे-२, अज्ज्याण-५ उदेशो-१

खोमिसणी व दुग्लाणी व पल्नणी व मत्यणी व फन्नुण्णणी व अंगुणी व चौणसुणाणी व
देसारणणी व अतिं-सुणाणी व गज्जलणी व फलिसणी व कायकणी व कंबलगणी व पावाणी व,
अन्नयणी व तहर्पाराई वर्तभई महद्वादमोल्लाई-[अफसुं अनेसिंजजं ति मन्नमण] लाभे संते
नो पिडिगहेज़जा ।

से भिक्खु वा से जर्ज पुण आईणासुरणणी वर्तमान जाने-जाने, तं जाना-उद्वणी व पेसाणी
वा पेसलणी व किंमंगायणी गणी व नीलमंगायणी गणी व गोरमंगायणी गणी व कनगणी व
कनगरक्तणी व कनगक्पणी व कनगहड़णी व कनगपुसिणी वा वम्यणी व विव्यणी व आभायणी व
आभयविचित्तणी वा अन्नयणी व तहर्पाराई आईणासुरणणी वर्तमान-अफसुं अनेसिंजजं ति मन्नमण लाभे संते
नो पिडिगहेज़जा ।

[७८०] उत्करण-अवाइकम अह भिक्खु जाने-जाने चढ़हं पिडिमाहं वत्म
एसिं, तत्थ खज इमा पद्मा पिडिमा- से भिक्खु वा भिक्खुणी वा उदितिय-उदितिय वर्तम जाएक्जा तं
जाना-जंगों वा भंगों वा साघण वा पोलंग वा खोमिं वा तूकंक वा-तहर्पार वर्तम संग वा रण
जाएक्जा परो वा से देख्जा फासुं एसिंजजं ति मन्नमण लाभे संते पिडिगहेज़जा- पद्मा पिडिमा ।

अहवा दोषसा पिडिमा से भिक्खु वा भिक्खुणी वा पेसाण वातर्भ जाएक्जा तं जाना-गाहाइं
वा [गाहाहाइ-भारियं वा गाहाहाइ-भंगिनी वा गाहाहाइ-पुटं वा गाहाहाइ-धुं वा सुंह वा धाइं वा
दासं वा कैमकरं वा] कैमकरं वा से पुष्यामे आलोक्जा - आउसो तिं वा भंगिन तिं वा दाहिं
मत एतो अन्नतम वातम तहर्पार वर्तम संग वा रण जाएक्जा परो वा से देख्जा-फासुं एसिंजजं ति
मन्नमण] लाभे संते पिडिगहेज़जा- दोषसा पिडिमा ।
अहावरा तच्चा पदिमा से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेजं पुण वर्तम जागेज्ञा तं जहाँ- अंतरिज्ञां वा उत्तरिज्ञां वा तहप्पारं वर्तम सायं वा पा जाएज्ञा [परण वा से देज्ञा फासुं असणिज्ञं ति मन्नमाण लाभे संते] पडिगाहेज्ञा- तच्चा पदिमा ।

अहावरा चउम्मा पदिमा-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उद्ध्यान-धनिमयं वर्तं जाएज्ञा मं चढने बहवे समान-महगन-अतिहिकेचरण-चणिमाणा नाकंक्ति तहप्पारं उद्ध्यान-धनिमयं वर्तम सयं वा पा जाएज्ञा परो वा से देज्ञा फासुं जाव पडिगाहेज्ञा- चउम्मा पदिमा ।

इघच्यानं चउणं पडिमां [अन्नयं पडिं पडिवज्ञां नो एवं वाज्ञा मिल्ठ पडिवन्ता खेलु एते भूमितारो अहम्मे सम्म पडिवन्ते जे एते भूमितारो एचाओ पडिमाओ पडिवज्ञातां विहरति, जो य अहम्मसं एयं पडिं पडिवज्ञातां विहरति सवे वे ते उ जिणाण्डु उविड्या अन्नोण्माहातीए एवं च णं विहरति]

सिया पा एहाए एसणाए एसमाण परो वाज्ञा- तृतंते समाण । एहाएहि तुम्म मारण वा दसरण वा पंचरण वा सुए वा सुयतरे वा तो ते वंह आउसो अन्नयं वर्तः दाहामो, एयपगारं निग्न्धसं सोच्या निसम्म से पुवामेव आलोज्ञा- आउसो लित वा भहरण लित वा!, नो खेलु मे कप्पड एयपगारं संगार-वण्ण पडिवुग्नेलतए, अबकंकिन्से मे दाउ इणाणेकेव दलवाहि, से सेवं ववंतं परो वाज्ञा- आउसंतो समाण असुमाहिहि तो ते वंह अन्नत्तं वर्तः दाहामो से पुवामेव आलोज्ञा- आउसो लित वा भहरण लित वा!, नो खेलु मे कप्पड एयपगारं संगार-वण्ण पडिवुग्नेलतए अबकंकिन्से मे दाउ इणाणेकेव 

सुयकंब्धी-२, अज्ञात्यारण-५ उदेसी-२

दलवाहि से सेवं ववंतं परो णेलता वदेज्ञा- आउसो लित वा भहरण लित वा!, आहरेयं वर्तं समाणसं दाहामो, अवियाइं वंह पचाहव अपण्ण सयळ्णे पाणाइं भूवाईं जीवाईं सल्लाईं समाबस्म समुद्रसं ववं वेईसामो, एयपगारं निग्न्धसं सोच्या निसम्म तहप्पारं वर्तं- अफासुं अनेसणिज्ञं ति मन्नमाणे लाभे संते नो पडिगाहेज्ञा ।

सिया पा परो नेलता वाज्ञा- आउसो लित वा भहरण लित वा आहरेयं वर्तं-सििणाणेव वा [कक्कणं वा लोडेज्ञा वा जाव पउमेच्च वा] आर्यसिल्ता वा परसिल्ता वा समपाणयं दासामो एयपगारं निग्न्धसं सोच्या निसम्म से पुवामेव आलोज्ञा-आउसो लित वा भहरण लित वा मा एयं तुम्म वर्तं सििणाणेव वा जाव आघांसहि वा पवांसहि वा अबिकंकिन्से मे दाउ एमेव दलवाहि से सेवं ववंतसं परो सििणाणेव वा जाव आघांसिता वा पवासिल्ता वा दलेज्ञा तहप्पारं वर्तं-अफासुं जाव नो पडिगाहेज्ञा ।

से पा परो नेलता वाज्ञा- आउसो लित वा! भहरण लित वा आहरेयं वर्तं-सीओज्ञा-व्यिेण से उसिणोडग-विय्डेण वा उच्चोलेत्ता वा पथोवेल्ता वा समपाणयं दासामो, एयपगारं निग्न्धसं सोच्या निसम्म से पुवामेव आलोज्ञा- आउसो लित वा भहरण लित वा!, मा एयं तुम्म वर्तं सिओज्ञा-व्यिेण वा उसिणोडग-विय्डेण वा उच्चोलेत्ता वा पथोवेल्ता वा अबिकंकिन्से भे दाउ एमेव दलवाहि, से सेवं ववंतसं परो सीओज्ञा-व्यिेण वा उसिणोडग-विय्डेण वा उच्चोलेत्ता वा पथोवेल्ता वा दलेज्ञा तहप्पारं वर्तं-अफासुं अनेसणिज्ञं ति मन्नमाणे लाभे संते] नो पडिगाहेज्ञा ।
से ७६ परो गोल्ता एवंजा- आउसो तित वा भड़णि तित वा!, आहरें कंडगयं वा
[मूलाणि वा तयाणि वा पत्राणि वा पुष्पाणि वा फलाणि वा बीयाणि वा] हरियाणि वा विसेहिल्ता
समांस अंगों दाह्मो, एयभगाँ निग्रैंसं सोचमां निसम्म से पुवामेव आलोउजा- आउसो एयधगां
निग्रैंसं सोचमां निसम्म से पुवामेव आलोउजा- आउसो तित वा भड़णि तित वा!, मा एय कंडग व्यं
सिंदाह-वियाडें वा उसिंदाह-वियाडें वा उच्छोलेतवहि वा पधरेहि वा अभिङ्क्षि [मे दाउ एमे
दलयाहि ते सेवं व्यंतस्सम परे सीतोउं-वियाडें वा जो जाव लामे संते] नो पटिगहेंजा ।

से ७६ परो नेल्ला एवंजा- आउसो तित वा भड़णि तित वा!, आहरें कंडगयं वा जाव
हरियाणि वा विसेहिल्ता समांस अंगों दाह्मो एयभगां निग्रैंसं सोचमां निसम्म से पुवामेव
आलोउजा- आउसो तित वा भड़णि तित वा!, मा एय कंडग व्यं जाव हरियाणि वा विसेहिल्ता नो
खंगु मे कप्पक एयभगां वत्यं पटिगहेंजए से सेवं व्यंतस्सम परे कंडगयं वा जाव हरियाणि वा
विसेहिल्ता दलएंजा तहप्पगां व्यं अफासुं जाव नो पटिगहेंजा ।

सिया से परो नेल्ला व्यं निसेहिअरा, से पुवामेव आलोउजा- आउसो तित वा भड़णि
तित वा!, तुम्म चें फिं सतियं वत्यं अंतोउंतें पटिगहेंजसामि, केवली बूढा आयणमेवयं- व्यंतेंगु उ बढे
सिया कुंवले वा गुणी वा मणि वा [मोजित वा हिरण्य वा सुभुण्य वा कडगाणि वा तुड़णि वा
तिसीणाणि वा पालनाणि वा हारे वा अंहड़हारे वा एगावती वा मूलतावती वा कनगावती वा] रघुणावती वा,
पाणी वा बीए वा हाथए वा, अह मिघाणु पुवीवोँदिः [एस पड़णा एस हेत एस कारण एस उवरसो] जं
पुवामेव वत्यं अंतोउंतें पटिगहेंजजः ।

[ब्राह्मण] से मिघाणु वा मिघाणु वा सेंजं पुण वत्यं जाणेजा- साउंड [सपान सबीयं सहरियं
साँिं साऊदर्म साँउदिंग- पणग- दग-महीय-मक्कडा] संतांगं तहप्पगां वत्यं- अफासुं
सुपुक्खंधों-२, अज्ञायण-५ उदेःसो-१।

[अनैसणिह्नं ति मन्नमाणे लामे सांते] नो पटिगहेंजा ।

से मिघाणु वा मिघाणु वा सेंजं पुण वत्यं जाणेजा अपंंड [अय्यपान अप्भीयं
अप्पहरियं अप्पोंस अप्पुदंग- अप्पुतिंग-पणग-दग-महीय-मक्कडा] संतांगं अनलं अधिरं अधुंग
अधारिणिजं रोड़जंतं न रुच्छइ तहप्पगां वत्यं अफासुं जाव नो पटिगहेंजा ।

से मिघाणु वा मिघाणु वा सेंजं पुण वत्यं जाणेजा अपंंड जाव संतांगं अतं धिं धुं
धारिणिजं रोड़जंतं रुच्छइ तहप्पगां वत्यं फायुं [एसणिह्नं ति मन्नमाणे लामे सांते] पटिगहेंजा ।

से मिघाणु वा मिघाणु वा नो नवए मे वत्यं तित कठु नो बुहुदेसिएण सीणणेण वा जाव
आघंसेजज वा प्यंसेजज वा । से मिघाणु वा मिघाणु वा नो नवए मे वत्यं तित कठु नो बुहुदेसिएण
सीोदग-वियाडेण वा जाव पधोएजज वा ।

से मिघाणु वा मिघाणु वा दुबहिुंगं मे वत्यं तित कठु नो बुहुदेसिएण सीणणेण वा जाव
आघंसेजज वा, प्यंसेजज वा । से मिघाणु वा मिघाणु वा दुबहिुंगं मे वत्यं तित कठु नो बुहुदेसिएण
सीोदग-वियाडेण जाव पधोएजज वा] ।

[ब्राह्मण] से मिघाणु वा मिघाणु वा अभिङ्खेजज वत्यं आयावेट्टाव वा पयावेट्टाव वा
तहप्पगां वत्यं नो अंतरहियाव पुवीविए नो ससिण्ड्याव पुवीविए नो ससरर्खाव पुवीविए नो चिंतमंतावे
सिलाए नो चित्रंभाँते लेलूँ कोवालासंस सि दातू जीवपुढ़िए सांगं सपाणं सबौं सहरिए सउस सउदां सउतंग-पण्ण-दंग-मंडिं-मकुंडा संताणे आयावेरज वा पयावेरज वा।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अभिमंडंखेज्जा वत्थं आयावेले वा पयावेले वा तप्पगारं वत्थं शृणुसि वा शिलेलुङ्गसि वा उसुपाणसि वा कामजलसि वा अन्नयरे वा तप्पगारे अंतलिक्षाणे दुवंबे दुनिकिखेते अनिकंपे चालचले नो आयावेरज वा नो पयावेरज वा।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अभिमंडंखेज्जा वत्थं आयावेले वा पयावेले वा तप्पगारं वत्थं कुतियंसि वा मितिसि वा सिलंसि वा तेलुङ्गसि वा अन्नतरे वा तप्पगारे अंतलिक्षाणे दुवंबे दुनिकिखेते अनिकंपे चालचले नो आयावेरज वा नो पयावेरज वा।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अभिमंडंखेज्जा वत्थं आयावेले वा पयावेले वा तप्पगारं वत्थं खंधंसि वा मंचंसि वा मालंसि वा पासंयंसि वा हम्मितंलसि वा अन्नयरे वा तप्पगारे अंतलिक्षाणे जाव नो आयावेरज वा नो पयावेरज वा।

से तमादाए एगतमकक्केज्जा एगतमकक्केतात अहे झामथंडिलसि वा अंदिरासिसि किरासिसि वा तुसासिसि वा गोमवारासिसि वा अन्नयरंसि वा तप्पगारंसि थंडिलसि पप्पलहिय-पप्पलहिय पप्पलहिय पप्पलहिय तत्सं चाेमावेत वत्थं आयावेज वा पयावेज वा, एयं खलु तस्स भिक्खुस्सि वा भिक्खुणिये वा सामर्यं जं सवंदेहं समाए सहिए सया जाएजासि, लितेमि ।

पंजाबे अज्ञाणं पदमो उदेशीयेस समर्थो

० बीो - उदेशीयेस ०

[483] से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अहेसणिज्जाई वत्थाई जाएज्जा अहारपिरग्हणियाई वत्थाई धारेज्जा नो धोएज्जा नो एज्जा नो धोयर्ताई वत्थाई धारेज्जा अपलिंथमाणे गामतेनसु० ओम- सुक्कंतो-२, अज्ञाणं-५ उदेशीयेस-२

चेलिए एयं खलु वत्थधारिस्स सामर्यं।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा गहावइ-कुंलं पिंडवाय-पिंडयाई एगसिकामे सवं चीवरमायाे गहावइ-कुंलं पिंडवाय-पिंडयाई निक्केज्जा वा पविसेज्जा वा।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा बहिया वियार-भूमि वा विहार-भूमि वा निक्केमाणे वा पविसामाणे वा सवं चीवरमायाे बहिया वियार-भूमि वा विहारभूमि वा निक्केमज्जा वा पविसेज्जा वा।

से भिक्खु वा गामाणुगाम दुहुज्जमाणे सवं चीवरमायाे गामाणुगाम दुहुज्जज्जा अह पुषणेव जाणेज्जा- तित्सेसिं वा वासं वसामाणे पेहाए तित्सेसिं वा महियं सलिनिमाणन पेहाए महावाणे वा रव समुद्धुङ्ग पेहाए तित्सेसिं वा संपांगाण वा संहा-पाण सौंधा सलिनिमाणन पेहाए एवं नच्चा नो सवं चीवरमायाे गहावइ-कुंलं पिंडवाय-पिंडयाई निक्केमज्जा वा पविसेज्जा वा बहिया वियार-भूमि वा विहार-भूमि वा निक्केमज्जा वा पविसेज्जा वा गामाणुगाम वा दुहुज्जज्जा।

से भिक्खु वा भिक्कुणी वा एगायो मुहुतंग-मुहुतंग पाड़हारिये वत्थं जाएज्जा जाव एगाहें वा दुहाहें वा तियाहें वा चउहाहें वा पंघाहें वा विस्वासिय-विस्वासिय उवागच्छेज्जा, नो तप्पगारं वत्थं अप्पण गिणेज्जा नो अन्नामनस्स देज्जा, नो पांमिच्चं कुज्जा, नो वत्थेण वत्थ- रिणाणं करेज्जा, नो परं उवासकमित्तु एवं वदेज्जा- आउसंतो समाण। अभिकांसि वत्थं धारेले वा
परिहरितए वा थिरिए वा रां संतो नो पिलिचिंदिय-पिलिचिंदिय परीहेक्येज, तहपपगारं वत्थ ससाधियं तत्स चेव निसरेजेजा नो रां साइजेजेजा।

[४८४] से एगड़ो एयप्पगारं निगमों सोच्चा निसम्म जे भर्तचारो तहपपगाराणी वस्थाणी संसद्धियाणी मुहत्तम-मुहत्तं जाईल्ता एगहेजं वा दुराहेजं वा तियाहेजं वा चउयाहेजं वा पंचाहेजं वा विनवचिंग-विनवचिंग उवागचिंग तहपपगाराणी वस्थाणी नो अप्पणा गिरव्यती नो अनन्मल्लस दलवर्ती नो अनुवण्यती नो पामिःच्च कर्तित नो वत्त्येण वत्त्य-परिणामं कर्तित नो परं उवसाकमितु एवं वर्तीत- आउसंतो समाणा अमिकश्चि वत्थ धारितए वा पाघरितए वा थिरिए वा रां संतो नो पिलिचिंदिय-पिलिचिंदिय परीहेक्येज तहपपगाराणी वस्थाणी संसद्धियाणी तत्स चेव निसरेजेजं नो रां सातित्नज्ञति, से हंता अहमवती मुहत्तम पादिहारियं वरं जाईल्ता एगहेजं वा दुराहेजं वा जाव पंचाहेजं वा विनवचिंग-विनवचिंग उवागचिंगस्मादि, अविधायं एवं ममेव सियायं, माइड़ाणं संकाशो, नो एवं करेजेजा।

[४८५] से भिक्खु वा भिक्खुणी वा नो वण्णमंताईं वत्थाईं विवणाईं करेजेजaurus विवणाईं नो वण्णमंताईं करेजेजा, अन्नं वा वत्थ लहिमसामि तित कँडू नो अनन्मल्लस देजेजा, नो पामिःच्च कुज्जा, नो वत्त्येण वत्त्य-परिणामं करेजेजा नो परं उवसाकमितु एवं वेदेजेजा- आउसंतो समाणा। सममिक्षिः से वत्थ धारितए वा पाघरितए वा ?, थिरिए वा रां संतो नो पिलिचिंदिय-पिलिचिंदिय परीहेक्येज, जहागे वाइं वत्थ पावांग परो मल्लइंग, परं च रां अदलचारि पडिपे पेहाइए तत्स वस्थास निदारणा नो तेसी भीं उम्मगणें गच्छेजेजा, नो मगाओ मगं संक्मेजेजा, नो गहाँं वा वं वा दुरां वा अनुप्विसेजेजा, नो रुक्षसि दुर्लेजेजा, नो महंमहात्मसि उदयसि कायं विउसेज्जा, नो वाडः वा सरणो वा सेंंणो वा सतं सवा वा कंखेज्जां अप्पुसुए अचबिहेस्सए एगंतगणां अप्पाणा वियोसेज्ज समाहिईं तो संजयामेव गामाण्णामं दूर्जेज्जेजा।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा गामाण्णामं दूर्जेज्जाणो अंतरा से विं सियायं, सेंजं पुणं विं सुयक्कंथं-२, अज्ज्याण-५ उदेशे-२

जाणेज्जा- इमिसि खलु विहिंसि बहवे आमोगं वत्थ-पदियाई संपिन्दिया गच्छेज्जा, नो तेसी भीं उम्मगणें गच्छेज्जा जाव गामाण्णामं दूर्जेज्जेजा।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा गामाण्णामं दूर्जेज्जाणो अंतरा से आमोगं संपिन्दिया गच्छेज्जा, ते रां आमोगं एवं वेदेज्जा- आउसंतो समाणा! आहरंयं वत्थ देहं निखियवाहं तं नो देज्जा नो निखियवेज्जा नो वंदिय वंदिय जाणेज्जा नो अंजिलिं कँडू जाएज्जा नो कलुण-पदियाई जाएज्जा धम्मियाई जाणयाई जाएज्जा तुरणीयं-भावेज्जा वा उवेज्जा तं रां आमोगं संयं करणीज्जं तिं कँडू अककोस्तिः वा बंधितश्च वा अम्बितश्च वा उवरंश्च वा वत्थ अचिंचत्देज्ज वा अवहरेज्ज वा परिभेज्ज वा, तं नो गाम संसारियं कुज्जा नो सायंसारियं कुज्जा नो परं उवसाकमितु बूऱ्य आउसंतो गाहाई एं खलु आमोगं वत्थ-पदियाई संयं करणीज्जं तिं कँडू अककोस्तिः वा बंधितश्च वा अम्बितश्च वा उवरंश्च वा वत्थ अचिंचत्देज्ज वा अवहरेज्ज वा परिभेज्ज वा, एयप्पगारमं मणं वा वंडः वा नो पुराँं कँडू विहरेज्ज अप्पुसुए अचबिहेस्सए एगंतगणां अप्पाणा वियोसेज्ज समाहिईं तो संजयामेव गामाण्णामं दूर्जेज्जेजा, एं खलु तत्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणी वा सामिग्रियं जं सवंदेशहं समिहं सहितं सया जाएज्जासि, लिब्धम।

पंचमे अज्ज्याणं बीओ उदेशे समात्तो

*, पंचमे अज्ज्याणं समात्तं **

[दीपरत्नसागर संशोधितः] [१-आयारो]
छठ अज्ञायण - पाण्याणा

० पढ़ायो - उदेशी ०

[४८६] से भिक्षू वा भिक्षुणी वा अभिकर्मकेज्ञा पायं एसितते, से उज्ज पुण पायं जाणेज्ञा, तं जहा-अलापायं वा दासपायं वा महियापायं वा- तहपगारं पायं जे निवंग्यं तरुण जुगवं बलवं अपपायंके धिरसंधायने से एण्यं पायं धारेज्ञा नो बीयं।

से भिक्षू वा भिक्षुणी वा परं अद्वोकायण-मेराये पायं-पडियाये नो अभिसंधारेज्ञा गमणाय।

से भिक्षू वा भिक्षुणी वा देश्रं पुण पायं जाणेज्ञा-अस्तिसिंधियाय एण्यं साहामियं समृद्धस्य पाणाईं भुयाईं जीवाईं सत्साह समारण समुद्धस्य कीयं पामिच्चं आचेज्ञं अनिस्तं अभिहं आहुचं चेतति तं तहपगारं पायं पुरिसंतरकं वा अपुरिसंतरकं वा बहिया नीढं वा अन्रीढं वा आत्तहिङ्यं वा अणत्तहिङ्यं वा परिसुरतं वा अपरिसुरतं वा आसेविङ्यं वा मनोसेविङ्यं वा- अफायुं अनेस्णिज्ञं ति मननमाणे लाभे संते नो पडिगाहेज्ञा। जहा घिद्देषणाय तहा घठताणे आलाव्रा [भाणियव्या] पंचमे बहवे समणप पीगणिय पपणियं लहेव।

से भिक्षू वा भिक्षुणी वा देश्रं पुण पायं जाणेज्ञा-अस्सत्तं भिक्षु-पडियाये कीयं वा धोयं वा रत्लं वा घंडं वा मंदं वा संभंडं वा संधामियं वा-तहपगारं पायं अपुरिसंतरकं अबिहं नीढं अणत्तहिङ्यं अपरिसुरतं अनासेविङ्यं- अफायुं अनेस्णिज्ञं ति मननमाणे लाभे संते नो पडिगाहेज्ञा अह पुण एवं जाणेज्ञा-पुरिसंतरकं बहिया नीढं आत्तहिङ्यं परिसुरतं आसेविङ्यं-फायुं एस्णिज्ञं ति मननमाणे लाभे संते पडिगाहेज्ञा।

से भिक्षू वा भिक्षुणी वा देश्रं पुण पायं जाणेज्ञा विस्वक्ताइं महद्दानमुल्लाईं, तं सुयक्थंय-२, अज्ञायण-६ उदेशी-१

जहा- अब-पाणायणं वा तत्प-पाणायणं वा लंब-पाणायणं वा सीसव-पाणायणं वा हिरण्ण-पाणायणं वा सुवर्ण-पाणायणं वा शैरिय-पाणायणं वा हारपुण्ड-पाणायणं वा मणि-कार्य-कंस-पाणायणं वा संध-सिंह-पाणायणं वा तंत्रचेत्त-सेल-पाणायणं वा चम्म-पाणायणं वा-अनन्यायं वा तहपगारायं विस्वक्तायं महद्दानमुल्लाइं पायायं-अफायुईं अनेस्णिज्ञाइं ति मननमाणे लाभे संते नो पडिगाहेज्ञा।

से भिक्षू वा भिक्षुणी वा देश्रं पुण पायं जाणेज्ञा विस्वक्ताइं महद्दानमुल्लाईं तं जहा-अयथंधणाणे व जायं चम्मवंधणाणे वा, अनन्यायं वा तहपगारायं महद्दानमुल्लाईं- अफायुईं अनेस्णिज्ञाइं ति मननमाणे लाभे संते नो पडिगाहेज्ञा। इच्छेयं आयतायं उवाकिन्म्स अह भिक्षू जाणेज्ञाइ उठहं पडिमाहं पायं एसिततं तथा खनु हुमा पदमा पडिमा- से भिक्षू वा भिक्षुणी वा उद्दिस्य-उद्दिस्यं पायं जाएज्ञाइ तं जहा-अलाऊयं-पायं वा दास-पायं वा महिया-पायं वा तहपगारं पायं संयं वा धानाज्ञाइ जावं पडिगाहेज्ञाइ- पदमा पडिमा।

अहावरा दोषार पडिमा- से भिक्षू वा भिक्षुणी वा पेहाय पायं जाआज्ञा तं जहा- गाहावईं वा गाहावईं-भारियं वा गाहावईं-भागिणीं वा गाहावईं-पुत्रं वा गाहावईं-धूरं वा सुधं वा धारं वा दासं वा कमकरं वा कमकरं व, से पुष्यामेव आलोएज्ञा आउसो तित वा भइण लित वा, दाहिंसी मे
एतो अनन्यरे पार्यं तं जहां-लाओः-पार्यं वा दाल-पार्यं वा महिया-पार्यं वा तहपगारं पार्यं सयं वा वण जानेज्जा परो वा से देज्जा- पार्यं सयं तित मननमाणे लाभे संते पार्धिगांहे ज्जा- दोढ्चा पार्धिमा।

अहावरा तच्चा पार्धिमा- से शिक्षू वा शिक्षूणी वा सेज्जं पुण वार्यं जानेज्जा अनन्ततियं वा वेज्वतियं वा-तहपगारं पार्यं सयं वा वण जानेज्जा जाव पार्धिगांहे ज्जा- तच्चा पार्धिमा।

अहावरा चउत्था पार्धिमा- से शिक्षू वा शिक्षूणी वा उन्न्वह्य-द्विमिः-पार्यं जानेज्जा ज चधच्छ बहवे समण-माहं-अतिह-क्रियावं-वणीमा नावकंकंत तहपगारं उन्न्वह्य-द्विमिः-पार्यं सयं वा वण जानेज्जा जाव पार्धिगांहे- चउत्था पार्धिमा।

इचछ्याण चउर्ण पार्धिमाण अनन्तरं पार्धिमं पार्धिगजमाणे नो एवं वर्ण ज्जा मिच्छा पार्धिकरा खलू एते भर्यतारो अहमें सम्म पार्धिकरे जे एते भर्यतारो एयाहो पार्धिमाओ पार्धिगजलान विहरंति जो य अहमंसि एवं पार्धिमं पार्धिगजलान विहराम सद्वे वे ते उ जिणाणाजे उपविया अन्नोन्नमसमाही एवं च यं विहरंति।

से एते एसगाण एसमाण एरो पासिता वर्णा- आउसंतो समण एज्जासि तुम मासों वा दसराण वा पंचराण वा सुप वा सुपर्यें तो ते वयं आउसो अनन्तरं पार्यं दाहामो एयाणगरं निग्धों सोचा निसम्म से पुवामेव आलेज्जा- आउसो लिं वा ब्रह्मण लिं वा नो खलु मे करप्प एयाणगरं संगार-वणें पार्धिकलए अभिमकंसि मे दायु इयाणिमेव दलयाहिः से सयं वयंत परो वर्णा आउसंतो समण अनुगच्छहि तो ते वयं अनन्तरं पार्यं दाहामो से पुवामेव आलेज्जा- आउसो लिं वा ब्रह्मण लिं वा आहमें पार्यं सम्परक्ष दाहामो अविवाइं वयं पत्वाणि अपणो सय्या-एणा पाण्ये भूगाई जीवाई सत्ताई समारंभ समुदिस्स पार्यं चेइसामो एयाणगरं निग्धों सोचा निसम्म तहपगारं पार्यं-अफासुयं जाव नो पार्धिगांहेज्जा।

से ए वरो नेलता वर्णा- आउसो लिं वा ब्रह्मण लिं वा आहमें पार्यं तेल्लेन वा धाण वा सुयकंतं-२, अज्जाण-६ उदेसो-१

नवनीएन वा वसाए वा अबंकेन्ता वा तहेव विणाणादि तहेव सीओडगाईं कंदचं तहेव।

से ए वरो नेलता वर्णा- आउसंतो समण। भुष्टं-भुष्टं अच्छहि जाव ताव अभे असं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उवकरसु वा उवकहटुं वा, तो ते वयं आउसो! सपणं सम्भोयण पार्धिमगंगं दाहामो, तुच्छ पार्धिमगं दिन्ने समणसस नो सुहु साहु भवै, से पुवामेव आलेज्जा- आउसो लिं वा ब्रह्मण लिं वा, नो खलु मे करप्प आहाकम्मिं असणे वा पाणे वा खाइमे वा साइमे वा भोल्ते वा पायए वा मा उवकरेहिम उवकहंटी अभिमकंसि मे दायु एमेव दलयाहिः, से सयं वयंतस परो असं वा उवकरेतला उवकहटला सपणं सम्भोयण पार्धिमगंगं दलकरजा तहपगारं पार्धिमगंगं अफासुयं अनेसणिज्जं ति मननमाणे लाभे संते नो पार्धिगांहेज्जा।

सिया से ए वरो नेलता पार्धिमगं मिसरेज्जा से पुवामेव आलेज्जा- आउसो लिं वा ब्रह्मण लिं वा, तुम चेव एं संतियं पार्धिमगं अंतोंतें पार्धिमगंसामि, केवली बुया आयामया- अंतो पार्धिमसिं पाणणी वा बीयणी वा हरियणी वा, अह शिक्षूण पुवावलिडां एन पडणां एस हेक एस
कारण एस उवयसो जं पुववामेय पड़ियाहन्गं अतोअतेंण पड़िलेहिंज्जा। साँहांइ सवे आतावागा भाणियवा जहा कत्वेयसानए, नाणि तिल्लेण वा घवं वा नवनीणा वा वसाए वा श्यणादि जाव अन्नयरंसि वा तहप्पगारं थंडिलसि, पड़िलेहिय पड़िलेहिय पमजिय पमजिय तांठं संयजय्येव आमजजज्ञा।

एवं खलु तस्स सिंहस्युस्स वा सिंख्युणिए वा सामगिगि जं सवब्बेड़िए समिए सहिए सया जपजजसि - तिबेमि।

छैं अन्ज्ञायणं पढ़मो उदेसो समत्तो

० बीोः - उदेसोः

[४८४] सं भिक्खु वा भिक्खुणी वा गाहावड़-कुलं पिंडवाय-पिंडियाए पविक्षि समाणे पुववामेय पेहाए पड़ियाहन्गं अवहं पाणे पमजियं रयं ततो संयजय्येव गाहावड़-कुलं पिंडवाय-पिंडियाए निक्रियेजं वा पविसेज्ज वा केवली बूढा आयमाणें अतो पड़ियाहन्गं पाणे वा बीए वा हरिए वा परियावज्जेज्जा। अह भिक्खूं पुववोविद्धं एस पड़णणं एस हेड़ एस कारणं एस उवयसो जं पुववामेय पेहाए पड़ियहं अवहं पाणे पमजियं रयं तां संयजय्येव गाहावड़-कुलं पिंडवाय-पिंडियाए पविसेज्ज वा निक्रियेजं वा।

[४८८] सं भिक्खु वा [गाहावड़-कुलं पिंडवाय-पिंडियाए अनुपविक्षि] समाणे सहिया सं परो आहं अतो पड़ियाहंगं सीओंगं परिहाराळं मेइहं दलएज्जा तहप्पगारं पड़ियाहंगं परहत्यंसि वा परपारिंसि वा - अफासुंयं जाव नो पड़िहाज्जेज्जा, सं व आहंय च पड़ियहंगं स्या थिप्पामेय उदगंसि साहजेज्जा। सं पड़ियाहंगायाए पाणं परिहवेज्ज लसपणि द्याए वा णं चर्मीं नियमेज्ज।

सं भिक्खु वा भिक्खुणी वा उदउलं वा ससपण्डं वा पड़ियहं नो आमजज्जेज्ज वा पमजजेज्ज वा निलिहेज्ज वा उववेज्ज वा उवहेज्ज वा आयवेज्ज वा पयावेज्ज वा अह पुण वं जाणेज्ज - विगतोंद्र में पड़ियहं छिन्न-सिंहेमें में पड़ियहं तहप्पगारं पड़ियहं तां संयजय्येव आमजज्जेज्ज वा पयावेज्ज वा।

सं भिक्खु वा भिक्खुणी वा गाहावड़-कुलं पिंडवाय-पिंडियाए पविसिउकामें सपप्तिहामामाए गाहावड़-कुलं पिंडवाय-पिंडियाए पविसेज्ज वा निक्रियेज्ज वा। एवं बहिया वियाय चर्मीं विहारभूमीं वा सुपुक्षिंहं-२, अन्ज्ञायण-६ उदेसों-२

गामा दूहजजेज्जा तिचवेदीसीयाए जहा बिडा निक्ष्येसानए नवरं इतं पड़ियहं।

एवं खलु तस्स सिंहस्युस्स वा सिंख्युणिए वा सामगिगि जं सवब्बेड़िए समिए सहिए सया जपजजसि - तिबेमि।

छैं अन्ज्ञायणं बीोः उदेसो समत्तो

मुनि दीपरत्नसागरेन संस्थाधितः सम्पादितश्च छैं अन्ज्ञायणं समत्तं

सत्तमं अन्ज्ञायणं - ओग्गहपरिमा

० पमपो उदेसोः

[४८९] समाणे भविस्समिः अनगारे अकियारे अपुते अपसू परदत्तबोइ पायं कममं नो कारिस्समिः तिस्म समुद्राए सयं अंते। अदिर्मादाणं पर्चक्षवामिः, सं अनुभविसित्ता गामं वा नगां वा खेंड वा [कविक्क्तं वा महंबं वा पहंंणं वा दोणमूंं वा आगं वा निगमं वा आसं वा सन्तिीवं वा रायहाणं वा]-
नेव सबं अदिन्न गिर्हेज्जा नेवन्ने अदिन्न गिर्हावेज्जा नेवन्न्म अदिन्न गिर्हते वि समणुजाणोज्जा, जेहि वि सद्दि संपच्च्छे तेंसी पि याई भिक्षू छात्तंण वा मलंतं वा दंडं वा जाव चम्मुहेदगंगं वा- तेसिं पुदावेम ओगंह अणुणुनाणिविय अपिठेहिय अपमनिज्ञ नो गिर्हेज्जा वा पगिर्हेज्जा तेसिं पुदावेम ओगंह अणुणुनाणिविय पाठेहियम पमामिज्ञ तांत संजयामेव ओगिर्हेज्जा वा पगिर्हेज्जा वा।

[४९०] सेभिं ह भिक्षु वा भिक्षुणी वा आंगतारसु वा आरामागारसु वा गाहावकुलेसु वा परियावसुकं वा अनुग्योगंह जाणज्जा जे तत्थ ईसे जे तत्थ समीहेदाष्ट्रे ते ओगंह अणुणुनाणोज्जा कांम खलु आउसो अहारंदं अहापरिणांत वसामे जाव आउसे। जाव आउसंतसक्म ओगंहे जाव साहम्मिा एत्ता तार ओगंह ओगिर्हेज्जा समणुनाण उवांच्छेज्जा जे तेन सयपमेसियांय अस्ते वा पाणे वा खायिे वा साइे वा तेन ते साहम्मिा संभोज्या समणुनाण उविनमंजेज्जा, नो चेवा णं पर-पधियाए उगिज्ञिा-उगिज्ञिा उविनमंजेज्जा।

[४९१] सेआंगतारसु वा जाव वसामे जाव आउसे जाव आउसंतसक्म ओगंहे जाव साहम्मिा एत्ता तार ओगंह ओगिर्हेज्जा समणुनाण उवांच्छेज्जा जे तेन सयपमेसियांय पीटे वा फक्त वा सिज्जा वा संबंधे वा तेते ते साहिम्मिा अननसंभोज्या समणुनाण उविनमंजेज्जा, नो चेवा णं पर-पधियाए उगिज्ञिा-उगिज्ञिा उविनमंजेज्जा।

सेआंगतारसु वा जाव से किं पुणं तत्थोगिर्हसिे एवोगिर्हयिण्य जे तत्थ गाहावकुल वा गाहावकुल्पुत्तण वा मूहु वा चिप्पले वा कण्णोहाणे वा नहच्छेये वा तं अष्ट्ये एगसस अहिः एवोगिर्हयिण्य जे तत्थ साहिम्मिा अननसंभोज्या समणुनाण उविच्छेज्जा जे तेन सयपमेसियांय पीटे वा फक्त वा सिज्जा वा संबंधे वा तेते ते साहिम्मिा अननसंभोज्या समणुनाण उविनमंजेज्जा, नो चेवा णं सयं पाणिणा परपाणिणी पच्चपिपेज्जा।

[४९२] सेभिं ह भिक्षु वा भिक्षुणी वा सेजं पुणं ओगंह जाणिज्जा- अनंतरहिण्याम पुढ्वीः सूपकंथंधः-२, अज्जायण-७ उदेसो-१

ससणिद्वारे पुढवीः ससरकंथे पुढवीः चत्तंमंतारे सिलाम चत्तंमंतारा लेलुए कोलावासंसि वा दाशु जीवः

पड़िए साउंडे सपाणे सबीः सहरिए सउसे सउदे सउदिंग-पणग-दग-महिय-मककडा संताणे तहपंगारे ओगंह नो ओगिर्हेज्जा वा पगिर्हेज्जा वा।

सेभिं ह भिक्षु वा भिक्षुणी वा सेजं पुणं ओगंह जाणिज्जा धूणंसि वा गिर्हुमुगंसि वा उसुयालंसि वा कामालंसि वा अननरे वा तहप्पगारे अतिलक्ष्याय दुवबंदे [दुनिनिकित्ते अनिकंपे चलाले] नो ओगंह ओगिर्हेज्जा पगिर्हेज्जा वा।

से भिंकु वा भिंकुणी वा सेजं पुणं ओगंह जाणेज्जा कुंतियंसि वा भिंतिसि वा सिलंसि वा लेलुसि वा अननरे वा तहप्पगारे अतिलक्ष्याय दुवबंदे दुनिनिकित्ते अनिकंपे चलाले नो ओगंह ओगिर्हेज्जा वा पगिर्हेज्जा वा।
से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुणं ओगंहं जाणेज्जा-शृंधिः वा मंचिः वा मालंसि वा पासायंसि वा हंसियतांसि वा अनन्यये वा तहपपगारेः अंतलिक्षाज्ञे दुःख्ये दुःनिक्षाते अनिस्ते चलाचले नो ओगंहं ओगिन्येज्जा वा पणिण्येज्जा वा ।

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुणं ओगंहं जाणेज्जा-सझागरेः सागरिः सूदयं सालिः सख्षुद्धु सप्तुः स्वतान्त्राः नो पण्णस्स निखम्यां-पवेसाः [नो पण्णस्स वायण-पुःछन्त-परियड्ग्नाणुपेह ध्माम्याओऽगं] चिन्ताः, सेवं नच्छा तहपपगारे उव्यस्साः सझागराः जाव सख्षुद्ध-पनु-भलायणाः नो ओगंहं ओगिन्येज्जा वा पणिण्येज्जा वा ।

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुणं ओगंहं जाणेज्जा-गाहावं-कुलस्स मन्जःमज्जोः गंतुः पंये पदिब्दं वा नो पण्णस्स निखम्यां-पवेसाः नो पण्णस्स वायण-पुःछन्त-परियड्ग्नाणुपेह-ध्माम्याओऽगं चिन्ताः सेवं नच्छा तहपपगारे उव्यस्साः नो ओगंहं ओगिन्येज्जा वा पणिण्येज्जा वा ।

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुणं ओगंहं जाणेज्जा- इह खलु गाहावः वा गाहावः-पुःता वा गाहावः-धूयाः वा गाहावः-पुःहाः वा धाइयाः वा दासा वा दार्षीं वा कम्मकरा वा कम्मकरीं वा अन्नमनं अक्कोत्ति वा बंधिः वा स्रंति वा उद्वेदिः वा नो पण्णस्स जाव चिन्ताः सेवं नच्छा तहपपगारे उव्यस्साः नो ओगंहं ओगिन्येज्जा वा पणिण्येज्जा वा ।

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुणं ओगंहं जाणेज्जा- इह खलु गाहावः वा जाव कम्मकरीं वा अन्नमनंस्स गायं तेल्लेन्यं वा धृणं वा नवनीएन्यं वा वसाण्यं वा अबंगंति वा मक्खिः वा नो पण्णस्स निखम्यां-पवेसाः नो पण्णस्स वायण-पुःछन्त-परियड्ग्नाणुपेह-ध्माम्याओऽगं-चिन्ताः सेवं नच्छा तहपपगारे उव्यस्साः नो ओगंहं ओगिन्येज्जा वा पणिण्येज्जा वा ।

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुणं ओगंहं जाणेज्जा- इह खलु गाहावः वा जाव कम्मकरीं वा अन्नमनंस्स गायं सिमाणाण्यं वा कक्केण वा लोढेण्यं वा वण्णं वा चुःण्णं वा पुःमण्णं वा आंगंति वा पंयंस्ति वा उत्वेदिः वा उद्वेदिः वा नो पण्णस्स जाय चिन्ताः सेवं नच्छा तहपपगारे उव्यस्साः नो ओगंहं ओगिन्येज्जा वा पणिण्येज्जा वा ।

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुणं ओगंहं जाणेज्जा-इह खलु गाहावः वा जाव कम्मकरीं वा अन्नमनंस्स गायं सीळे-वियडंग सुःपणोलेदिः वा पुःधेरेदिः वा सयंविति वा सिंति वा सिनाव्यंति वा नो पण्णस्स निखम्यां-पवेसाः नो पण्णस्स वायण-पुःछन्त-परियड्ग्नाणुपेह-सुःकर्कठो-२, अज्ञायण-७ उदेसो-१

ध्माम्याओऽगंचिन्ताः सेवं नच्छा तहपपगारे उव्यस्साः नो ओगंहं ओगिन्येज्जा वा पणिण्येज्जा वा ।

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुणं ओगंहं जाणेज्जा-इह खलु गाहावः वा जाव कम्मकरीं वा निगण्येः ठिआ निगण्येः उत्न्येने महुःधम्मं विन्नविति रहस्यं वा मंतं मंतंति नो पण्णस्स निखम्यां-पवेसाः ।

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुणं ओगंहं जाणेज्जा-आइण्णंस्तेक्यं नो पण्णस्स निखम्यां-पवेसाः जाव - ध्माम्याओऽगं चिन्ताः सेवं नच्छा तहपपगारे उव्यस्साः नो ओगंहं ओगिन्येज्जा वा पणिण्येज्जा वा ।

एयं खलु [तत्स्स भिक्खूस्स वा भिक्खुणिण्यं वा सामगिण्यं] जं सत्कुःहं समिहं सहिः सया जप्पासि, तिपेमि ।
सत्तम्न अज्ञायणे पदमो उद्देशी समतलो

० बीओ - उद्देशी ०

[४५३] से आगंतुरेसु वा आरामागारेसु वा गाहवङ्कुसु वा परियावस्सेसु वा अनुगी ओग्हं जाणेज्जा जे तथ्य ईसरे, जे तथ्य सम्हिडाइए, ते ओग्हं अणुण्णविज्जा कामं खलु आउसो। आहालं अहापरिणायं वसामो जाव आउसो! जाव आउंसत्स्स ओग्होहो जाव साहभिम्याए ताव ओग्हं ओगरिभिसामो तेन परं विहिरिसामो से कि पुण्य?, तथ्य ओगरिहसिए एवोगरिहियंसि जे तथ्य सम्पादनवण वा माहण्णवण वा छल्टावा वा धल्वा वा चिल्विलिवा वा चम्मावा वा चम्मकोर्णावा वा चम्मछोटावा वा तं नो अंतोहिंती बाहि नीणेज्जा बहिह्याओ वा नो अंतो पवेसेज्जा, नो सुल्तान वा पणं पादिबोहेज्जा, नो तेसि किचि वि अपलतिंयं पडिनीयं करेज्जा।

[४५४] से भिक्कू वा भिक्खुणी वा अभिक्षेख्रेत्त अबवं उवाग्विहिलए जे तथ्य ईसरे जे तथ्य सम्हिडाइए ते ओग्हं अणुण्णवाणेज्जा कामं खलु आउसो जाव विहिरिसामो, से कि पुण्य तथ्य ओगरिहसिए एवोगरिहियंसि अह भिक्कू इच्छेज्जा अंबं भोलतावा वा पावा वा सेज्जं पुण्य अंबं जाणेज्जा-सांडं सपांतं सबीयं सहरियं सउसं सउदं सउतिंग-पणांग-दमां-महिह-मकंडळा संताणां तह्यङ्गारं अंबं-अफासुं अनेसणिज्जं ति मन्नमाने लाभे संतं नो पादिबोहेज्जा।

से भिक्कू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुणं अंबं जाणेज्जा- अपपं जाव संताणां अतिरिच्छिच्छं अवोच्छिच्छं- अफासुं अनेसणिज्जं ति मन्नमाने लाभे संतं नो पादिबोहेज्जा।

से भिक्कू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुणं अंबं जाणेज्जा अपपं जाव संताणां तिरिच्छिच्छं अवोच्छिच्छं- फासुं एसणिज्जं ति मन्नमाने लाभे संतं पादिबोहेज्जा।

से भिक्कू वा भिक्खुणी वा अभिक्षेख्रेत्त अबसिङ्गत्तं अबवं अबपंसियं वा अवंचोयं वा अबसाङं वा अबंडगं वा भोलता वा पावा वा सेज्जं पुणं जाणेज्जा- अबसिङ्गत्तं वा जाव अबंडगलं वा सांडं जाव संताणां अफासुं अनेसणिज्जं ति मन्नमाने लाभे संतं नो पादिबोहेज्जा।

से भिक्कू वा भिक्खुणी वा से उजं पुणं जाणेज्जा- अबसिङ्गत्तं वा जाव अबंडगलं वा अपपं जाव अपनूलंग पण-दमां-महिह-मकंडळा संताणां अतिरिच्छिच्छं अवोच्छिच्छं-अफासुं अनेसणिज्जं ति मन्नमाने लाभे संतं नो पादिबोहेज्जा।

से भिक्कू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुणं जाणेज्जा अबसिङ्गत्तं वा जाव अबंडगलं वा अपपं सुयक्षथयो-२, अज्ञायण-५ उद्देशी-२

जाव संताणां तिरिच्छिच्छं अवच्छिच्छं-फासुं जाव लाभे संतं पादिबोहेज्जा।

से भिक्कू वा भिक्खुणी वा अभिक्षेख्रेत्त उच्चुज्जवं उवाग्विहिलए, जे तथ्य ईसरे [जे तथ्य सम्हिडाइए ते ओग्हं अणुण्णवाणेज्जा कामं खलु आउसो अहालं अहापरिणायं वसामो जाव आउसो जाव आउंसत्स्स ओग्होहो जाव साहभिम्याए ताव ओग्हं ओगरिभिसामो तेन परं विहिरिसामो] से कि पुणं तथ्य ओगरिहसिए एवोगरिहियंसि अह भिक्कू इच्छेज्जा उच्चुं भोलता वा पावा वा सेज्जं पुणं उच्चुं जाणेज्जा सांडं जाव मकंडळा संताणां तह्यङ्गारं उच्चुं-अफासुं अनेसणिज्जं ति मन्नमाने लाभे संतं नो पादिबोहेज्जा। अतिरिच्छिच्छं तहेवे, तिरिच्छिच्छं एवि तहेव।

से भिक्कू वा भिक्खुणी वा अभिक्षेख्रेत्त अंतर्पुंयं वा उच्चुंगणियं वा उच्चुंचोयं वा उच्चुसाङं वा उच्चुंदगलं वा भोलता वा पावा वा सेज्जं पुणं जाणेज्जा- अंतर्पुंयं वा जाव इगलं वा
सांठ सपाट सबीं सहरिय सउस सउद्र सउतिंग-पणग-ंग-महिं-मककडासंसातांग- अफासूं अनेसणिणजं तिं मनमाणे लाभे संते नो पहऱ्याहेजऱा।

से भिखू वा भिखुणी वा सेजं पुण जाणेज्जा- अंतरचुंयं वा जाव डगळ महिं-
मककडाीसंसातांग अतिरिच्छिण्णं अवोच्छिण्णं- अफासूं अनेसणिंजं तिं मनमाणे लाभे संते नो पहऱ्याहेजऱा।

से भिखू वा भिखुणी वा सेजं पुण जाणेज्जा - अंतरचुंयं वा जाव डगळ वा अप्पंं जाव तिरिच्छिण्णं वोच्छिण्णं- फासूं एसणिंजं तिं मनमाणे लाभे संते पहऱ्याहेजऱा।

से भिखू वा भिखुणी वा अभिमंखेज्जा ल्हसुणवं उवागळिछतए, तहेव तिन्न वि आलावगा, नवं ल्हसुण।

से भिखू वा अभिमंखेज्जा ल्हसुण वा ल्हसुण-कंंद वा ल्हसुण चोयगं वा ल्हसुण-लालगं वा शोळं वा पाए वा सेजं पुण जाणेज्जा ल्हसुण वा जाव ल्हसुण-लालगं वा सांठ [सपाट सबीं सहरिय सउस सउद्र सउतिंग-पणग-ंग-महिं-मककडासंसातांग-अफासूं अनेसणिंजं मनमाणे लाभे संते] नो पहऱ्याहेजऱा। एवं अतिरिच्छिण्णं नेविति तिरिच्छिण्णं जाव पहऱ्याहेजऱा।

[४९५] से भिखू वा भिखुणी वा आग्नेयसू वा आभारासूस वा गाहावड़ कुलेसू वा परियावसेहु सु वा अनुवीं ओगळं जाणेज्जा- जाव एयोगऱ्यांसि, जे तथ। गाहावड़ं वा गाहावड़पुत्तां वा इच्छेयां आयातणां उवाङ कंंम अं हिक्ख जाणेज्जा, इमांहि सत्तां हिडमांहि ओगळं ओगऱ्यांत तर्थ खलु इमा पटमा पठिणा :-

से आग्नेयसू वा आभारासू वा गाहावड़ कुलेसू वा परियावसेहु सु वा अनुवीं ओगळं जाणेज्जा-जे तर्थ इमांहि जे तर्थ समंहऱ्यां ते ओगळं अणुवणविज्जा कां म खलु आउसो आहालंद आहारणणं वसांमो जाव आउसो जाव आउसंतस ओगळो जाव सदृमया एता ताव ओगळं ओगऱ्यांसिमं सतुणं परं विहिःसां-मो पठमा पठिणा।

अहारारा दोंच्या पठिणा- जर्सं भिखुसं एवं बवळ अं च खलु अन्नेसिम भिखुणी
अडा ओगळं ओगऱ्यां ओगऱ्यांसिम, अन्नेसिम भिखुणी ओगळं ओगऱ्यां ओगऱ्यांसिम- दोंच्या पठिणा।

अहारारा तंच्या पठिणा-जर्सं भिखुसं एवं बवळ अं च खलु अन्नेसिम भिखूं अडा
ओगळं ओगऱ्यांसिम अन्नेसिम भिखूं ओगळं ओगऱ्यां ओगऱ्यांसिम-तंच्या पठिणा।

सुयक्षं-२, अज्ज्यांण-७ उद्देसो-२

अहारारा चउत्था पठिणा- जर्सं भिखुसं एवं बवळ अं च खलु अन्नेसिम भिखूं
अडा ओगळं ओगऱ्यां ओगऱ्यांसिम ओगळं ओगऱ्यां ओगऱ्यांसिम- चउत्था पठिणा।

अहारारा पंच्या पठिणा- जर्सं भिखुसं एवं बवळ अं च खलु अप्पणो अडा ओगळं
ओगऱ्यांसिम नो दोंचं नो दोंचं नो चउत्थं नो पंच्यं- पंच्या पठिणा।

अहारारा छळा पठिणा- से भिखू वा भिखुणी वा जससें ओगळं ओगऱ्यां ओगऱ्यांसिम जे तत्था
अहासम्मनणं तं जहा-इक्कडे वा [कठिणं वा जंतुं वा परों वा मोरों वा तणं वा जाव विध्यले वा]
पलाले वा तस्स लाभे संवेदणज्ञा, अलामे उक्कदत वा नेसक्ज्ञावा वा विहरेज्जा- छळा पठिणा।
अहावरा सत्तमा पड़िमा- से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहासंघदेव ओगम हाकेजा
tंजहा-पुढ़विसिंिं वा कड़िसिं वा अहासंघदेव तसस लामे संवसेजा, तसस- अलामे उक्कुओ वा
नेसज्जों वा विहिंज्जः- सत्तमा पड़िमा।

इच्छेतासि सत्तमां पड़िमां अन्यमं जहः पिंडेसणा।
[एं खलु तसस भिक्खुस्स वा भिक्खुणी वा सामगिं जं सव्वेहि समिए सहिए सया
जपेजासि-लित बेमि]।

सत्तमे अज्ञात्यणे बीओ उदेसी समतातो
मुँि दीपरत्नसागरेण संशोधिति- सम्पादितशष सत्तम्म अज्ञात्यण समतां

• पड़मा चूळा समताता •

अज्ञात्यण- ठाण सतितकक्य

० बीया चूळा-पड़म सतितकक्य ०

[4९५] से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिक्षेज्जा ठाण ठाइलतए, से अनुतिक्षेज्जा गाम वा
नगरां वा [खेडः वा कब्बाडः वा मड़बं वा पट्टण वा दोपामुह वा आगरां वा निगम वा आसम वा
सलिसवेसव वा] रायहाणी वा से अनुपविसिता गाम वा जाव रायहाणी वा, सेजं पुण ठाण जावेज्जा- सांईद [संपान
वीिं सहरिं सहं सउँ सउदं सउलिं-पणं-दग-महिं-मकक्की] संताणं तं तह्पंगां ठाणं- अफासुं
अनेसाणिं ति मनस्मां लामे संते नो पौडगाइहा।

एवं सिज्जागमेिण नेयंबं जाव उदयपुसूयाित।

इच्छेयाई आयाताणाई उत्तिकम्मे अह भिक्खू इच्छेज्जा चउहि पिंडमाहि ठाण ठाइलतए,
लतिम्या पड़मा पड़िमा। अपिंतं खलु उवसजज्ञसाभि अवलंबिससाभि काणि विपरिककममिससाभि
सवियां ठाणं ठाइसभि लित पड़मा पड़िमा।

अहावरा दोच्चा पड़िमा- अपिंतं खलु उवसजज्ञसाभि अवलंबिससाभि काणि विपरिकक-मिससाभि
नो सवियां ठाणं ठाइसभि लित दोच्चा पड़िमा।

अहावरा तच्चा पड़िमा- अपिंतं खलु उवसजज्ञसाभि नो अवलंबिससाभि नो काणि
विपरिककममिससाभि नो सवियां ठाणं ठाइसभि लित तच्चा पड़िमा।

अहावरा चउत्था पड़िमा- अपिंतं खलु उवसजज्ञसाभि नो अवलंबिससाभि नो काणि
विपरिककममिससाभि नो सवियां ठाणं ठाइसभि लित वोइकाँके वोइक अस-मंसु-लोम-नहे सलिसवं वा
सुपक्कंघी-२, अज्ञात्यण-८ [सतितकक्य-४]

ठाणं ठाइसभि लित चउत्था पड़िमा।

इच्छेयासि चउहं पड़िमां अन्यमं पड़िं पदिवज्जमाणे नो एवं एजजा भिक्खा
पाडिवन्ना जाव पारमणितराण विहिंज्जः नेव किंचि वि एजजा, एंि खलु तसस भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए
वा सामगिं जं सव्वेहि समिए सहिए सया जपेजासि - लित बेमि।

अज्ञात्यण समतां

मुँि दीपरत्नसागरेण संशोधिति- सम्पादितशष बीया चूळा पड़म सतितकक्य समतां
नवम अज्ञायण - निसीहियासतिक्रमं

० बीयारे चूलारे - बीअं सतिक्रमं ०

[498] से भिक्षु वा भिक्षुणी वा अभिमिक्षेज्जा निसीहियां फासुंयं गमणाए, से उजं पुणं निसीहियां जाणेज्जा-सांहं [सपानं सबैयं सहरियं सउसं सउदं सउदिंग पण्ण-दग्ध-महिय-] मककडासंतायं तहण्णगारं निसीहियां-फासुंयं अस्तित्विण्णजं ति मन्नमाणे लामे संते नो चेत्तसामि ।

से भिक्षु वा भिक्षुणी वा अभिमिक्षेज्जा निसीहियां गमणाए सेज्जं पुणं निसीहियां जाणेज्जा- अप्पडं अप्पपाणं जाव मककडासंतायं तहण्णगारं निसीहियां- फासुंयं एसणिण्णजं ति मन्नमाणे लामे संते चेत्तसामि ।

एवं सिज्जागमेण नेयवं जाव उदयपपुवाईं । जे तत्थु दुवग्गा तिवग्गा चउग्गा रंच वग्गा वा अभिसंधारिति निसीहियां गमणाए ते नो अनन्नमाणस कायं आलिणिज्जा वा विलिणिज्जा वा चुंबिज्जा वा दंतेहि वा नहेहि वा अचिंछदिज्जा वा कुचिंछोः,

एवं खतु तस्य भिक्षुपुस्त वा भिक्षुणिए वा सामग्रियं जं सवडेहि समिण सहिण सया सया जाणेज्जा, सेयमिण मणेज्जासि - तित्तेमि ।

नवम अज्ञायण समतं

मुनि दीपरत्नसागरेण संशोधितं: समपादितत्व बीयारे चूलारे बीअं सतिक्रमं समतं

दसम अज्ञायण - उच्चरचारपावसणसतिक्रमं

० बीयारे चूलारे - तड़यं सतिक्रमं ०

[499] से भिक्षु वा भिक्षुणी वा उच्चरचारपवसण-किरियाए उबवाहिज्जमाणे सवस्स पाय्युंचक्स अस्तिः तओ पच्छा साहमियं जाणेज्जा ।

से भिक्षु वा भिक्षुणी वा सेज्जं पुणं थंडिलं जाणेज्जा- सांहं सपानं [सबैबं सहरियं सउसं सउदं सउदिंग-पण्ण-दग्ध-महिय-] मककडासंतायं तहण्णगारंसि थंडिलसिं नो उच्चरचारपवसं वोसिरेज्जा ।

से भिक्षु वा भिक्षुणी वा से उजं पुणं थंडिलं जाणेज्जा- अप्पडं अप्पपाणं जाव संतायं तहण्णगारंसि थंडिलसि उच्छर पावसं वोसिरेज्जा ।

से भिक्षु वा भिक्षुणी वा सेज्जं पुणं थंडिलं जाणेज्जा- असिंपायाए एवं साहमियं समुद्रिसं सपाण्ण भूसाई जीवाई सताई समारंभ समुद्रिसं कीयं पामिच्छं अचछेज्जं अवोसंबं अभिहं सुयकंधं-२, अज्ञायण-१०, [सतिक्रमं-३]

आहु उद्देसिणं चेंढङ तहण्णगारं थंडिलं पुरिनतरकं वा अपुरिनतरकं वा अत्तिं वा अनूतिं वा परिमुर्तं वा अपरिमुर्तं वा आसेविं वा अनासेविं वा अनत्वरिणं वा तहण्णगारंसि थंडिलसि नो उच्छर-पावसं वोसिरेज्जा ।

से भिक्षु वा भिक्षुणी वा से उजं पुणं थंडिलं जाणेज्जा- असिंपायाए बहवेस साहमियं समुद्रिसं सपाण्ण० समारंभ समुद्रिसं कीयं जाव अचछेज्जं अनिसंबं अभिहं आहु उद्देसिणं चेंढङ
तहप्पगारं शंकिं पुरिसंतरकं वा जाव अनासेविं वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारं शंकिं लसि नौ उच्चारपासवं वोसिरेजा।

से भिक्षु वा वाे से ज्ञं पुणं शंकिं जाणेजा- असिङ्दित्याय एयं साहिमिन्यं समुद्रिस्स पाणां समारब्ध समुद्रिस्स कीयं जाव चेष्टं तहप्पगारं शंकिं पुरिसंतरकं वा जाव अनासेविं वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि शंकिं लसि नौ उच्चारपासवं वोसिरेजा।

से भिक्षु वा ज्ञं पुणं शंकिं जाणेजा- असिङ्दित्याय एयं साहिमिन्यं समुद्रिस्स पाणां समारब्ध समुद्रिस्स कीयं जाव आहुदु देशियं चेष्टं तहप्पगारं शंकिं पुरिसंतरकं वा जाव अनासेविं वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि शंकिं लसि नौ उच्चारपासवं वोसिरेजा।

से भिक्षु वा भिक्षुरी वा से ज्ञं पुणं शंकिं जाणेजा- असिङ्दित्याय एयं साहिमिन्यं समुद्रिस्स पाणां भूयां जीवां सत्तां जाव देशियं चेष्टं तहप्पगारं शंकिं पुरिसंतरकं जाव बहिया अनीहं वा उच्चारपासवं वोसिरेजा।

से भिक्षु वा भिक्षुरी वा से ज्ञं पुणं शंकिं जाणेजा- असिङ्दित्याय एयं वा अर्थं वा पामच्छियं वा छण्डं वा घंटं वा बांधं वा लिंतं वा संभं वा संपृच्छियं वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि शंकिं लसि नौ उच्चारपासवं वोसिरेजा।

से भिक्षु वा भिक्षुरी वा से ज्ञं पुणं शंकिं जाणेजा, इह खबु गाहावी वा गाहावइ-पुता वा कंदाणि वा मूलणि वा जाव हरियणि वा अंतरातो वा बाहु नोमितं बहियाओ वा अंतो सारनति अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि शंकिं लसि नौ उच्चारपासवं वोसिरेजा।

से भिक्षु वा भिक्षुरी वा से ज्ञं पुणं शंकिं जाणेजा- खंडंसि वा नैंसि वा मंचंसि वा मान्सि वा अन्नसि वा पासायंसि वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि शंकिं लसि नौ उच्चारपासवं वोसिरेजा।

से भिक्षु वा भिक्षुरी वा से ज्ञं पुणं शंकिं जाणेजा- अनंतरिहया पुढंवी वा सरिणिध्वाय पुढीवी संसरखाए पुढंवीए महंथयामकादाय मििलंताए सििलाए मििलंताए सेलुङाए कोलावारसि वा दास्यसि जीिवियांसि संबंंदंसि समानंसि सबींसि सहियांसि सउंसि सउंदंसि सउंदंति-पण्ण-दंग-महंथि-मक्कडांसताणंसि अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि शंकिं लसि नौ उच्चारपासवं वोसिरेजा।

सुपकस्ट्री-२, अज्ञातन्य-१०, [संस्करण-३]

[५००] से भिक्षु वा भिक्षुरी वा से ज्ञं पुणं शंकिं जाणेजा- इह खबु गाहावी वा गाहावइ-पुता वा कंदाणि वा [मूलणि वा तयाणि वा जाव फलाणि वा] बीयाणि वा परिशारङ्गु वा परिसाहिति वा परिसहितसि वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि शंकिं लसि नौ उच्चारपासवं वोसिरेजा।

से भिक्षु वा भिक्षुरी वा से ज्ञं पुणं शंकिं जाणेजा- इह खबु गाहावी वा गाहावइ-पुता वा साल्णि वा वीहीणि वा मुगसणि वा मासाणि वा तिलाणि वा कूलथणि वा जवाणि वा
जवज्ञानी वा पतिरिसंस्ति वा पतिरिसंस्ति वा अन्नयरंसि वा तप्पगारंसि थंडिलसि नो उच्चारपावसं वोसिरेज्जा।

से भिख्नु वा भिक्षुनी वा सेज्जु पुण थंडिं जाणेज्जा- आवस्थानि वा धाराणि वा भिनुपाणि वा विजुपाणि वा खायुपाणि वा कट्याणि वा पंगाणि वा दरीणि वा पदुगाणि वा समाणि वा विसमाणि वा अन्नयरंसि वा तप्पगारंसि थंडिलिसि नो उच्चारपावसं वोसिरेज्जा।

से भिख्नु भिक्षुनी वा भसे ज्जु पुण थंडिं जाणेज्जा-माणुसंरंधाणि वा महिस-करणाणि वा वसंभ-करणाणि वा असस-करणाणि वा कुकुक़-करणाणि वा वालव-करणाणि वा वद्वन-करणाणि वा तत्तित-करणाणि वा चक्कव-करणाणि वा अन्नयरंसि वा तप्पगारंसि थंडिलिसि नो उच्चारपावसं वोसिरेज्जा।

से भिख्नु वा भिक्षुनी वा सेज्जु पुण थंडिं जाणेज्जा-आरामाणि वा उद्जाणाणि वा वनाणि वा वनसंहाणि वा देवकुलाणि वा समाणि वा पवाणि वा अन्नयरंसि वा तप्पगारंसि थंडिलिसि नो उच्चारपावसं वोसिरेज्जा।

से भिख्नु वा भिक्षुनी वा से ज्जु पुण थंडिं जाणेज्जा अहातळाणि वा चरियाणि वा दाराणि वा गोपुराणि वा अन्नयरंसि वा तप्पगारंसि थंडिलिसि नो उच्चारपावसं वोसिरेज्जा।

से भिख्नु वा भिक्षुनी वा से ज्जु पुण थंडिं जाणेज्जा- प्रियाणि वा चउक्काणि वा चच्चाणि वा चम्पुहाणि वा अन्नयरंसि वा तप्पगारंसि थंडिलिसि नो उच्चारपावसं वोसिरेज्जा।

से भिख्नु वा भिक्षुनी वा से ज्जु पुण थंडिं जाणेज्जा- इगलावहेरु वा खाराहेरु वा मदयंडाहेरु वा मदयभूभिरमु वा मदयचेर्मू वा अन्नयरंसि वा तप्पगारंसि थंडिलिसि नो उच्चारपावसं वोसिरेज्जा।

से भिख्नु वा भिक्षुनी वा से ज्जु पुण थंडिं जाणेज्जा- नदीआयणेसु वा पंकायणेसु वा ओङायणेसु वा संयणहसि वा अन्नयरंसि वा तप्पगारंसि थंडिलिसि नो उच्चारपावसं वोसिरेज्जा।

से भिख्नु वा भिक्षुनी वा सेज्जु पुण थंडिं जाणेज्जा- न्यहासु वा महिय-खानियासु नवियासु वा गोपलेहियासु गवायणेसु वा खानेसु वा अन्नयरंसि वा तप्पगारंसि थंडिलिसि नो उच्चारपावसं वोसिरेज्जा।

से भिख्नु वा भिक्षुनी वा से ज्जु पुण थंडिं जाणेज्जा- दंगवचचसि वा सागवचचसि वा मूलगचचसि वा हस्तक्षचचसि वा अन्नयरंसि वा तप्पगारंसि थंडिलिसि नो उच्चारपावसं वोसिरेज्जा सुयकृंधो-२, अन्नयण-१०, [सत्तिकर्ष्य-३]

से भिख्नु वा भिक्षुनी वा से ज्जु पुण थंडिं जाणेज्जा- असणवनसि वा सणवनसि वा धायवनसि वा केरयवनसि वा अबयवनसि वा असोगवनसि वा नागवनसि वा पुन्नागवनसि वा अन्नयरेसु वा तप्पगारेसु पत्तोवेसु वा पुष्कोवैपसु वा फलोवेसु वा बीओबेसु वा हरीओबेसु वा नो उच्चार पावसं वोसिरेज्जा।
[901] से भिक्खु वा भिक्खुणी वा सपातयं वा परपायं वा गहायं से तमायाएः
एगतमवक्कमेज्जः अनायाःसि असंलोयांसि अप्पांसि मक्कासंताणाःसि अहारांसि वा उवस्यांसि
तओ संजयसेव उच्चायापस्वाम वोसिरेज्जः, से तमायाएः एगतमवक्कमेज्जः अनायाःसि जाव मक्कासंताणाः
संताणाःसि अहारांसि वा ज्ञामेयिडलिसि वा अन्नयांसि वा तह्पपगाराः शंकिलिसि अचित्ताः
तओ संजयसेव उच्छायापस्वाम वोसिरेज्जः।

एयं खनु तत्से भिक्खुज्जः वा भिक्खुणी वा सामाजिकं जं सत्त्वेदेहि समिश सही ततसा
जाएजासि - लिताबेमि।

दस्मं अज्ञायणं समातां
मुनि दीपरत्नसागरेन संस्थोपितं- सम्पादितश्च बीयाई चूलाई तद्यं सतित्त्वकं समातां

एगारसमं अज्ञायणं - सदसतित्त्वकं

१० बीयाई चूलाई- चतुर्थ सतित्त्वकं १०

[902] से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अहावेगिडाइ सदाइ सुपेड, तं जहा- मुईगसदाणि वा
लंदीसदाणि वा झलीसदाणि वा अन्नयाणि वा तह्पपगाराणि विस्ववाणि वितताइं सदाइ कण्णसोय-
पडियायाए नो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अहावेगिडाइ सदाइ सुपेड, तं जहा- बीणा-सदाणि वा विपंची-
सदाणि वा बद्दीस-सदाणि वा तुणुस-सदाणि वा भरण-सदाणि वा भुतावणी-सदाणि वा दंकु-सदाणि वा
अन्नयाणि वा तह्पपगारा विस्ववाइं सदाइ वितताइं कण्णसोय-पडियायाए नो अभिसंधारेज्जा
गमणाए।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अहावेगिडाइ सदाइ सुपेडतं जहा- ताल-सदाणि वा अंकसताल-
सदाणि वा लक्षित-सदाणि वा गोहि-सदाणि वा किरिकिर-सदाणि वा अन्नयाणि वा तह्पपगाराइं
विस्ववाइं तालसदाइ कण्णसोय पडियायाए नो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अहावेगिडाइ सदाइ सुपेडतं जहा-संख-सदाणि वा वेणु-
सदाणि वा वंस-सदाणि वा खरमुहि-सदाणि वा पितिपिर-सदाणि वा अन्नयाणि वा तह्पपगाराइं
विस्ववाइं सदाइ कुसिराइं कण्णसोय-पडियायाए नो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

[903] से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अहावेगिडाइ सदाइ सुपेडतं जहा-क्षप्पाणि वा
फतिहाणि वा उपपाणि वा पल्लाणि वा उज्ज्वाराणि वा बिज्ज्वाराणि वा वावीणि वा पोक्षाराणि वा
दीहियाणि वा गुजालियाणि वा ताराणि वा सागाराणि वा सरपत्याणि वा सरससरपत्याणि वा अन्नयाणि वा
तह्पपगाराइं विस्ववाइं सदाइ कण्णसोय-पडियायाए नो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अहावेगिडाइ सदाइ सुपेडतं जहा- कच्छा-णि वा नूमाणि वा
गहनाणि वा बनाणि वा बनादुगाणि वा पव्याणि वा पव्यादुगाणि वा अन्नयाणि वा तह्पपगाराइं
सुयक्षंधो-२, अज्ञायण-११, [सतित्त्वकं-५]

विस्ववाइं सदाइं कण्णसोय-पडियायाए नो अभिसंधारेज्जा गमणाए।
से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाि सदाइ सुगठित तं जहा-गामाि वा नगराणि वा निगमाणि वा रायहाणि वा आसाम-पुंज-सन्निवेदाणि वा अन्यराि वा तह्पगाराि विस्वसवाि सदाि कण्णसोय-पिंडयाि नो अभिसंधारेज्जा गमणाि।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाि सदाइ सुगठित तं जहा-आरामाणि वा उज्जाणि वा वनाणि वा वनस्पदानि वा देखक्काणि वा समाणि वा पत्राणि वा अन्यराि वा तह्पगाराि विस्वसवाि सदाि कण्णसोय-पिंडयाि नो अभिसंधारेज्जा गमणाि।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाि सदाइ सुगठित तं जहा-द्वाणि वा अहाल्याणि वा चारियाणि वा दाराणि वा गोपुराणि वा अन्यराि वा तह्पगाराि विस्वसवाि सदाि कण्णसोय-पिंडयाि नो अभिसंधारेज्जा गमणाि।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाि सदाइ सुगठित तं जहा-नियाणि वा चुञ्चाणि वा चच्चाणि वा चठमुहाणि वा अन्यराि वा तह्पगाराि विस्वसवाि सदाि कण्णसोय-पिंडयाि नो अभिसंधारेज्जा गमणाि।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाि सदाइ सुगठित तं जहा- महिस्माणि-करणाणि वा वसभद्राणि-करणाणि वा असभद्राणि-करणाणि वा हत्यवद्राणि करणाणि वा [कुकंडद्वाणि-करणाणि वा मक्कडद्वाणि-करणाणि वा लावद्वाणि-करणाणि वा वद्यद्वाणि-करणाणि वा तितितस्य-करणाणि वा कवोयद्वाणि-करणाणि वा] कविजलद्वाणि-करणाणि वा अन्यराि वा तह्पगाराि विस्वसवाि सदाि कण्णसोय-पिंडयाि नो अभिसंधारेज्जा गमणाि।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाि सदाइ सुगठित तं जहा- महिस-जुहाणि वा वसभजूहाणि वा असस-जुहाणि वा हतिख-जुहाणि वा कुकंड-जुहाणि वा मक्कड-जुहाणि वा लाव-जुहाणि वा वद्य-जुहाणि वा तितित-जुहाणि वा कवोय-जुहाणि वा] कविजल-जुहाणि वा अन्यराि वा तह्पगाराि विस्वसवाि सदाि कण्णसोय-पिंडयाि नो अभिसंधारेज्जा गमणाि।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाि सदाइ सुगठित तं जहा- जूहिय-द्वाणि वा हयजूहिय-द्वाणि वा गयजूहिय-द्वाणि वा अन्यराि वा तह्पगाराि विस्वसवाि सदाि कण्णसोय-पिंडयाि नो अभिसंधारेज्जा गमणाि।

[५०४] से भिक्खु वा० अहावेगइयाि सदाइ सुगठित तं जहा- अकखायद्वाणि वा माणुमामाणि-द्वाणि वा महायढ़ि-नढ़-गीय-वाड़ि-तंति-तल-ताल-चुड़ि-पुड़ि-वाड़ि-द्वाणि वा अन्यराि वा तह्पगाराि विस्वसवाि सदाि कण्णसोय-पिंडयाि नो अभिसंधारेज्जा गमणाि।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाि सदाइ सुगठित तं जहा- कलहाणि वा चिंबाणि वा डमाणि वा दोरजाणि वा वेरजाणि वा विस्वरजाणि वा अन्यराि वा तह्पगाराि विस्वसवाि सदाि कण्णसोय-पिंडयाि नो अभिसंधारेज्जा गमणाि।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाि सदाइ सुगठित तं जहा-खुड़ियं दारीं-परिभूत-मंडियं अलंकारं नितुढ़माणि पेंतं एं वा पुरिंस वहे नीणज्ञमाणि पेंतं अन्यराि वा तह्पगाराि विस्वसवाि सदाि कण्णसोय-पिंडयाि नो अभिसंधारेज्जा गमणाि।

सुखक्षेत्र-२, अज्ञायण-११, [सत्तिक्रयं-४]
से भिक्षु वा भिक्षुणी वा अन्ननिराव विवृत्तवाह जमानताः एवं जापेज्जा तं भजः

से भिक्षु वा भिक्षुणी वा अन्ननिराव विवृत्तवाह जमानताः एवं जापेज्जा तं भजः

यथौ निी न स्त्री देवी नुनाष्टे स्त्री न जापेज्जा तं भजः नुनाष्टे स्त्री न जापेज्जा तं भजः

यथौ निी न स्त्री देवी नुनाष्टे स्त्री न जापेज्जा तं भजः नुनाष्टे स्त्री न जापेज्जा तं भजः

वित्तिक्षा एवं विवृत्तवाह जमानताः एवं जापेज्जा तं भजः

वित्तिक्षा एवं विवृत्तवाह जमानताः एवं जापेज्जा तं भजः
साइप नो तं नियमे।

से सिया परो पादाङ लोद्रेण वा कक्केन वा चुण्णेन वा वण्णेन वा उल्लोलेण वा उववेलेज वा- णों तं साइप नो तं नियमे। से सिया परो पादाङ सीोद्ग-वियडेन वा उसिणोद्ग-वियडेन वा उच्छोलेज वा पथोएज वा नों तं साइप नो तं नियमे। से सिया परो पादाङ अननयरेण विलेवण-जाएण आलिपेज वा विलिपेज वा नों तं साइप नो तं नियमे।

से सिया परो पादाङ अननयरेण धूण्ण-जाएण धूवेज वा पधूवेज वा- नों तं साइप नों तं नियमे। से सिया परो पादाङो खाण्य वा कंटय वा नीहरेज वा विसोहेज वा- नों तं साइप नों तं नियमे। से सिया परो पादाङ मूं वा सोणिय वा नीहेज वा विसोहेज वा- नों तं साइप नों तं नियमे। से सिया परो कायं आमजेज वा पमजेज वा- नों तं साइप नों तं नियमे। से सिया परो कायं लोद्रेण वा संबाहेज वा पलिम्देज वा- नों तं साइप नों तं नियमे। से सिया परो कायं लोद्रेण वा कक्केन वा चुण्णेन वा वण्णेन वा उल्लोलेज वा उववेलेज वा, नों तं साइप नों तं नियमे। से सिया परो कायं सीोद्ग-वियडेन वा उसिणोद्ग-वियडेन वा उच्छोलेज वा पहोएज-वा नों तं साइप नों तं नियमे।

से सिया परो कायं अननयरेण विलेवण-जाएण आलिपेज वा विलिपेज वा, नों तं साइप नों तं नियमे। से सिया परो कायं अननयरेण धूण्ण-जाएण धूवेज वा पधूवेज वा, नों तं साइप नों तं नियमे। से सिया परो कायंसि वण्ण आमजेज वा पमजेज वा- नों तं साइप नों तं नियमे। से सिया परो कायंसि वण्ण संबाहेज वा पलिम्देज वा- नों तं साइप नों तं नियमे। से सिया परो कायंसि वण्ण संबाहेज वा मक्खेज वा बिलिपेज वा, नों तं साइप नों तं नियमे।

से सिया परो कायंसि वण्ण-लोद्रेण वा कक्केन वा चुण्णेन वा वण्णेन वा उल्लोलेज वा उववेलेज वा, नों तं साइप नों तं नियमे। से सिया परो कायंसि वण्ण सीोद्ग-वियडेन वा उसिणोद्ग-वियडेन वा उच्छोलेज वा पथोएज वा, नों तं साइप नों तं नियमे। से सिया परो कायंसि वण्ण वा गंड वा अरड़ वा पुल्य वा भगलं वा अननयरेण सत्य-जाएण अचिंदेज वा विचिंदेज वा- नों तं साइप नों तं नियमे। से सिया परो कायंसि वण्ण अननयरेण सत्य-जाएण अचिंदितता वा विचिंदितता वा पूण्य वा सोणिय वा नीहरेज वा विसोहेज वा। नों तं साइप नों तं नियमे।

से सिया परो कायंसि गंड वा अरड़ वा पिडंय वा भगलं वा आमजेज वा पमजेज वा- नों तं साइप नों तं नियमे। से सिया परो कायंसि गंड वा अरड़ वा पिडंय वा भगलं वा संबाहेज वा पलिम्देज वा, नों तं साइप नों तं नियमे।

से सिया परो कायंसि गंड वा अरड़ वा पिडंय वा भगलं वा तेलेज वा धण्ण वा वसाए वा मक्खेज वा बिलिपेज वा, नों तं साइप नों तं नियमे। से सिया परो कायंसि गंड वा अरड़ वा पिडंय वा भगलं वा लोद्रेण वा कक्केन वा चुण्णेन वा वण्णेन वा उल्लोलेज वा उववेलेज वा, नों तं साइप नों तं नियमे। से सिया परो कायंसि गंड वा अरड़ वा पिडंय वा भगलं वा सीोद्ग-वियडेन वा उसिणोद्ग-वियडेन वा उच्छोलेज वा पथोएज वा, नों तं साइप नों तं नियमे।

से से परो कायंसि गंड वा अरड़ वा पिडंय वा भगलं वा अननयरेण विलेवण-जाएण आलिपेज वा विलिपेज वा- नों तं साइप नों तं नियमे। से से परो कायंसि गंड वा अरड़ वा पिडंय वा भगलं वा अननयरेण धूण्ण-जाएण धूवेज- वा पधूवेज वा- नों तं साइप नों तं नियमे। से से परो सुप्रसंवादं-२, अज्जायण-१३, [सत्तिकरण-६]
कार्यसिः गंगा व अरध्यं वा पिड्यं वा भगंदलं वा अन्नयरेण सत्य-जाएणं अचिंद्देज्ञ वा विचिंदेज्ञ वा-

नों तं साइंग मों तं नियमे ।

से सिया परो कार्यसिः गंगा व अरध्यं वा पिड्यं वा भगंदलं वा अन्नयरेण सत्यजाएणं अचिंद्देज्ञ वा विचिंदेज्ञ वा अन्नयरेण सत्यजाएणं अचिंद्दित्वा वा विचिंदित्वा वा पूर्णं वा सौंध् वा नीहरेज्ञा वा विसंहेज्ञा वा- नों तं साइंग मों तं नियमे । से सिया परो कार्यसिः संयं वा जल्लं वा नीहरेज्ञा वा विसंहेज्ञा- नों तं साइंग मों तं नियमे । से सिया परो अधिकमनं वा कण्णमनं वा अंतमानं वा नहमानं वा नीहरेज्ञा वा विसंहेज्ञा वा- नों तं साइंग मों तं नियमे । से सिया परो दीहाईं बालाईं दीहाईं बोमाइं दीहाईं भ्रमुहाईं दीहाईं कक्षरोमाईं दीहाईं वत्तिरोमाईं कप्पेज्ञा वा संधेज्ञा वा- नों तं साइंग मों तं नियमे । से सिया परो सीसाओ निक्खं वा जूंयं वा नीहरेज्ञा वा विसंहेज्ञा वा- नों तं साइंग मों तं नियमे ।

से सिया परो अंकिणं वा पतिंयंकिणं वा तुयाहावेता पादाइं आमजेज्ञा वा पमजेज्ञा वा-

नों तं साइंग मों तं नियमे । एवं हिंदिमो गमो पायाईं भागिण्यमो ।

से सिया परो अंकिणं वा पतिंयंकिणं वा तुयाहाविता हारं वा अदाहारं वा उदर्थं वा गैवेयं वा मउंदं वा पांतं वा सुवार्णसुलं वा आविशेज्ञा वा वितिधेज्ञा वा-नों तं साइंग मों तं नियमे । से सिया परो आरामसिः वा उज्ञारासिः वा नीहरेता वा पवित्ते वा पायाईं आमजेज्ञा वा पमजेज्ञा वा-

नों तं साइंग मों तं नियमे । एवं नेत्यवा अन्नमननकिरिमा वि ।

[१००] से सिया परो सुंद्रणं वा वड़-बलेणं तेड्यं आउद्रे, से सिया परो असुंद्रणं वा वड़-

बलेणं तेड्यं आउद्रे, से सिया परो गिलानिमस सचित्ताणं वा कंदाणं वा मूलाणं वा तथाणं वा

हरियाणं वा खण्डितुं वा कडंशतुं वा कडंशबेतुं वा तेड्यं आउद्रे-नों तं साइंग मों तं नियमे ।

कडंशबेत्यामा पाण-भूय-जीव-सत्ता वेदं वेदंति ।

एवं खलु तस्मिभिख्युस्मस वा भिख्युणीए वा सामविनियं जं सत्त्वत्वाति समिते सहिते सदा

जाए संयमिणि मन्नेज्ञासि - तित्वेमि ।

तेसस्मा अज्ञायेण समत्तः
मुनि दीपर्तसागरेण संस्थोधितं सम्पादितश बीयाए चूलाए छंदं सत्तिकक्तयं समत्तः

चउदिस्मा अज्ञायेण - अन्ननमननकिरियासत्तिकक्तयं

० बीयाए चूलाए-सत्तमं सत्तिकक्तयं ०

[१०२] से भिखुं वा भिखुणीं वा अन्ननमननकिरियं अज्ञाथिरं संसेसियं-नों तं साइंग

नों तं नियमे । से अन्नन्मनं पादाइं आमजेज्ञा वा पमजेज्ञा वा-नों तं साइंग मों तं नियमे । से सं-

मों तं चेव । एवं खलु तस्मिभिख्युस्मस वा भिखुणीए वा सामविनियं जं सत्त्वत्वाति समिते सहिते सदा जाए

संयमिणि मन्नेज्ञासि-तित्वेमि ।

चउदिस्मा अज्ञायेण समत्तः
मुनि दीपर्तसागरेण संस्थोधितं सम्पादितश बीयाए चूलाए सत्तमं सत्तिकक्तयं समत्तः

बीयाचूलासमत्ता

सुयकंधयं-२, अज्ञायेण-१३, [सत्तिकक्तयं-६]
पनरसमं अज्ञायणं - भावणा

• तड़या चूला •

[९०९] तेनं कालेन तेनं समांन तेनं सम्पण भगवं महावीरं पंचहत्युत्तरे याविः होत्या,
हत्युत्तराहिः चुए चिूला गवं वक्तंते, हत्युत्तराहिः गव्यभा गवं गव्यं साहिरं, हत्युत्तराहिः जाए, हत्युत्तराहिः नववो सजवत्मानं जागरानं अनागरियं पतवण्डे, हत्युत्तराहिः कसिसं पुहत्यूण्यं अवगाहाणं
निरावरणं अनंते अमुलते केवलवनराणदसं समुपण्णो, साइण्यं भगवं परिनिखुए ।

[९१०] सम्पण भगवं महावीरं इमाए ओसस्तिपणीं- सुसमुसमामं सभाम वीड़कंतापे
सुसमामं सभाम वीड़कंतापे सुसमुसभाम्य सभाम वीड़कंतापे सुसमुसभाम्य सभाम भुव वीड़कंतापे-
पण्णहत्तरिए बाईसंह मात्तिः य अद्भवमंहिः ससेसिंह जे गिमहाणं चउर्थे मासं अभ्ये पख्चे-
आसादसुदुः पलसं आसादसुभद्युस्त क्षीवपक्षेणं हत्युत्तराहिः नवक्तंते जोगमुवण्ययानं महाविवय
सिद्धत्वपुनुक्तर-पवर- पुरविया-दिसाओवत्तत्य-वड्यमाणयो महावियमाणयो वीवूं सागरोवमाइ सुआं पांवतां
आउक्तं संभवक्षयं चित्तःक्षयं चुए चिूला इह खलु जवबूढीवे दीवे बासे वासे दाशिण्डामहृणे
दाशिण्माणकुंडसुर सन्निधेवससं उसवमंदतस्म सामहाण्स कोडाल-सगोलतस्स्म देवांनदेक भामींए
जालंधायण-सगोलतापे सीवमभव्यानं अप्पाण्यं कुटिचिंसि गवं वक्तंते ।

सम्पण भगवं महावीरं तिन्नाणोगन्वागे याविः होत्या- चइस्साणमित्य जाणइ, चुएमित्य जाणइ, चयमाणे न जाणइ, सुहुमे णं से काले पननते ।

तओ णं समापस सभगवाम महावीरसं अनुकंपणं णं देवं णं जीवमें तित कइ जे से
वासाण तच्छे मासे पंवमे पख्चे- आसोवबुले तस्सं आसोवबहलस तेसीपक्षेणं हत्युत्तराहिः
नवक्तंते हिं जोगमुवण्ययान बासीत्तिः हिं राइंदए हिं वीड़कंतेहिः तेसीइम्स साइंदियस्स परियाणे वहमाणे
दाशिण्माणकुंडसुर-सन्निधेवससं उत्तरखितिकुंडसुर-सन्निधेवससं नायाणं खितियाणं सिद्धस्तस्स
खितिययसस कासवगोलतस्स लिसलाख खितियाणीं वासिः-सगोलतापे असुभाणं पुरण्णाणं अवारं केरला
सुभाणं पुरुगाणं पख्चे चित्तः माणं साहइ, जेविं से लिसलाखितियाणीं कुटिचिंसि
गवं तपिं य दाशिण्माणकुंडसुर-सन्निधेवससं उसवमंदतस्म माण्सस कोडाल-सगोलतस्स देवानंदेक
भामीए जालंधायण-सगोलतापे कुटिचिंसि साहइ ।

सम्पण भगवं महावीरे तिन्नाणोगन्वागे याविः होत्या- साहरिजिस्साणमित्य जाणइ, साहरिजिस्साणमित्य जाणइ, साहरिजिस्साणमित्य जाणइ विन जाणइ समाणाः।

तेनं कालेन तेनं समामं तिसलाखितियाणीं अह अन्यधः कयाइ नवनमाणसं बुपुण्डि-
पुण्णाणं अद्भवमाणयान राइंदियाणयान वीतिकंतापे जे से गिमहाणं पद्मं मासं दोवें पख्चे- चेत्तसुदे तस्सं
चेत्तसुदेस्स तेसीपक्षेणं हत्युत्तराहिः नवक्तंते जोगोवण्ययानं समं भगवं महावीरं अरोगं अरोगं पसूं।

जं णं राइं तिसलाखितियाणीं समं भगवं महावीरं अरोगं अरोगं पसूं तणं राइं
भवणव-वायामंतर-जोडिस्स-विमाणवालिसेवीं हं देवीं हं अवयंतेहिं य उपपंतेहिं य एगे मं दिवे
देवुज्जृए देव-सन्निधावं देवकुक्तें उपप्तंंगुभाग याविः होत्या ।

सुवकंखों-२, अज्ञायण-१५, [चूंला-३]
जन रायनी तिसला खातिमापी समान भगवं महावीर आरोग्यों पशुया तरण रायणी बहवे देवा य देवियो य एंग मवनास च गंधवासं च चुज्यवासं च पुफवासं च इरणवासं च रणवासं च वासिसु ।

जन रायणी तिसला खातिमापी समान भगवं महावीर आरोग्यों पशुया तरण रायणी भववइङ्ग-वाणमंतर-जोइसिय-विमाणवासिणो देवा य देवियो य संभास्स भगवो महावीरस्स सुक्कम्माइं तित्ययम्सीयें च करिसु ।

जोगया परिधिं समान भगवं महावीरे तिसलाले खातिमापीए कुंचंसि गवबं आगेव तोगया परिधिं तु कुलं विपुलं हरिंगं संवरणं सघंगं धनंज्यं माणिक्यं मोरितं संख्य-सिन-पवासण अईव-अईव परिवर्त्दढ़ ।

तोगया परिधिं समान्यो महावीरस्स अम्मापियो एयमंई जानेल्ला निव्वत्त-दसाहिं वोक्कंतसि सुपेयूंसि विपुलं असन-पान-खायन-साइम उवक्कवादेवति, उवक्कवादेवतां भवहे समान-माहण-कवित्त-वणमग-भिहच्चुक्कं-पंढरगातीण विवज्ञंतं विवृत्तं विस्साणीं दायर्युं दां पनजयांति विच्छिन्नितं विवृत्तिं विस्साणिणीं दायर्युं पनं दार्यं पनजयांति भिल्ल-इयांति, भुजवादेत प्रमत्त-नाय-सय-संविधागण भागमेयुं नामयेयुं कारविति ।

जोगया परिधिं इमे कुमारे तिसलाले खातिमापीए कुंचंसि गवबं आहुए तोगया परिधिं इमे कुलं विद्वलं हरिंगं संवरणं सघंगं धनंज्यं माणिक्यं मोरितं संख्य-सिन-पवासण अईव-अईव परिवर्त्दढ़ तो होत एंगया कुमारे वदमाणे ।

तोगया एंगया समान्यो महावीरे पंद्वादतिपरिवुं, तं जहा-कौरवथाइयं मणजणाधाइयं मंडणाधाइयं खेल्लावणाधाइयं अंकनाधाइयं अंकनाधाइयं सहवाहि मणिकोर्दित्तेन गिरिकंदर-समुन्लीण व चंपयाप्यव अहानुपुवींन संविधागः ।

तोगया एंगया समान्यो महावीरे विवणार्थपरिवं विविष्ययतबलभावे अगुसंसवाईयं उरालई माणुसागाऐं पंचशबंकवाइं कामभोगाईं सत-फरिस-रस-स्त्र-गंधाइं परियारामाणे एवं एंगया विवर्य ।

[991] समान्यो महावीरे काव्यगोल्टे तस्त एंगया तिन्ना नामथेजाय एमाहिज्ञति तं जहान-अम्मापिउष्टिते वदमाणा, सह-समुन्लुए समाणे, भीम महाभरेव उसलं अवेलं परिसंह सहदं तित कझुः डेवेहि से नामं कयं समाणे भगवं महावीरे ।

समाणस्स एंगया महावीरसस्स पिखा काव्यगोल्टे तस्त एंगया तिन्ना नामथेजाय एमाहिज्ञति तं जहा-सिज्ञत्ते तित वा, सेज्जसे तित वा, जससे तित वा ।

समाणस्स एंगया महावीरसस्स अम्मा वासिक-सगोल्टा तीसे एंगया तिन्ना नामथेजाय एमाहिज्ञति तं जहा-तिसलाय तित वा विदेहदन्ना तित वा दियकारिणी तित वा ।

समाणस्स एंगया महावीरसस्स पिलित्यय सुपासे काव्यगोल्टे, समाणस्स एंगया महावीरसस्स जेसे भया नंदिम्बडं काव्यगोल्टे, समाणस्स एंगया महावीरसस्स जेसे भया नंदिम्बं काव्यगोल्टे, समाणस्स एंगया महावीरसस्स भज्जा जसोया कोर्णागोल्टे ।

समाणस्स एंगया महावीरसस्स धूधा काव्यगोल्टे तीसे एंगया दो नामथेजाय एमाहिज्ञति
तं जहा-अनोजजा ति वा, पियदसणा ति वा। समणस सं भगवो महावीरस्स नतुई कोशिगोत्तेण, तीसे सं दो नामघेज्जा जवमािङ्जजति तं जहा- सेसवंति ति वा जसवंति ति वा।

[912] समणस सं भगवो महावीरस्स अम्मापियरो पासावविचज्जा समणोवसगा यावि होत्या, ते सं बहु वासां नमणोवसग्निपरियां पालिङ्टा छण्ण जोविनिकायणं संरक्षणनिहितं आलोक्ता स्मितिता गहितां पाठिककमितां आहारिं उत्तरगुणं पायबिख्तं पाडविज्जतं कुसंसंगं कुरुहितां भतं पचकवायिति भतं पचकवायितं अनुविष्मा रामणितां रामर-संलेहणं जौसियसीसा कालमासे कालं किच्चा तं सर्वं विपक्षहितां अच्चुए कपे देवत्ता उव्वणा, ता सं एक्कत्तुं भवक्षणं ठिकूः चढ़त्ता महाविदेहवासं चारेणं उत्सवसुणं सिङ्ज्ञाससंति बुझ्जसंति मुख्यसंति परिनिवायकसंति संवतुक्यूणमां करिसंति।

[913] तेंकं कालेणं तेनं ससणं ससणं भगवं महावीरे नाते नायपुरे नायकुल-विविष्ठत्ते-विवेशे विवेषिणे विवेषत्ता बिभेसुमासे तीसं बासां विवेषिति कटु अगारम्भज्जे विसिता अम्मापियरं कालगाहं देवलोगमनुप्तिीं समतुप्पणं चिच्छां हिरणं चिच्छां सुव्वणं चिच्छां बलं चिच्छा वाहत्तां चिच्छां घणं-घणं-कणम-कणम-सं-सार-साधज्जे विच्छूद्धणं विगोविता विस्वामिता दाञ्छरुं दालं दाइत्ता परिभाषां संवंचरं दलित्ता जे से हेमंताणं पटमे मासे पटमे पक्ष-बंगसिरबुले तस्स णं मंगसिरवणलस समसीपक्षेण ह्यउळत्ताणं नक्लेणं जोगोवगाणं अमिनिक्षणमणाभिप्पाण यावि होत्या।

[914] संवंच्चनेण होहितं अमिनिक्षणं तु जिनविद्िस्त।
तो अत्य-संपदाणं पववलई पुववसुराण।

[915] एगा हिरणकाडी अडेव अनुलयं सयसहस्त।
सुरोदयमाइंं दिजजं जा पायरायो ति।

[916] तिनेव य बोहसिया अढासीति च होहतं कोडीओ।
असिति य सयसहस्तं एय संवंचचरे दिन्न।

[917] वेसमारुकव्तधं देवा लोगाण्या महिङ्जीया।
बोहिति य तित्यथं पन्नरससु कम्भ-भूमिमु।

[918] बंभम्मि य कप्पम्मि य बोदत्वा कणहराणो मझे।
लोगाण्या विमाणो अहसु स्त्वा असखेरजा।

[919] एदेवनिकाया भगवं बोहिति जिनवं तीरं।
सतवगजाविहिंं असरं! तित्यथं पववलैह।

[920] तओ संमणस्स भगवो महावीरस्स अमिनिक्षणमणाभिप्पाणं जागेता भवणवं-वानंतया-जोडसिय-विमाणवासिणो देवा य देवीयो य सरहं-सरहं वेरहं सरहं-सरहं नेवर्येहं सरहं-सरहं चिमेहं सत्विङ्जीए सत्वजुतीए सत्वबस्मुदरैं सयसा-सयसा ज्ञान विमाणाइं दुस्हतां सयसा-सयसा ज्ञानविमाणाइं दुस्हतिता आहाबाराइं पोगगलाइं परिसािवति, आहाबाराइं पोगगलाइं परिसािवतें आहासुहुमैं पोगगलाइं परिसािवति, आहा-सुहुमैं पोगगलाइं परिसािवता उडूं उपायंति उडूं उपायंता ताते उवक्ष्ताए।
जोगेव उत्तरकहतियकूलपुर-सन्निवेस्ते तेघ उगाचछित तेघ उगाचछिताना जोगेव उत्तरकहतियकूलपुर- 
सन्निवेस्ते उत्तरपुरपुरीमे दिसीभाला तेघ भाष्तिवेगेन उवधिया।

तत्स श देवचंदयस्य बुमजादेसभारां एवं महापाथीं नानामणिकनाग 
रयणभृतितिं सुमं चारकस्तुवं सिहासन सियूवः, सियूविता जोगेव चारक भगवं महाविं तेघ 
उगाचछित, तेघ उगाचछिताना समां भगवं महाविं तिकनूवं आयाहिण पन्याहिण करेग, समां भगवं 
महाविं तिकनूवं आयाहिण पन्याहिण करेगता समां भगवं महाविं वंदित नमसित।

वंदिता नमसिता समां भगवं महाविं गहया जोगेव देवचंदयस्य तेघ उगाचछित, 
उगाचछिताना सणियं-सणियं पुरुषार्थरमुहं सीहासने नसीयावः, नसीयाविता सयाग-सहस्तरपागः 
तेलेलिह सुभांगित, सुभांगिता गंधकसारायं उल्लोलित उल्लोलिता सुसूदैरं मजजावः, मजजाविता 
जसस श नुतल सयसहस्त्ते श तिपडलटितितिण साहित्यण सीतारण गोसीसरलतवंदणेण्य अनुवितित, 
अनुलिपिता इसी निस्सावावावाजस्य वर्नरपथपुरुङ्गायं कुसलनरपसितयं अस्स-लालपेलब 
छेयारितकनाषवाचितम कमं हंसलखकण पडजुरवं नियंतावः नियंताविता हारं अद्धारं दस्तमं 
नैयातिं पांलसुल-पद-मुद-रयणमावायं आविधावित, आविधाविता गंधिम वेळिम पुरिम संधारितेण 
मलणं कप्प्यसुखमित संमालकरेट समालकरेट दोचीपण महया वेदवियसमूनहायं समधहणडो।

समधहणडो एवं महां चंदणं शिरम शस्त्रवाहिण विसूवः, तं जहा- 
प्ल्यामिय-उभभ- 
नुर-नर-मकर-विहर-वानर-कुजर-रक-सर-कमर-सहसी-वालव-भृत्ता चित्त लग विजाहर-मिहुन- 
जुयलजत-जोगजतं अधीसहस्तसमालिणयं सुहिणवित्त-सितिसितित-सुवगसहस्तकलितं इसी भिमान 
भिमभिममणं चक्कुल्योण-लेसं मुत्ताहल-मुत्ताजलांवरितयं तवीनी-पवरलबूम-पतंबल मुलदां 
हारद्वार-मूसुणसमोणयं आहियस्यकणों उमलयभृतिपितं असोगलयभृतिपितं कुंदलयभृतिपितं 
नागालयभृतिं विक्रियं सुमं चारकस्तुवं नानामणिष-एसरणांगाटाडाय-परिमिडियगांसिरं पाबाटिमं 
दरिणमणं सुरूवः।

[931] सीया उवणीया जिनवरस्स जरमरणविप्पमणक्स।
[932] सभिराया मजजायरा दिवम वरणस्वविचिङ्गः।
[933] आधूमालमुडः भसुरूंदी वराभमागारी।
चछ्टे उ भत्तेण अज्ञावसानपण सोहनेण जिनो ॥
लेदाहि विशुच्छततो आशहु उत्तरं सीयं ॥
सीहासने निविष्ठो सककीसाण य दोहं पासेर्मो ॥
दीर्घरति चामासाहि मणिर्यणविस्तत्तदाहि ॥

सुयकखंडो-२, अज्ञार्य-१५, [चूला-३]

पुलविं उक्खततामानुसःहि साहुरोमकैवेहि ॥
पच्छा वहति देवा सुरासुरगल्लामिदा ॥
पुरो तुर वहति असुर पुण दाहिणं म्वामि ॥
अवेरे वहति गरला ना गु पुण उत्तरे पासे ॥
वनसंढ व कुसुमियं पउसमसरो वा जहा सरयकाले ॥
सोहइ कुसुमभरेणं इय गगनयतं सुरागणे ॥
सिद्धत्यवं वा जहा कणियारवं व चंपागवं वा ॥
सोहइ कुसुमभरेणं इय गगनयतं सुरागणे ॥

वरपहीर्ज्ञालरि-संख्यसस्तसिःहि तूरेहि ॥
गगनतले वागितले तुर-निनादो परमसमो ॥

तत्वतितं घनज्ञुसिं आउज्ञ घउविं बहुविंहियं ॥
वाक्यति तथ देवा बहुं आनिङगसहिः ॥

[९३२] तेन वालाने तेन मम भं से खेतेर पदमे मासे पदमे पक्षे- मग्नसिर-बुधुले
तत्त्स तं मग्नसिरहुलसस्त दसमीपक्षणु सुवां दिवसकेतु मूहत्तैं हत्युहतराहि नकक्तत्तेन
जोगोगमस्तु औहीकारणु मृत्स्तु मृत्स्तु हत्युहतराहि नकक्तत्तेन

[९३३] दिव्वो मनुसाधोसो तुरियिनादो य सकक्तबणे ॥
मनपज्ञानानां नामं नाने समुपपन्नने- अड़ाइजेमहे दीवहं दोहि य समुद्देहं सन्नोनीं पंचदियान पञज्ञानानां विचलत्मचमसुणां मनोगायां भावायद्व जानइ।

तओ ध दमों समयं भगवं महावीरस सामायं खाओवसमयं चारितं पद्वन्यस्स सुयकविक्षे-२, अज्ञानेण-१९, [चूला-३]

तओ पां समयं भगवं महाभाग सब्रमयं खाओवसमयं संबंधिन्यं पद्ववसमयं खाओवसमयं महावीरस सामायं खाओवसमयं चारितं पद्वन्यस्स सुयकविक्षे-२, अज्ञानेण-१९, [चूला-३]

तओ पां समयं भगवं महाभाग सब्रमयं सब्रमयं संबंधिन्यं पद्ववसमयं खाओवसमयं चारितं पद्वन्यस्स सुयकविक्षे-२, अज्ञानेण-१९, [चूला-३]
य देखि य ओवते हि य जाव उष्णलगभूए यावि होत्या, तो ाणे बागे महावीरे उष्णनान- 
दसनाथे अपराणां च लोकं च अभिमन्युक पूर्वं देवाणं धम्ममामाधिकतं, तो अपराणे भारुसंहारं... 
तो ाणे बागे महावीरे उष्णनानदसनाथे गोयमाईः समापन्त निगमाणानं पंच 
महावशाखां साधवाकाई छातीजीनिविकाखाई आईखाई भासाई परवें, तं ज्ञायः पूर्वविक आउकाए तेवकाए 
वावकाए वाशसाकाए तसकाए ।

[936] पदमं भंते! महावयं-पच्चकाखामि सवं पाणाइवायं- सुभुमं वा बायं वा तसं वा 
थारं वा-नेव तसं पाणाइवायं करेजा नेवनःनेहि पाणाइवायं करेवजा नेवनःनें पाणाइवायं करंं समणु 
सुयक्षंदा-२, अन्यायां-३, [वृता-३]

जाणेज्ञ जावजीवावे तिविहं तिविहेणं- मणसा वयस्सा कायसा तससं भंते, पडिकामामि निदामि 
गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ।

तस्तिसमाओ पंच भावाओ भवितं, तत्त्वया पद्मा भावान- इरियासिमाई से निगमं नो 
इरियाअसिमाई तित, केवली बुधा इरियाअसिमाई से निगमं पाणाइ भूढाई जीवाई सत्ताई अभिमाणेज्ञ वा 
वर्तन्तज्ञ वा परियावेज्ञ वा लेसिज्ञ वा उदवेज्ञ वा, इरियासिमाई से निगमं नो इरियाअसिमाई तित 
पद्मा भावाना ।

अहावारा दोच्चा भावाना- मणं परिजाणाई से निगमं, जे य मणे पावे सावज्ञ सकिरिए 
अन्यकरे छेतकरे भेदकरे अधिकरणि अपासिमाई पारितिणविए पाणाइवाइए भूषोपाइए- तहप्पगारं मणं नो 
पधारेज्ञा गमणाए मणं परिजाणाित से निगमं, जे य मणे अपावे तित दोच्चा भावाना ।

अहावारा तच्चा भावाना- वईं परिजाणाई से निगमं, जे य वईं पाविया सावज्ञ सकिरिया 
जाव भूषोपाइया तहप्पगारं वईं नो उच्चारिज्ञा, जे वयं परिजाणाई से निगमं, जा य वईं अपावियतित 
तच्चा भावाना ।

अहावारा चउत्या भावाना- आपणाबंभांतलनिकवेणाई सर्माई से निगमं नो आपणाबंभांतल- 
निकवेणाध्य सर्माई केवली बुधा- आपणाबंभांतलनिकवेणाध्यसर्माई से निगमं पाणाइ भूढाइ जीवाइ 
सत्ताइ अभिमाणेज्ञ वा जाव उदवेज्ञ वा तम्हा आपणाबंभांतलनिकवेणाध्य सर्माई से निगमं नो 
आपणाबंभांतल-निकवेणाध्य असर्माई तित चउत्या भावाना ।

अहावारा पंचमा भावाना- आलोइयानभोजयाभोजय से निगमं, नो आनालोइया पानभोजयाभोजय, 
केवली बुधा-आनालोइयानभोजयाभोजय से निगमं पाणाइ भूढाइ जीवाइ सत्ताइ अभिमाणेज्ञ वा उदवेज्ञ 
वा तम्हा आलोइयानभोजयाभोजय से निगमं, नो आनालोइयानभोजयाभोजय तित पंचमा भावाना ।

पतवन्वत पडमे महावर सम्म कारण फासाई पाविए तितमि अवड्डि आपाए आराहिया यावि भवहँ, पडमे भंते! महावर पालाइवायाओ देवर्माण ।

[937] अहावारं दोच्चं भंते महावयं-पच्चकाखामि सवं मुसावायं वडदोसं- से कोहा वा लोहा 
वा भवा वा हासा वा नेव सवं मुसं भासेज्ञा नेवनःनें मुसं भास्वावेज्ञा अनन्त पि मुसं भासंतं न 
समणुजाणेज्ञा जावजीवावे तिविहं तिविहेणं- मणसा वयस्सा कायसा तससं भंते पडिकामामि निदामि 
गरिहामि अप्पाण वोसिरामि।
तत्सिमाओं पंच भावनाओं भवति तथिमा पदमा भावना- अनुविभासी से निगंग्ये, नो
अनुविभासी केवली बृहाय-अनलुविभासी से निगंग्ये, सामावदेज़ा मौसं वयणाए, अनुविभासी से निगंग्ये
नो अनलुविभासिति पदमा भावना ।

अहारा दोच्छा भावना- कोहं परिजाणइ से निगंग्ये नो कोहेन सिया, केवली बृहाय-
कोहपते कोही सामावदेज़ेजो मौसं वयणाए, कोह परिजाणइ से निगंग्ये न ये कोहेन सियति दोच्छा
भावना ।

अहारा तच्छा भावना- लोभा परिजाणइ से निगंग्ये नो य लोभेन सिया, केवली बृहाय-
लोभपते लोभी सामावदेज़ा मौसं वयणाए लोभ परिजाणइ, से निगंग्ये नो य लोभेन सियति तच्छा
भावना ।

अहारा चउत्थ्या भावना- भयं परिजाणइ से निगंग्ये नो भयभीण दिदा, केवली बृहाय-
सुयक्षियो-२, अज्ञयण-१५, [चूला-३]

भयपते भीलु सामावदेज़ा मौसं वयणाए, भयं परिजाणइ से निगंग्ये, नो य भयभीण सियति चउत्थ्या
भावना ।

अहारा पंचमा भावना- हसं परिजाणइ से निगंग्ये नो य हसणे सिया, केवली बृहाय-
हसपते हासी सामावदेज़ा मौसं वयणाए, हसं परिजाणइ से निगंग्ये, नो य हसणे सियति पंचमा
भावना ।

एतावतात दोच्छे महव्या सम्यं काणेन फाषिण पालिण तीरिण कहिण अवहिण आणणे
आराहिण यावि भवति, दोच्छे भंते! महव्या मुसावायणो वेशमण ।

[938] अहारं तच्छं भंते! महव्यं- पचक्खभणं सबं अदिनादां- से गामे वा नगरे वा
अरणे वा अरपं वा बहुं वा अरुं वा धूलं वा धिलंमं वा अंतितंमं वा नेव सरं अदिनं
गेण्हुज़ा नेवन्नेिहं अदिनं गेण्हुज़ा अन्नपं अदिनं गेण्हंतं न समण्णुणाणिस्ज़ा जारवज़ीविणे
तिचिण तिचिनिणे-यणसा वयणसा कायसा तस्स भंते! पदजक्कमणं निदामण गरिहामण अप्पणं
वोसिनामण ।

तत्सिमाओं पंच भावणाओं भवति, तथिमा पदमा भावना- अनुविभ भिमोगहज़ाई से
निगंग्यं नो अनलुविभिमोगहज़ाई, केवली बृहाय-अनलुविभिमोगहज़ाई लि पदमा भावना ।

अहारा दोच्छा भावना- अणुण्णवियपणभोयणभोइ से निगंग्यं नो अणुण्णवियपण-
भोयणभोइ केवली बृहा- अणुण्णवियपणभोयणभोइ से निगंग्यं अदिनं मुंजेज़ा, तथा अणुण्णवियपण-
भोयणभोइ से निगंग्यं नो अणुण्णवियपणभोयणभोइ लि, दोच्छा भावना ।

अहारा तच्छा भावना- निगंग्यं ओगाहिसं ओगाहियसं एतावतात ओगाहणसीलए
सिया केवली बृहा- निगंग्यं ओगाहिसं ओगाहियसं एतावतात अनोगाहणसीलए अदिनं
ओगाप्पेज़ा, निगंग्यं ओगाहिसं ओगाहियसं एतावतात ओगाहणसीलए सियति तच्छा भावना ।

अहारा चउत्थ्या भावना- निगंग्यं ओगाहिसं ओगाहियसं अभिक्षणं अभिक्षणं
ओगाहणसीलए सिया, केवली बृहा- निगंग्यं ओगाहिसं ओगाहियसं अभिक्षणं-अभिक्षणं
अणोगाहणसीलए अदिनं गिषेज़ा निगंग्यं ओगाहिसं ओगाहियसं अभिक्षणं-अभिक्षणं
ओगाहणसीलए सियति चउत्थ्या भावना ।
अहारा पंचम भावना- अनुवीिििोगहांजाई से निगम्यते सावमििएसु। नो अनुलीि-मिोगहांजाई, केवली बूढ़ा अनुलीिििोगहांजाई से निगम्यते सावमििएसु अदिनिः औिीिज्जा अनिैि मिोगहांजाई से निगम्यते सावमििएसु नो अनुलीिििोगहांजाई- इि पंचम भावना।

एतावाद तच्छे महध्व सम्म कारण फास्के पाल्ले तीरेक कििे अवििे अथाप आराहिे याटि बवि, तच्छे भेते। महध्व अदिनादाणाओ वेरमण।

[99] अहारवं चउठे भंते। महव्यं पदव्यक्तिि मवूि मेहुण, से दिवं वा माणुस वा तिरंिशुकोणियं वा नेप संि मेहुणं गच्छेज्जा नेवसििहं मेहुणं गच्छवेज्जा अनन्ति मेहुणं गच्छं न समगुजाणिेज्जा जावजीेक तिविंहं तिविशं- मणिा वयोः कायसा तस्स भंते! पांडक्मामि निदामि गगिरिहस्मि अप्पाणि वोसिरामि।

तस्सिमाओं पंच भावानारुि भंति, तथ्यानि पदमा भावना- नो निग्म्ये अभिक्षण-अभिक्षण इर्थीण कहं कहित्ते सियिा, केवली बूढ़ा- निग्म्ये इ अभिक्षण-अभिक्षण इर्थीण कहं सुबकंिथों-२, अर्ज्ञाणैि-१५, [च्वाला-३]

कहमाणे संतिभेदा संतिविभागं संतिकेवली- पन्नतात्रो धम्माओ भंसेजज, नो निग्म्ये अभिक्षण-अभिक्षण इर्थीण कहं कहित्ते सियिि पदमा भावन।

अहारवा दोघा भावना- नो निग्म्ये इर्थीण मनोहराइं इंदियाईं आलोक्ततए निज्ञािलतए सिया केवली बूढ़ा- निग्म्ये इ इर्थीण मनोहराइं इंदियाईं आलोकमाणे निज्ञािैमाणे संतिभेया संतिविभागं संतिकेवलीपन्नतात्रोधम्माओं भंसेजज नो निग्म्ये इर्थीण मनोहराइं इंदियाईं आलोक्ततए निज्ञािलतए सियिि दोघा भावन।

अहारवा तच्छे भावना- नो निग्म्ये इर्थीण पवीियाईं पुवकिलियाईं सुमििलतए सिया, केवलीबूढ़ा- निग्म्ये इ इर्थीण पवीियाईं पुवकिलियाईं सर्ममाणे संतिभेया संतिविभागं संतिकेवलीपन्नतात्रोधम्माओं भंसेजज नो निग्म्ये इर्थीण पवीियाईं पुवकिलियाईं सर्मििलतए सियिि तच्छे भावन।

अहारवा चउठा भावना- नाइमतििभोज्याओं से निग्म्ये नो वपन्यरसभोज्याओं केवली बूढ़ा-अडिंटििभोज्याओं से निग्म्ये पवन्यरसभोज्याओं ति संतिभेदा संतिविभागं संतिकेवलीपन्नतात्रोधम्माओं भंसेजज नो अतिमतििभोज्याओं से निग्म्ये नो वपन्य-िसभोज्याओं ति चउठा भावन।

अहारवा पंचम भावना- नो निग्म्ये इर्थीपसुङ्गसंसतािं सयानसणािं सििलतए, सिया केवलीबूढ़ा- निग्म्यङ्ये इर्थीपसुङ्गसंसतािं सयानसणािं सेपेंमाणे संतिभेया संतिविभागं संतिकेवली-पन्नतात्रोधम्माओं भंसेजज नो निग्म्ये इर्थीपसुङ्गसंसतािं सयानसणािं सििलतए सियिि पंचमभावना

एतावाद चउठे महध्व सम्म कायण फासिे पाल्ले तीरेि कििे अवििे आणाए आराहिे याटि बवि कहित्ते भंते महध्व भेनुयाओ वेरमण।

[९४] अहारवं पंचमं भंते। महध्व- सवं परिगं पचक्यक्षािि- से अपं वा बहुं वा अणुं वा थूंं वा चित्मंिं वा अचित्मंिं वा नेप सवं परिगं गणेज्जा नेवसििहं परिगं गणावेज्जा अनन्ति परिगं गणििं न समपुजाणिज्जा जावजीवाये तिविंहं तिविशं- मणिा वयोः कायसा तस्स भंते! पांडक्मामि निदामि गगिरिहस्मि अप्पाणि वोसिरामि।

[दीपरतनसागर संशोधितं] [९९] [१-आयारी]
तस्सिमाओं पंच भावनाओं भवति तत्थिमा:- पदमा भावना- सोयों जीवो मणुणामणुणणाइं सदां सुपूपण मणुणामणुणणेंहि सदेहि नो सजजेजा नो रजजेजा नो गिजजेजा नो मुजजेजा नो अजजोवजजेजा नो विनिग्यायमावजजेजा केवली बूया-निगम्यं या मणुणामणुणणेंहि सदेहि सजजमाने रजजमाने गिजजमाणे मुजजमाने अजजोवजजमाने विनिग्यायमावजजमाने संतिभेदा संतिविभंगा संतिकेवलिपन्नताओ धम्माओ अंसेजः।

न सकका न सोंश सदा सोयविसयमागता। रागदोसा ु जे तथ्य ते भिक्षु परिवज्जः।

सोयों जीवो मणुणामणुणणाइं सदां सुपूपण सुपूपण लित पदमा भावना।

अहावरा दोच्चा भावना- चक्खूः जीवो मणुणामणुणणाइं सवाइ पासइ मणुणा-मणुणणेंहि स्वेहिं नो सजजेजा नो रजजेजा नो गिजजेजा नो मुजजेजा नो अजजोवजजेजा नो विनिग्याय-मावजजेजा केवली बूया- निगम्यं या मणुणामणुणणेंहि गंधेहि सजजमाने रजजमाने गिजजमाणे मुजजमाणे अजजोवजजमाणे विनिग्यायमावजजमाणे संतिभेदा संतिविभंगा संतिकेवलिपन्नताओ धम्माओ अंसेजः।

न सकका सुवमदं चक्खूविसयमाणग। रागदोसा ु जे तथ्य ते भिक्षु परिवज्जः।

चक्खूः जीवो मणुणामणुणणाइं सवाइ पासइ लित दोच्चा भावना।

सुयकंबंधे-२, अजजायण-१७, [चूला-३]

अहावरा चत्चा भावना- धाणों जीवो मणुणामणुणणाइं गंधाइं अघायाइं मणुणामणुणणेंहि गंधेहिं नो सजजेजा नो रजजेजा नो गिजजेजा नो मुजजेजा नो अजजोवजजेजा नो विनिग्याय-मावजजेजा केवली बूया- निगम्यं या मणुणामणुणणेंहि गंधेहि सजजमाने रजजमाने गिजजमाणे मुजजमाणे अजजोवजजमाणे विनिग्यायमावजजमाणे संतिभेदा संतिविभंगा संतिकेवली पन्नताओ धम्माओ अंसेजः।

न सकका न गंधमधां नासविसयमाणग। रागदोसा ु जे तथ्य ते भिक्षु परिवज्जः।

धाणों जीवो मणुणामणुणणाइं गंधाइं अघायात्त लित चत्चा भावना।

अहावरा चठ्ठ्या भावना- जिब्नों जीवो मणुणामणुणणाइं रसाइं अससाइं मणुणा-मणुणणेंहि रसेहिं नो सजजेजा नो रजजेजा नो गिजजेजा नो मुजजेजा नो अजजोवजजेजा नो विनिग्यायमावजजेजा केवली बूया- निगम्यं या मणुणामणुणणेंहि रसेहि सजजमाने रजजमाने गिजजमाणे मुजजमाणे अजजोवजजमाणे विनिग्यायमावजजमाणे संतिभेदा संतिविभंगा संतिकेवलीपन्नताओ धम्माओ अंसेजः।

न सकका रसमनासां जीहाविसयमाणग। रागदोसा ु जे तथ्य ते भिक्षु परिवज्जः।

जीहाओ जीवो मणुणामणुणणाइं रसाइं अससाइं लित चठ्ठ्या भावना।

अहावरा पंचभावनावारसाओं जीवो मणुणामणुणणाइं फासाइं पदिसंसेदें मणुणामणुणणेंहि फासेहिं नो सजजेजा नो रजजेजा नो गिजजेजा नो मुजजेजा नो अजजोवजजेजा नो विनिग्याय-मावजजेजा, केवली बूया- निगम्यं या मणुणामणुणणेंहि फासेहि सजजमाने रजजमाने गिजजमाणे मुजजमाणे अजजोवजजमाणे विनिग्यायमावजजमाणे संतिभेदा संतिविभंगा संतिकेवलिपन्नताओ धम्माओ अंसेजः।
न सक्का न संवेदें फासविस्मायां । रागदोसा ३ जे तत्थ ते भिक्खु परिवृज्जएः ।
फासो जीवो मणुण्यागमणुणाई फासाई पहिलोंवेदित तित्त पंचमा भावणा ।
एतात्तव पंचमे महूवां सम्म काण फासिए पालिए तीरिए किद्वें अवहित्ते आणाए
आराहि याव भवः पंचं महूवां भंते महूवां परिवण्यां हो वर्तमान ।
इत्थतेहि पंच महूवांहि घणीसाहि य भावणाहि संध्मुं अगारे अहासुम्य अहाकप्य
अहामगं सम्म काण फासिता पालिता तीरिता किद्विता आणाए आराहिता यावि भवः ।

पनरसं अज्ञायण समतं
मुनि दीपरत्सागरेन संंशोधितः सम्पादितां च ताह्या चूला समताः

सोलसं अज्ञायण - विमुत्ली

० चउठ्या चूला ०

[५४१] अनिच्छ्यावाससम्वैता जनुङ्गो, पलोयो सोच्चमिवं अनुल्टं ।
विरूसिरे विषणु अगारबंधं अभेलु, आरंभपरर्वः च च ।

[५४२] तहाणं भिक्खुमंतंसजयः, अमोलिसं विषणु चमंतस्वि यान ।
तुल्यति वायाहि अमिद्रवं नर, सरेहि संगमायः व कंजः ॥

सुयकतंघो-२, अज्ञायण-१६ [चउठ्या चूला]

[५४३] तहाप्पगारेहि जनेहि हीतित्ति, ससदफासा फकसा उदीरिया ।
लितिकां नावै अदुर्दोयः, चिरित्वा काणेन न संपवेधां ॥

[५४४] उवेहाणे कृपलेहि संविे, अकंतुक्षी तस्मावृकादुही ।
अतूस्ते सविेहि महामुनिः, तहा हि से मुस्समणे समाहित ॥

[५४५] विदू नते धम्मपं अनुतरं, विनियमतथाः मुनिसस झायाओ ।
समालहिषस्वगितिसे व तेय्यसा, तवो य पण्या य जसो य वडङ्ग ॥

[५४६] दिसौदिस्तंतंजिणेन ताङ्गा महत्वाय खेमपदा पवेदिता
महागुहु निसक्षरा उदीरिया, तमेव तेजो तिदिंस पगासया ॥

[५४७] सितेहि भिक्खु असिते परिवर्तः, असज्जमित्यो च च च च पूर्वणां ।
अनिविस्त्तु लोगमिणः तहा परं, न मिज्जति कामुगणहि पंडित ॥

[५४८] तहा विमुक्तकरस परिणवाचिरेन, चिद्दैमो दुःखफळस्स भिक्कुणो ।
विसुज्ज्वाईं जंसि मलं पूर्वें मसीरियं रूपमणं व जोडङ्ग ॥

[५४९] से हु परिणण समयमि वटङ्ग, जिनससे उवरय-भेलुणे चरे ।
भुजगमे जुणणतं जहा चरे, विमुक्तः से दुहसेंज महणे च ॥

[५४०] जमाहु ओह सलिंवावेरां, महासमुंद व भुआहि दुत्तरं
अहे य यं परिताणहि पंडिते से हु मुनी अंतक्षे लिङ्वुचबङ्ग ॥

[५४१] जहा हि बदं इह मानवेहि जहा य तेसिं तु विमुक्ख्य आहिे ।
अहा तहा बंधविमुक्खे न वििः, से हु मुनी अंतक्षे लिङ्वुचबङ्ग ॥
इममि लोए परए यो दोसुवि, न विजजइ बंधणं जसस किचििि।
से हु निरालंबिने अपपूढिए, कलंकली भावपहं विमुचचइ तित बेमि।

सोलसम अज्ञातसानम-सम्मतां
मुनि दीपरतनसागरें संशोधितां सम्पादितां चउत्था चूला सम्मतां
• बीओ सुयक्षंधो सम्मतो।

मुनि दीपरतनसागरें संशोधितां: सम्पादितिशच “आयारो पदम अंगसुल्तम” सम्मतां

| १ | आयारो-पदमं अंगसुल्तमं सम्मततं |